हिन्दी और मलयालम के स्वनिमों और रूपिमों का तुलनात्मक अध्ययन

HINDI AUR MALAYALAM KE SWANIMOM AUR RUPIMOM KA TULANATMAK ADHYAYAN

Thesis submitted to
COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
for the degree of
Doctor of Philosophy

By

SUNNY N. M.

Supervising Teacher

Dr. M. EASWARI
Prof. and Head of the Department

DEPARTMENT OF HINDI
COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
KOCHI – 682 022

1995

C E R T I F I C A T E

This is to certify that this THESIS is a bona-fide record of work carried out by SUNNY. N.M. under my supervision for Ph.D. and no part of this has hitherto been submitted for a degree in any University.

DEPARTMENT OF HINDI
COCHIN UNIVERSITY OF
SCIENCE AND TECHNOLOGY
COCHIN - 682 022.

DR. M. EASWARI
PROFESSOR AND HEAD
OF THE DEPARTMENT
(SUPERVISING TEACHER)

Dated 23.07.1995

A C K N O W L E D G E M E N T

This work was carried out in the Department of Hindi, Cochin University of Science and Technology, Cochin - 682 022 during the tenure of fellowship awarded to me by the Cochin University of Science And Technology. I sincerely express my gratitude to the Cochin University of Science and Technology for this help and encouragement.

SUNNY. N.M.

Department of Hindi
Cochin University of
Science and Technology
Cochin - 682 022

Dated 13.07.1995

C E R T I F I C A T E

This is to Certify that this thesis is resubmitted incorporating necessary corrections and modifications.

(DR. M.EASWARI)
SUPERVISING TEACHER

पुरोवाक्

भारत एक बहुभाषी देश है ; और यह बहुभाषिता भारत की अपनी निजी विशेषता है । भारत की भाषायी बहुलता को देखते हुए यह कहावत बिलकुल सार्थक जान पडती है कि - कोस कोस पर पानी बदले, चार कोस पर वानी । भारत की सबसे बडी विशेषता है अनेकता में एकता । हिन्दुस्थान अनेक धर्मों, जातियों और संप्रदायों की मिलन स्थली है । लेकिन गर्व की बात है कि सांस्कृतिक, सामाजिक, भाषिक बहुरूपता भारत वासियों के मेल-मिलाप, सहवर्तित्व आदि में बाधा नहीं प्रस्तुत करती है । भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी आज संपूर्ण देश को एक-सूत्र में पिरोने की सशक्त भूमिका अदा कर रही है । दर असल तमाम विभिन्नताओं के होने के बावजूद यदि गौर से देखा जाय तो भारत भर की सभी भाषाएं हमें रेशम के धागे में पिरोयी गयी मिलती-जुलती रूप रंगवाली कलियों की एक सुन्दर हार ही प्रतीत होती है ।

भारत के उत्तर में आर्य परिवार की भाषाएं प्रचलित है । भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी आज विश्व की श्रेष्ठतम भाषाओं में अपना स्थान रखती है । विश्व में बोले जाने वाले लोगों की संख्या की दृष्टि से हिन्दी चौथा स्थान रखती है ।

दक्षिण भारत की प्रमुख भाषाएं है - तमिल, तेलुगु, कन्नड, और मलयालम - ये द्रविड परिवार के अन्तर्गत आती है और

इनमें से सुसंस्कृत एवं साहित्य संपन्न भाषा मलयालम मुख्यत: केरल प्रान्त में बोली जाती है । भारत की भावात्मक एकता में मलयालम की महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है ।

इस शोध प्रबन्ध में हिन्दी और मलयालम के स्वनिमों और रूपिमों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । तुलनात्मक अध्ययन भाषा विज्ञान की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है । इसके माध्यम से सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकता की भावना निरन्तर संपुष्ट होती है । यद्यपि हिन्दी संपूर्ण भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार की गयी है तथापि व्यवहार की दृष्टि से इसका प्रमुख केन्द्र उत्तर भारत है । हिन्दी तथा मलयालम भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन उत्तर दक्षिण के मिलन की एक सशक्त कडी है । इन दोनों भाषाओं में कई स्तरों पर समानताएं और कुछ एक बिन्दुओं पर विषमताएं भी हैं। इन समानताओं एवं विषमताओं का विस्तृत अध्ययन इस शोध प्रबन्ध में प्रस्तुत किया गया है ।

हिन्दी और मलयालम के स्वनिमों और रूपिमों का तुलनात्मक अध्ययन अब तक नहीं हुआ है । प्रस्तुत अध्ययन इस ओर का प्रथम प्रयास है । इस शोध प्रबन्ध के कुल छः अध्याय है – ये क्रमश:

1. हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास
2. मलयालम भाषा का उद्भव और विकास
3. हिन्दी और मलयालम के स्वनिम
4. हिन्दी और मलयालम के स्वनिमों का तुलनात्मक अध्ययन
5. हिन्दी और मलयालम के रूपिम
6. हिन्दी और मलयालम के रूपिमों का तुलनात्मक अध्ययन और उपसंहार ।

प्रस्तुत अध्ययन विभाग की अध्यक्षा एवं आदरणीय अध्यापिका श्री ईश्वरी जी के निदेशन में संपन्न हुआ । उन्होंने समय समय पर मुझे उचित मार्ग प्रदर्शन दिया था । उन्होंने मुझे जो स्नेह एवं सहयोग दिया है उसके लिए मैं उनका चिर-ऋणी हूँ ।

इस संदर्भ में विभाग से अवकाश प्राप्त अध्यक्ष पूजनीय विजयन जी से मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ । साथ ही साथ विभाग के अन्य गुरूजनों के प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ । पुस्तकालयध्यक्षा और सहायक के साथ-साथ मेरे सहपाठियों के प्रति भी इस संदर्भ में आभार प्रकट करता हूँ ।

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए मुझे असली प्रेरणा विभाग से अवकाश प्राप्त प्रोफसर आचार्य रामचन्द्र देव से मिली । उन्होंने अपने बहुमूल्य उपदेशों से मेरी शोध संबंधी कठिनाइयों को दूर करने की कृपा की । उनसे जो अनवरत सहयोग, स्नेह, प्रेरणा और प्रोत्साहन मिले है उनके मूल्य स्वरूप आभार प्रकट करने के लिए मुझे कोई भी शब्द उपयुक्त प्रतीत नहीं होता । मैं श्रद्धा भाव से पूज्य गुरू देव के सामने नतमस्तक हूँ ।

केरल विश्वविद्यालय के लेक्सिकन विभाग के अध्यक्ष श्री सोमशेखरन नायर जी, और भाषा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा: प्रबोधचन्द्रन और वरिष्ठ अध्यापक डा. केशव पणिकर के प्रति भी मैं

विनीत भाव से अपनी शुक्रिया अदा करता हूँ जिन्होंने इस शोध कार्य संबंधी सन्देहों का निवारण करके, उचित निदेश देकर मेरी मदद की है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में भाषाविज्ञान के सिद्धांतों के आधार पर हिन्दी और मलयालम के स्वनिमों और रूपिमों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है । दोनों भाषाओं के स्वनिमों और रूपिमों का संरचनात्मक दृष्टि से विश्लेषण किया गया है । भारत की भाषाई विषमता में एकता प्रमाणित करने में प्रस्तुत अध्ययन का अपना योग है । भाषा संबन्धी तुलनात्मक अध्ययन की नई दिशाएं इसमें दर्शाई गयी है । आशा है कि भाषाध्ययन और भाषा शिक्षण की विधियां तैयार करने की दृष्टि से भी यह अध्ययन उपयोगी सिद्ध होगा ।

इस शोध प्रबन्ध को यथा संभव त्रुटिहीन बनाने का प्रयास मैं ने किया है । लेकिन किसी भी कार्य में त्रुटियाँ आना स्वाभाविक है । उन त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ !

कोचिन

23.07.1995.

एन. एम. सण्णी

विषय - सूची

पृष्ठ संख्या

पुरोवाक् 1 - 1

पहला अध्याय 1 - 21

हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा - वैदिक संस्कृत - भाषिक संरचना - ध्वनियाँ - स्वर - व्यंजन - स्वराघात - रूप रचना - लौकिक संस्कृत - भाषिक संरचना - ध्वनियाँ - कारक -विभक्ति - क्रिया रूप - मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा - पालि - भाषिक संरचना - ध्वनियाँ - प्राकृत भाषिक संरचना - अपभ्रंश - भाषिक संरचना - अवहट्ठ - आधुनिक भारतीय आर्य भाषा हिन्दी शब्द का व्युत्पत्ति - आदिकाल - मध्यकाल - आधुनिक काल

दूसरा अध्याय 22 - 34

मलयालम भाषा का उद्भव और उसका ध्वन्यात्मक विकास - मलयालम भाषा की उत्पत्ति - मलयालम की विशेषताएँ - - स्वर संवरण - अक्षर लोप - लीला तिलक और मलयालम - रामचरित की भाषा {आदिकाल} मध्यकाल - तुल्लल की मलयालम - आधुनिक काल - उच्चारण की विभिन्नता - मलयालम की ध्वन्यात्मक विशेषताएँ और आधुनिक मलयालम ।

पृष्ठ संख्या

तीसरा अध्याय 35 - 96

हिन्दी और मलयालम के स्वनिम

खंड स्वनिम - खंड्येतर स्वनिम - अनुनासिकता - बलाघात - अनुतान - संगम - खंड्य स्वनिम - स्वर स्वनिम - संयुक्त स्वर - स्वरानुक्रम - स्वरानुक्रम की तालिका - त्रिस्वरानुक्रम - व्यंजन स्वनिम - तथा व्यंजनानुक्रम - संयुक्त व्यंजन या व्यंजन गुच्छ - दीर्घ व्यंजन - अर्ध स्वर - और श्रुति - हिन्दी में "य" और "व" के क्रम नासिक्य व्यंजन अनुस्वार - महाप्राण व्यंजन - अक्षर-शीर्ष हिन्दी के खंड्येतर स्वनिम - अनुतान - संगम - अनुनासिकता - बलाघात - मलयालम स्वर स्वनिम और उनका वितरण - मलयालम स्वरों का मान स्वरों से संबंध - मलयालम व्यंजन स्वनिम और उनका वितरण - स्वनिम वितरण के नियम- स्वनिमीय भिन्नता - स्वनिम संहिता - दीर्घ व्यंजन - स्वर संघर्षी एवं अनुनासिक - मलयालम के खंड्येतर स्वनिम - अनुतान- बलाघात - संगम

चौथा अध्याय 97 - 110

हिन्दी और मलयालम के स्वनिमों की तुलनात्मक अध्ययन

हिन्दी के स्वर स्वनिम - मलयालम के स्वर स्वनिम - हिन्दी और मलयालम में स्वर स्वनिमों का वितरण - स्वरानुक्रम - हिन्दी और मलयालम के व्यंजन स्वनिम - मलयालम के व्यंजन स्वनिम - व्यंजन स्वनिमों का वितरण - अनुनासिक व्यंजन - अर्ध स्वर - लुंठित व्यंजन - हलंत - चिल्ल - व्यंजनानुक्रम - स्वनिम - वितरण - खंड्येतर स्वनिम ।

पृष्ठ संख्या

पाँचवाँ अध्याय 111 - 166

हिन्दी और मलयालम के रूपिम

रचना और प्रयोग के आधार पर रूपिम - मुक्त रूपिम - बद्ध रूपिम - वितरण के आधार पर रूपिम - अर्थ और कार्य के आधार पर रूपिम - संबन्ध तत्व के आधार पर रूपिम - अर्थ और कार्य के आधार पर रूपिम - प्रकार्य के आधार पर रूपिम - संज्ञा - लिंग - वचन - कारक - पुरुष - सर्वनाम - विशेषण - क्रिया - कृदन्त - हिन्दी के रूपिम - रचना और प्रयोग के आधार पर - वितरण के आधार पर - अर्थ और प्रकार्य के आधार पर - सहपद एवं अभिनिर्धारण - संबन्ध तत्व के आधार पर - प्रकार्य के आधार पर हिन्दी के रूपिम - मलयालम के रूपिम - रचना और प्रयोग के अनुसार मलयालम के रूपिम - वितरण के आधार पर - अर्थ और कार्य के आधार पर संबंध तत्व के आधार पर - प्रकार्य के आधार पर - मलयालम के रूपिम ।

छठा अध्याय 167 - 185

हिन्दी और मलयालम के रूपिमों का तुलनात्मक अध्ययन

रचना और प्रयोग के आधार पर - संबंध तत्व के आधार पर - अर्थ और कार्य के आधार पर - प्रकार्य के आधार पर हिन्दी और मलयालम के रूपिम

उपसंहार 186 - 202

संदर्भ ग्रंथ-सूची 203 - 210

पहला अध्याय

हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास

हिन्दी संपूर्ण भारत की राष्ट्र-भाषा है । वर्तमान हिन्दी जिस भाषा-धारा के विकसित-विशिष्ट देशिक और कालिक रूप का नाम है, भारत में उसका प्राचीनतम रूप वैदिक संस्कृत है । हिन्दी का ध्वन्यात्मक एवं रूपात्मक विकास प्राचीन - मध्यकालीन, भारतीय आर्य भाषाओं से होकर हुआ है । भाषिक विशेषताओं के आधार पर ऐतिहासिक दृष्टि से विकास के लंबे अन्तराल को तीन कालों में बांटा जा सकता है । तीनों कालों में आर्य भाषा को तीन नाम से अभिहित किया गया है ।

1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा §1500 ई.पू. से 500 ई.पू. तक §

वैदिक संस्कृत

भारतीय आर्य भाषा का प्राचीनतम रूप वैदिक संहिताओं में मिलता है । संहिताओं की भाषा में एकरूपता का अभाव है । कहीं बहुत पूर्ववर्ती रूप मिलता है तो कहीं परवर्ती । इसमें रूपाधिक्य है और नियमितता की अपेक्षाकृत कमी है । संस्कृत काव्य भाषा होने से वैदिक संहिताओं की भाषा से कुछ भिन्न है । ब्राह्मणों-उपनिषदों की भाषा कुछ अपवादों को छोडकर संहिताओं के बाद की है । इसके गद्य भाग की भाषा तत्कालीन बोलचाल की भाषा के बहुत निकट है । पांचवीं सदी में पाणिनी ने अपने व्याकरण में संस्कृत के उदीच्य में प्रयुक्त रूप के अपेक्षाकृत अधिक परिनिष्ठित एवं मान्य आदर्श रूप को नियमबद्ध किया । यही लौकिक संस्कृत का सर्वमान्य आदर्श रूप बन गया । संपूर्ण वैदिक साहित्य में ही वैदिक संस्कृत का विकास होता दिखाई पडता है । कुछ ध्वन्यात्मक एवं व्याकरणिक बातें ऐसी है ;

जिनको वैदिक की सामान्य विशेषताएं माना जा सकता है । वैदिक संस्कृत और संस्कृत के व्याकरणिक नियमों में बहुत कुछ अन्तर है ।[2] वैदिक भाषा का बहुत कुछ स्वरूप बाहर से बनकर आया था ; और उसमें यहाँ जो कुछ परिवर्तन हुए थे भारतीय वातावरण, समाज एवं आर्येतर भाषाओं के तुरंत पडे हुए प्रभाव से ही उत्पन्न थे । किन्तु संस्कृत भाषा के बनने तक में प्रभाव बहुत गहरे पड चुके थे और उन्होंने संस्कृत भाषा की पूरी व्यवस्था को प्रभावित किया । ध्वनियों में विकास आर्येतर प्रभावों, आर्येतर लोगों द्वारा उनका ठीक उच्चारण न किए जाने एवं सरलीकरण की प्रवृत्ति के कारण हुआ ।

भाषिक संरचना

ध्वनियाँ - स्वर ध्वनियाँ

वैदिक संस्कृत में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ मूल स्वर थे और ए, ऐ, ओ और औ संयुक्त स्वर थे । इसका उच्चारण - ए, ओ, ऐ, औं - के उच्चारण क्रम से - अइ, अउ, आइ, आउ थे ।

व्यंजन ध्वनियाँ

1. स्वर यंत्रमुखी	- ह ँ : ँ
2. कंठ्य	- क, ख, ग, घ, ङ
3. मूर्धन्य	- ट, ठ, ड, ढ, ण, ळ, ळ्ह, ष
4. तालव्य	- च, छ, ज, झ, ञ , श, भ, भ्र
5. वर्त्स्य दन्तमूलीय	- त, थ, द, ध, न, ल, र, स

6. दन्तोष्ठ्य - व़
7. द्व्योष्ठ्य - प, फ, ब, भ, म, व, व़ ।

वैदिक में "अ" विवृत पश्च था । "अ" और "आ" का स्थान एक ही था । दोनों में केवल मात्रा का अन्तर था । "इ" - "ई" तथा "उ" - "ऊ" में भी मात्रा का ही अन्तर था । ये क्रमशः संवृत अग्र तथा संवृत पश्च थे । "ॠ" ऋ का ही दीर्घ रूप था । "क" वर्ग आज की तुलना में कुछ पीछे से उच्चरित होता था । "च" वर्ग में वैदिक काल में ही स्पर्श संघर्षी की प्रवृत्ति आने लगी थी, यद्यपि यह शुद्ध स्पर्श संघर्षी नहीं था । "ष" तथा "ट" वर्ग प्रतिवेष्ठित मूर्धन्य थे । आज की तुलना में इनका स्थान और ऊपर था । "र" प्रकंपी था "श" आज की तुलना में मूर्द्धा के पार्श्ववर्ती तालू प्रदेश से उच्चारित होता था ।

स्वराघात -

वैदिक संस्कृत में परंपरागत रूप से अनुदात्त, उदात्त एवं स्वरित तीन प्रकार के स्वराघात प्राप्त थे । वैदिक भाषा में प्रायः सभी शब्दों पर स्वराघात होते थे । वैदिक में संगीतात्मक स्वराघात थे । स्वराघात से शब्दों के अर्थ परिवर्तन की एक विशिष्ट प्रवृत्ति इस भाषा की विलक्षणता है ।

रूप रचना

वैदिक भाषा में लिंग तीन थे । पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग । वचन भी तीन थे - एकवचन, द्विवचन और बहुवचन । आठ कारक थे, कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, संबंध अधिकरण और संबोधन । वैदिक भाषा में धातुओं के रूप आत्मने, परस्मै दो पदों में चलते थे । क्रिया रूप तीन वचनों एवं तीन पुरुषों - उत्तम, मध्यम अन्य - में होते थे । दो वाच्य, चार काल - लट्, लङ्, लुङ् तथा लिट - तथा पांच भाव के अनुसार धातुओं के भी अनेक रूप थे । वैदिक में समास-रचना की प्रवृत्ति पायी जाती थी । शब्दों की दृष्टि से दो बातें उल्लेख्य है, एक तो यह है कि अनेक तथाकथित तत्भव और मूल से विकसित शब्द प्रयुक्त होने लगे । शब्द स्वरान्त और व्यंजनान्त दोनों प्रकार के होते थे । रूपात्मक दृष्टि से वैदिक संस्कृत का रूप मूल भारोपीय से कुछ कम जटिल नहीं थे ।

लौकिक संस्कृत

लौकिक संस्कृत को क्लासिक संस्कृत भी कहते हैं । पाणिनीय संस्कृत तत्कालीन पंडित समाज की बोलचाल की भाषा पर आधारित है । एक मानक भाषा के रूप में और बाद में साहित्यिक और विद्वद् वर्गीय भाषा के रूप में यह शनैः शनैः पूरे भारत में राज-भाषा के रूप में व्यवहृत होने लगी ।[3] संस्कृत भारतीय भाषाओं का जीवन मूल तो रही है ; साथ ही तिब्बती अफगानिस्थानी, चीनी, जापानी, सिंहली, बर्मी तथा पूर्वी द्वीप समूह की अनेकानेक भाषाओं को इसने विभिन्न स्तरों पर प्रभावित किया है । वैदिक

की अपेक्षा लौकिक संस्कृत में अनेकरूपता एवं अपवाद कम है । यह एक नियमबद्ध एवं परिनिष्ठित भाषा है ।

भाषिक संरचना

लौकिक संस्कृत में प्रयुक्त ध्वनियाँ । स्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ । लौकिक संस्कृत में "ऌ", "ॠ," "ॡ" स्वरों का उच्चारण समाप्त हो गया । "ॠ" का उच्चारण "रि", "री", "रू" हो गया । "ए", "आ" संस्कृत में मूल स्वर हो गए ।

व्यंजन ध्वनियाँ

1.	स्वर यंत्रमुखी	- ह ँ: ँ
2.	कंठ्य	- क, ख, ग, घ, ङ
3.	मूर्धन्य	- ट, ठ, ड, ढ, ण, ळ, ळ्ह, ष
4.	तालव्य	- च, छ, ज, झ, ञ, श, य, य़
5.	वर्त्स्य दन्त्य	- त, थ, द, ध, न, ल, र, स
6.	दन्तोष्ठ्य	- व़
7.	द्व्योष्ठ्य	- प, फ, ब, भ, म, व, वू

संस्कृत में "इय" "इव" के स्थान पर "य्" "व्" के प्रयोग होने लगे । जन भाषा के प्रभाव के कारण स्वर भक्ति युक्त रूप भी मिल जाते है - जैसे - स्वर्णः - सुवर्ण, स्वः सुवः, तन्वः- तनुवः । लौगिक में

स्वराघात और उसका अर्थ एवं लिंग की दृष्टि से पूर्णतः समाप्त हो गया । और बलात्मक स्वराघात का विकास भी हुआ ।

कारक - विभक्ति

कारक विभक्ति की दृष्टि से वैदिक और संस्कृत में कुछ अन्तर है । अकारान्त पुल्लिंग के प्रथमा द्विवचन एवं बहुवचन में वैदिक में क्रमशः - "औ" - "आ" तथा "आः" - "आसः" आते हैं; किन्तु लौकिक में केवल "औ" तथा आः । वैदिक में बहुवचन में देवाः देवासः दोनों हैं, किन्तु लौकिक में केवल देवाः है । वैदिक में तृतीय बहुवचन रामैः, देवैः बन गए हैं ।

क्रिया रूप

लौकिक में लोट् मध्यम पुरुष एकवचन में केवल - "ता" है । आत्मनेपद में लट् में केवल "ते" है । निषेधार्थी "मा" के साथ धातु में भूतकरण नहीं जुडता है । वैदिक में पूर्ण कालिक कृदन्त के कई प्रत्यय है ; जैसे - "त्वा", "त्वाय", "त्वीन", "त्वी" में मिलते हैं । "तुमुन्" के अर्थ में भी वैदिक में "तुम", "से", "असे", "अहयै", "तवै" आदि रूपों का प्रयोग होते थे । किन्तु लौकिक में मात्र "तुम" ही है । लौकिक में - तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि, द्वन्द्व के साथ द्विगु और अव्ययीभाव समास भी मिलते हैं । संस्कृत में अनेक नए शब्द बने और प्रयुक्त होने लगे । पुराने शब्दों का लोप नए शब्दों का आगम, अर्थ का परिसीमन या परिवर्तन ये सभी बातें संस्कृत में पायी जाती है ।

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (500 ई.पू. से 1000 ई. तक)

संस्कृत कालीन भारतीय आर्य भाषाओं से मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं का जन्म हुआ है। इसका काल मोटे रूप से डेढ हज़ार वर्षों का है। इसे प्राकृत भी कहा गया है। डेढ हज़ार वर्षों की प्राकृत भाषा का तीन कालों में विभाजित किया गया है - प्रथम प्राकृत या पालि, दूसरा प्राकृत या प्राकृत और तीसरा प्राकृत या अपभ्रंश।

पालि - 500 ई.पू. से 1 ई. तक

जन साधारण की भाषा अबाध गति से परिवर्तित होती रही और इस जन भाषा के मध्यकालीन रूप को ही मध्य कालीन युग या प्राकृत युग की संज्ञा दी गयी है। संस्कृत कालीन बोलचाल की भाषा विकसित होते होते 500 ई.पू. के बाद काफी बदल गई, जिसे प्रथम प्राकृत या पालि कहते हैं। "बौद्ध धर्म के प्रचार के कारण पालि में संस्कृत के पूर्वी रूप के उदाहरण मिल जाते है।"[4] पालि बौद्ध धर्म की भाषा है। जिसे मागधी या देश भाषा भी कहते थे। बौद्ध ग्रंथों में पालि का जो रूप मिलता है, वह इस बोलचाल की भाषा का ही शिष्ट और मानक रूप था। "यह प्राचीन रूप-निरूपण को अधिक निश्चित बना देती है और वैदिक प्रयोगों को सुरक्षित रखती है।"[5]

बौद्ध धर्म की भाषा होने के कारण पालि का महत्व बढ गया। उस धर्म के साथ वह भारत के बाहर खूब फैली। लंका, बर्मा, जापान,

आदि देशों में पालि सांस्कृतिक दृष्टि बड़ा महत्व प्राप्त हुआ है । पालि भाषा का प्रभाव भारत की भाषाओं के अतिरिक्त श्रीलंका, बर्मा और स्याम पर विशेष रूप की हुआ है साथ ही साथ गौण रूप में तब्बत, चीन और जापान की भाषाओं पर भी प्रभाव पडा है । पालि का साहित्य अत्यन्त समृद्ध है और इसमें "धम्मपद" जोतक जैसी बहुमूल्य सामग्री भरी पडी है । "इसका विकास उत्तरकालीन संस्कृत की अपेक्षा वैदिक संस्कृत और तत्कालीन बोलियों से मानना अधिक उचित है ।"[6] यह एक मिश्र भाषा है, जिसमें प्रधानता मध्य देश की बोलियों की है और कुछ अंश तक प्रादेशिक बोलियों की है । पालि के अन्तर्गत अभिलेखी प्राकृत भी आती है । इसके अधिकांश लेख शिलापर है अतः एक संज्ञा शिला लेखी प्राकृत भी है ।[7]

भाषिक संरचना

पालि भाषा में प्रयुक्त ध्वनियां -

स्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऍ, ओ, ऑ । अ, आ, इ, ई, उ, ऊ के उच्चारण स्थान में स्पष्ट भेद हो गया । "अ" अर्ध विवृत मध्य स्वर था । पालि में संयुक्त स्वर पूर्णतः समाप्त हो गये । "ऐ", "औ" का उच्चारण क्रमशः मूल स्वर "ए", "ओ" के समान बदल गया है । संस्कृत काल की तुलना में "ए", "ओ" कुछ और संवृत हो गए । इस काल में मात्र नियम के कारण ह्रस्व "ए" और ह्रस्व "ओ" का विकास हो गया ।

व्यंजन ध्वनियां

1. स्वर यंत्रमुखी - ह
2. कंठ्य - क, ख, ग, घ, ङ

3. मूर्धन्य - ट, ठ, ड, ढ, ण, ळ, ळह
4. तालव्य - च, छ, ज, झ, ञ , य, य्
5. वर्त्स्य - न, ल, र, स
6. दन्त्य - त, थ, द, ध
7. दंत्योष्ठ्य - व्
8. द्व्योष्ठ्य - प, फ, ब, भ, म, व, व़

पालि काल के अन्त तक आते आते च, छ, ज, झ प्रायः स्पर्श संघर्षी हो गए थे । "ल", "न", "स", "र" वर्त्स्य थे और ळ, ळह का प्रयोग होता था । पालि में तो एक ही "स", था "श" "व"दोनों के उच्चारण "स" के स्थान के पास होने लगे थे । "य", "व" के संघर्षी रूप भी प्रयुक्त होते थे । दंत्योष्ठ "व" का प्रयोग होता था ।

ध्वनि प्रक्रिया की दृष्टि से निम्नलिखित परिवर्तन है - घोषीकरण - स्वर मध्य अघोष व्यंजन के घोष होने की प्रवृत्ति है - माकन्दिय - मागन्दिय । अघोषीकरण - मृदंग - मुतिंग, परिध - परिघ । महाप्राणीकरण - परशु - फरशु, कील - खील । अल्पप्राणीकरण - भगिनी- बहिणी । समीकरण - मार्ग - मागा, धर्म - धम्म, कर्म - कम्म ।

पालि में विशेष मात्रा-नियम प्रयुक्त है । इस मात्रा-नियम ने पालि ध्वनि प्रक्रिया में एक विशेषता ला दी है । जहाँ भी

संस्कृत शब्दों में संयुक्त व्यंजन या द्वित्व व्यंजन के पूर्व दीर्घ स्वर है ; पालि में या तो संयुक्त व्यंजन या द्वित्व व्यंजन रहता है तथा उसके पूर्व का स्वर ह्रस्व हो जाता है - जैसे जीर्ण - जीण्ण, मार्ग - मग्ग । पालि में मुख्यतः बलात्मक स्वराघात मिलता था ।

वैदिक या संस्कृत की तुलना में पालि में पर्याप्त सरलीकरण हुआ है । व्यंजनान्त प्रातिपादिक प्रायः नहीं है । अन्त्य व्यंजन प्रायः लुप्त हो गये है । जैसे - विद्युत - विज्जु । वचन दो - थे द्विवचन नहीं है, और तीन लिंग । सर्वनाम प्रायः पूर्ववर्ती सर्वनाम रूपों के ही ध्वनि नियमों के अनुकूल विकास है । क्रिया रूपों में तीन पुरुष तथा दो वचन है । यह केवल परस्मै है ।

शब्द की दृष्टि से तद्भव शब्द अधिक है । तत्सम उससे बहुत कम है । वैदिक में प्रथमा बहुवचन के देवाः देवासः दो रूप थे ; संस्कृत में केवल देवाः है, किन्तु पालि में देवा, देवासे दोनों रूप है संज्ञा रूपों में बहुलता और विविधता है । संस्कृत के समान कृदन्त रूप मौजूद है ।

प्राकृत

पहली ईस्वी तक आते आते पालि और भी परिवर्तित हुई । लगभग 500 ई. तक इसका नया रूप सामने आया ।[8] इस काल में

साहित्यिक प्राकृतों के जो रूप मिलते हैं वे निस्सन्देह विभिन्न प्रदेशों की लोक भाषाओं से विकसित है । मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा की कई बोलियां है । विभिन्न कालों और विभिन्न स्थानों की भाषाएं अनेक प्राकृत रूपों में विकसित हुई । भाषा के सरलीकरण की प्रवृत्ति इस युग के प्रथम पर्व की अपेक्षा दूसरे पर्व में और अधिक बढी ।

धर्म, साहित्य, भूगोल, शिलालेखों के आधार पर प्राकृतों के भेद किए जा सकते है । किन्तु भाषा वैज्ञानिक स्तर पर केवल पाँच ही भेद स्वीकार किए गए है । शौरसेनी, पैशाची, महाराष्ट्री, मागधी और अर्ध मागधी ।[9] इनमें शूरसेन जनपद में बोली जाने वाली भाषा शौरसेनी मुख्य है । यह पश्चिमी प्राकृत की मुख्य भाषा है । इसका प्रयोग मुख्यत: संस्कृत नाटक में हुआ है । मध्य देश की भाषा होने के कारण यह संस्कृत के बहुत समीप रही और इस पर संस्कृत का निरन्तर प्रभाव पडता रहा ।

भाषिक संरचना

प्राकृत में प्रयुक्त ध्वनियां -

<u>स्वर</u> - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐं, ओ, औं । अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ह्रस्व ए, दीर्घ ए ह्रस्वओओ दीर्घ ओ ध्वनियां लग - भग आज जैसी थी । ए, ओ, अर्ध विवृत से अर्ध संवृत हो गये थे ।

व्यंजन

1. स्वर यंत्रमुखी – ह
2. कोमल तालव्य – क, ख, ग, घ, ङ, ग़, घ़ ।
3. मूर्धन्य – ट, ठ, ड, ढ, ण, ळ, ळ्ह, ड़, ढ़, ष़
4. तालव्य – च, छ, ज, झ, ञ, ज़, य़, श़, य़ ।
5. वर्त्स्य – न, ल़, र, स
6. दंत्य – त, थ, द, ध, द़, ध़ ।
7. दंतोष्ठ्य – व़
8. द्वयोष्ठ्य – प, फ, ब, भ, म, ब़, भ़, प़ ।

क वर्ग कुछ नीचे आ गया था । च, छ, ज, झ, स्पर्श संघर्षी उच्चरित होने लगे थे । स्वर मध्य स्थिति में ड ढ का उच्चारण ड़, ढ़ होने लगा था । ञ्ह, ण्ह, न्ह, म्ह, ल्ह प्रयुक्त होते थे किन्तु ये ञ, ण़, ऩ, म़, ल के महाप्राण न होकर संयुक्त व्यंजन थे । "व" का द्वयोष्ठ्य तथा दंतोष्ठ्य दोनों रूप थे ।

ध्वनियों के विकास के कुछ विशेष रूप भी इस काल में दिखाई पडते हैं । स्वर मध्य अघोष अल्पप्राण का घोष – मूक: मूगो । प्राकृत में व्यंजनान्त शब्द प्राय: नहीं है । संज्ञा, क्रिया आदि में द्विवचन रूपों का प्रयोग प्राकृत में नहीं मिलता । आत्मनेपद प्राकृत में प्राय: नहीं के बराबर है । प्राकृत काल तक आते-आते सादृश्य के कारण नाम और

धातु दोनों के रूपों में और भी कमी हुई, प्राकृत भाषा अधिक सरल हो गई । प्राकृत काल में भाषा वियोगात्मकता की ओर तेज़ी से बढने लगी । इसके लिए प्रमुखतः दो कारण है §1§ कारक चिह्नों का परसर्गों के प्रयोग §2§ क्रिया में कृदन्तीय रूपों एवं सहायक क्रिया का प्रयोग । प्राकृत में - कृदन्तीय रूपों का प्रयोग आरंभ हो गया । कारक रचना में स्वतंत्र शब्द जोडे जाने लगे जैसे - संस्कृत "रामस्य गृहम" के स्थान पर रामस्य केरक घरम्" । कर्तृ और कर्म वाच्य का अन्तर मूल रूप तक सीमित रह गया । संगीतात्मक स्वराघात समाप्त हो गया और बलात्मक स्वराघात प्रकट हुआ । संस्कृत की तुलना में शब्दों में अर्थ की दृष्टि से भी परिवर्तन हुए । धातु के अर्थ शब्दों में पूर्णतः सुरक्षित न रह सके । प्राकृत में अधिकांश शब्द तद्भव हैं । इनमें उन शब्दों के भी तद्भव हैं जो - आस्ट्रिक या द्रविड परिवार से संस्कृत में लिए गए ।

अपभ्रंश

अपभ्रंश काल मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा के विकास का अंतिम सोपान हैं । यह मध्ययुगीन आर्य भाषा और आधुनिक आर्यभाषा के बीच की कडी है । इसका समय मोटे तौर पर 500 ई. से 1000 ई तक है । अपभ्रंश शब्द का प्राचीनतम प्रामाणिक प्रयोग पतंजलि के महाभाष्य में मिलता है । पतंजलि ने उसका प्रयोग अपने समय की संस्कृत में सामान्य किन्तु उसकी दृष्टि से अशुद्ध प्राचीन मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा के कुछ रूपों के लिए किया है ।[10] भरत मुनि ने जिस प्रकार बहुला भाषा का प्रयोग किया है वह अपभ्रंश भाषा ही है । ईसा की छठी सदी तक आते-आते

अपभ्रंश जन भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी थी । संस्कृत और प्राकृत ग्रंथों में अपभ्रंश के जो नमूने आये हैं, उनके ही आधार पर प्रारंभिक अपभ्रंश की विशेषताएं समझी जा सकती है । प्रत्येक प्राकृत का अपना एक अपभ्रंश रूप था । जैसे शौरसेनी अपभ्रंश मागधी अपभ्रंश आदि । आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का जन्म अपभ्रंश के विभिन्न क्षेत्रीय रूपों से हुआ है । इसमें श्रेष्ठतम क्षेत्रीय रूप है शौरसेनी अपभ्रंश । इसी से खडी बोली हिन्दी का विकास हुआ ।

भाषिक संरचना

अपभ्रंश में प्रयुक्त ध्वनियां -

स्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऍ, ओ, ऑ । अपभ्रंश में भी सामान्यतः वे ही ध्वनियां थीं, जो प्राकृत में थी । "अ" प्रायः पूरे हिन्दी क्षेत्र में अर्धविवृत मध्य स्वर था । ऋ का लिखने में प्रचार था, किन्तु उसका उच्चारण "रि" होता था । स्वरों का अनुनासिक रूप प्रयुक्त होने लगा था ।

व्यंजन

1.	स्वर यंत्रमुखी	- ह
2.	कोमल तालव्य	- क, ख, ग, घ, ङ
3.	मूर्धन्य	- ट, ठ, ड, ढ, ण, ण्ह, ळ, ळ्ह, ड़, ढ़
4.	तालव्य	- च, छ, ज, झ, ञ, श, य
5.	वर्त्स्य	- न, न्ह, ल, ल्ह, स
6.	दंत्य	- त, थ, द, ध, र, र्ह

7. दंतोष्ठ्य - व्
8. द्व्योष्ठ्य - प, फ, ब, भ, म, म्ह, व ।

अपभ्रंश के अन्तिम काल तक न्ह, म्ह, आदि संयुक्त व्यंजन न होकर महाप्राण ध्वनियां हो गई थीं । "क" पश्चिमी क्षेत्र में ही था । पूर्वी हिन्दी या बिहारी क्षेत्र में नहीं था । मध्य देश में "स्" था और पूरब में "श्" किन्तु मध्य देश के प्रभाव के कारण पूरब में भी "श" स्थान पर भी स् आने लगा था ।

ध्वनि परिवर्तन की दृष्टि से जो प्रवृत्तियाँ - लोप, आगम विपर्यय - पालि से शुरू होकर प्राकृत में विकसित हुई थीं ; उन्हों का यहाँ आकर और भी विकास हो गया । शब्द के अन्तिम स्वर के ह्रस्व होने की प्रवृत्ति प्राकृत में भी थी, किन्तु अपभ्रंश में बढ गई । प्राकृत में वियोगात्मकता की लक्षण दिखाई पडने लगे थे । किन्तु अपभ्रंश में आकर यह लक्षण प्रमुख हो गया । नपुंसक लिंग समाप्त हो गया । अकारान्त पुल्लिंग प्रातिपदिकों की प्रमुखता हो गई । अपभ्रंश के शब्द भण्डार में तद्भव शब्दों का अनुपात सर्वाधिक है ।

अवहट्ठ

अवहट्ठ अपभ्रंश और आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के बीच की कडी है । अपभ्रंश लगभग 1000 ई. के आसपास समाप्त हो गई और आधुनिक भाषाओं का आरंभ हुआ । संधिकालीन भाषा अवहट्ठ मोटे

रूप से 900 ई. से 1200 ई. तक है । अवहट्ठ में वे सभी ध्वनियां थीं, जो अपभ्रंश में थीं । साथ ही उनके अतिरिक्त ऐ, औ दो नई ध्वनियों का विकास हो गया । पुराने "अइ" का विकास "ऐ" में और "अउ" का विकास "औ" में हुआ । ह्रस्व ऍ, ऑ का प्रयोग कम हो गया । संस्कृत के तत्सम शब्दों के आने पर "श्" ध्वनि का प्रसार और क्षेत्रों में भी हुआ । "व्" केवल लेखन तक ही प्रायः सीमित था । उच्चारण में यह श् ही था । स्वर संयोगों के मिलकर एक हो जाने की सामान्य प्रवृत्ति मिलती है - जैसे मयूर - मऊर - मोर ।

आधुनिक भारतीय आर्य भाषा 1000 ई. से अब तक

प्रादेशिक अपभ्रंशों की राह से होती हुई आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएं विकसित हुई ।[12] आधुनिक भाषा प्राचीन युग की संयोगावस्था से बदलते - बदलते काफी दूर पड़ी गयी । कुछ क्षेत्रों में आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का प्रयोग उसके उदय काल से ही आरंभ हो गया । इसका कारण यह था कि जनता के निकट पहुँचकर अपने सिद्धांतों का प्रचार करने के लिए आधुनिक भाषाएं विशेष उपयुक्त एवं प्रबलतर साधन थी । सुसंस्कृत ब्राह्मण वर्ग संस्कृत की परंपरा को ही सुरक्षित रखता था और उसके संरक्षक क्षेत्रीय एवं अन्य नृपतिगण उसे आश्रय भी देते रहे । यद्यपि ये स्वयं तथा उनसे निम्न वर्ग की प्रजा मिश्रित अपभ्रंश तथा देशी भाषाओं से ही अपना मनोरंजन करते थे । इसके साथ ही साथ हिन्दी का विकास भी होता रहा ।

शौरसेनी अपभ्रंश के उत्तरी रूप में हिन्दी का विकास हुआ है । हिन्दी की सबसे महत्वपूर्ण बोली है खड़ीबोली । वर्तमान साहित्यिक हिन्दी तथा उर्दू से इसका संबंध है । इस्लाम धर्म के प्रभाव के कारण हिन्दी की अन्य बोलियों की अपेक्षा इसमें अरबी फ़ारसी से अधिक शब्द आये है । किन्तु उनमें पर्याप्त ध्वन्यात्मक परिवर्तन भी हो गया । यह रामपूर, मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, सहारनपूर, देहरादून के मैदानी भागों में बोली जाती है । लोक साहित्य की दृष्टि से खड़ी बोली बहुत संपन्न है । यह नाटक, लोक-कथा, लोक गीत, आदि से संपुष्ट है ।

हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति

हिन्दी शब्द का संबंध संस्कृत शब्द "सिन्धु" से है । "सिन्धु" सिन्धु नदी को कहते थे । और उसी के आधार पर उसके आसपास की भूमि को सिन्धु कहने लगे । यह सिन्धु शब्द ईरानी में जाकर "हिन्दू" और फिर "हिन्दी" हो गया । उसका अर्थ हुआ सिन्ध प्रदेश का । धीरे-धीरे "हिन्दी" शब्द पूरे भारत का वाचक हो गया । इसी में ईरानी का "ईक" प्रत्यय लगाने से हिन्दीक बन गया जिसका अर्थ है हिन्दका । बलाघात से अन्तिम शब्द का लोप हुआ, इस प्रकार यह शब्द भाषा विशेष की संज्ञा हो गया है । हिन्दी शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से तीन अर्थों में होता है । (क) हिन्दी शब्द अपने विस्तृतम अर्थ में हिन्दी प्रदेश में बोली जानेवाली सत्रह बोलियों का द्योतक है । (ख) भाषा विज्ञान में प्राय: पाश्चमी हिन्दी और पूर्वी हिन्दी को ही हिन्दी मानते है । इस संदर्भ में हिन्दी आठ बोलियों - ब्रज, खड़ीबोली, बुन्देली, हरियाणी, कन्नौजी, बघेली, छत्तीस गढ़ी

का ही सामूहिक नाम है । (ग) हिन्दी का संकुचितम अर्थ है साहित्यिक हिन्दी, जो आज हिन्दी प्रदेश की सरकारी भाषा है । पूरे भारत की राजभाषा है, समाचार पत्रों और फिल्मों में जिसका प्रयोग है जो हिन्दी प्रदेश में शिक्षा का माध्यम है और इसे परिनिष्ठित हिन्दी का मानक हिन्दी मानते है ।

हिन्दी भाषा का वास्तविक प्रारंभ 1000 ई. के आसपास माना जाता है । इस लंबे अन्तराल की भाषा के विकास की दृष्टि से तीन कालों में विभाजित किया जा सकता है ।

आदिकाल 1000 - 1500 ई.

इस काल तक आते-आते हिन्दी का स्पष्ट स्वरूप निखर आने लगा । अपभ्रंश के रूप समाप्त प्राय हो गए और प्राय: हिन्दी के अपने रूप प्रयुक्त होने लगे । प्रारंभकालीन हिन्दी में मुख्यत: उन्हीं ध्वनियों का प्रयोग मिलता है जो अपभ्रंश में प्रयुक्त होती थी । प्रारंभकालीन हिन्दी में प्रयुक्त स्वर है - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ, और दो नए स्वर विकसित हुए - ऐ और "औ" - ये दोनों संयुक्त स्वर थे तथा इसका उच्चारण क्रमश: "अऍ" "अओ" था । च, छ, ज, झ, स्पर्श व्यंजन थे, किन्तु प्रारंभकालीन हिन्दी में आकर वे स्पर्श संघर्षी हो गए । इस समय में "ड़", "ढ़" दो नए व्यंजन स्वनिमों का विकास हुए । न्ह, म्ह, ल्ह पहले संयुक्त व्यंजन थे । अब वे क्रमश: न, म, ल के महाप्राण रूप हो गए । शब्द समूह की दृष्टि से

प्रारंभ-कालीन हिन्दी अपभ्रंश से बहुत भिन्न नहीं थी । उसमें तद्भव शब्द सर्वाधिक थे । तत्सम शब्द उससे कम तथा देशज उससे भी कम । प्रारंभकालीन हिन्दी में वियोगात्मक रूपों का प्राधान्य था । सहायक क्रियाओं तथा परसर्गों का प्रयोग काफी होने लगा । नपुंसक लिंग का प्रयोग पूर्णतः समाप्त हो गया । वाक्य रचना में शब्द क्रम निश्चित होने लगा था । प्रारंभकालीन हिन्दी का शब्द समूह अपने प्रारंभिक चरण में अपभ्रंश का ही था ; किन्तु धीरे-धीरे परिवर्तन आते गए । भक्ति आन्दोलन के प्रभाव के कारण तत्सम शब्दावली बढने लगी । मुसलमानों के आगमन से पश्तो ; फारसी तथा तुर्की भाषाओं का कुछ शब्द हिन्दी में आए ।

मध्यकाल 1500 ई - 1800 तक

मध्यकाल तक आते-आते हिन्दी का रूप स्पष्ट हो गया । हिन्दी के अपने रूप प्रयुक्त होने लगे । पढे-लिखे लोगों की हिन्दी में क़, ख़, ग़, ज़, फ़ ये पाँच व्यंजन ध्वनियां सम्मिलित हो गई । शब्दांत "अ" कम से कम मूल व्यंजन के बाद आने पर लुप्त हो गए । "राम" का उच्चारण "राम्" हो गया । "ह" के पहले का "अ" कुछ स्थितियों में "ए" जैसे उच्चरित होने लगे - अहम्मद - एहम्मद । मध्यकाल में हिन्दी व्याकरण के क्षेत्र में पूरी तरह अपने पैरों पर खडी हो गई । प्रारंभ कालीन हिन्दी की तुलना में भाषा और भी वियोगात्मक हो गई । परसर्गों और सहायक क्रियाओं का प्रयोग अधिक होने लगा ।

आधुनिक काल 1800 ई. से अब तक

आधुनिक काल में हिन्दी ने एक सशक्त गरिमामयी भाषा का रूप धारण कर लिया है । शिक्षा का व्यवस्थित प्रचार इसके लिए सहायक हुआ है । हिन्दी का पूर्ण विकास इस काल में हुआ है । अंग्रेज़ी शिक्षा के प्रचार के कारण कुछ नई ध्वनि - ऑ - भी हिन्दी में प्रयुक्त होने लगी । अंग्रेज़ी से पर्याप्त शब्द आ गए है । पुनरुत्थान युग में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कारण इधर संस्कृत शब्द बहुत अधिक आये है, और बहुत से पुराने तद्भव एवं देशज शब्द अप्रचलित हो गए है । नए पारिभाषिक शब्दों के निर्माण का कार्य भी चल रहा है और बातचीत, साहित्य तथा पत्र-व्यवहार की भाषा हिन्दी ; अब विज्ञान आदि हर क्षेत्र के लिए एक सक्षम भाषा बनती जा रही है ।

आधुनिक काल में हिन्दी प्रायः पूर्णतः एक वियोगात्मक भाषा हो गई है । प्रेस रेडियो शिक्षा तथा व्याकरणिक विश्लेषण आदि के प्रभाव से हिन्दी व्याकरण का मानक रूप काफी निश्चित हो गया । अंग्रेज़ी शिक्षा का प्रचार समाचार पत्रों तथा सरकारी कामों में प्रयोग के कारण भी अंग्रेज़ी हमारे अधिक निकट आई । इसका परिणाम यह हुआ है कि हिन्दी भाषा वाक्य रचना, मुहावरा तथा लोकोक्ति के क्षेत्र में अंग्रेज़ी से बहुत अधिक प्रभावित हुई है । "करिए", "मेरे को", "मेरे से", "तेरे में " जैसे नए रूपों का प्रयोग कुछ क्षेत्रों में बढ़ता जा रहा है । इस काल में हिन्दी शब्द समूह तत्सम, तद्भव, देशी-विदेशी शब्दों के प्रभावों को ग्रहण करते हुए दिनों दिन अधिक समृद्ध होता जा रहा है ।

हिन्दी वह सरिता है जिसमें संपूर्ण भारत की विभिन्न धाराओं का जल मिलता रहा है और उसकी श्रीवृद्धि होती रही है । आज हिन्दी पूरे भारत की राष्ट्रभाषा है और राजभाषा का रूप धारण कर रही है । देश विदेश की विश्वविद्यालयों में हिन्दी पाठ्य विषय है । विज्ञान व प्रौद्योगिकी के विषयों को भी ग्रहण करने की क्षमता आज हिन्दी में है । जर्मनी, फ्रांस, जापान, आस्ट्रेलिया, डेन्मार्क आदि राष्ट्रों में हिन्दी का प्रचार प्रसार हो रहा है । आधुनिक युग में राष्ट्रीय स्तर प्राचीन भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना की प्रमुख वाहिका हिन्दी रही है । अतः हिन्दी विकास के पथ पर आगे बढ रही है ।

संदर्भ :-

1. हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास - उदयनारायण तिवारी - पृ. 33
2. हिन्दी व्याकरण - कामता प्रसाद गुरु - पृ. 9
3. भाषा - ब्लूम फील्ड (अनु) डा. विश्वनाथ प्रसाद - पृ. 69
4. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास - डा. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय - पृ. 18
5. भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी - पृ. 144
6. सामान्य भाषाविज्ञान - बाबू राम सक्सेना - पृ. 342
7. भारतीय आर्यभाषाओं के इतिहास - जगदीश प्रसाद कौशिक - पृ. 80
8. हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास - उदयनारायण तिवारी - पृ. 118
9. भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी - पृ. 162
10. भारतीय आर्यभाषा - ज्यूल ब्लॉख -(अनु) लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय - पृ. 12
11. हिन्दी भाषा की भूमिका - शिवशंकर प्रसाद वर्मा - पृ. 34
12. भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी - डा. सुनीतकुमार चाटर्जी - पृ. 161.

दूसरा अध्याय

मलयालम भाषा का उद्भव और विकास

केरल भारत के दक्षिण कोने में स्थित एक छोटा-सा राज्य है । केरल की भाषा है मलयालम । मलयालम केरल और लक्षद्वीप की प्रमुख व्यावहारिक भाषा हैं । केरल के 96 प्रतिशत लोगों की मातृभाषा मलयालम है । भारत की जनसंख्या में 4 प्रतिशत मलयालम बोलते हैं । भारत के संविधान में सूचित भाषाओं में जनसंख्या की दृष्टि से मलयालम आठवाँ स्थान की भाषा है । दक्षिणात्य भाषाओं में इसका चौथा स्थान है । आधुनिक द्रविड भाषाओं में मलयालम एक साहित्य-संपुष्ठ भाषा है । प्रारंभ में मलयालम शब्द देशवाचक था । बाद में भाषा के नाम के रूप में परिवर्तित हो गया । "मल" का अर्थ है पहाड और "अलम्" का अर्थ है देश या स्थान । इसप्रकार मल अलम शब्द धीरे -धीरे मलयालम हो गया है ।[1] पहाड़ों की अधिकता और देश की एक सीमा पर्वत मालाओं से घिरे होने के कारण केरल के लिए मलयालम नाम बिलकुल सार्थक है ।[2] यह देशवाचक शब्द बाद में केरल की भाषा के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा । मलयालम के लिए प्रचलित अन्य नाम थे मलयाषुम्, मलयांपाषा और मलयायुम् आदि । चौदहवीं सती के अलंकार शास्त्र ग्रंथ लीलातिलक में मलयालम शब्द भाषा के अर्थ में प्रयुक्त है ।[3]

मलयालम भाषा की उत्पत्ति :

मलयालम भाषा के उद्भव के संबंध में विद्वानों के बीच में विभिन्न मत प्रचलित है । पहला मत है - मलयालम संस्कृत से निकली है । कोवुण्णि नेटुडाटी इस मत के पोषक है । दूसरा मत है किसी प्रचलित प्राकृत से मलयालम का जन्म हुआ है । शब्द भंडार, व्याकरण और मुहावरों की दृष्टि से तमिल के अधिक निकट होने के कारण डा. Caldwell (कॉलडवेल) श्री राजराज वर्मा आदि विद्वानों ने मलयालम को तमिल की पुत्री घोषित की है ।[4] वस्तुत: मलयालम मूल द्रविड से विकसित भाषा है ।[5]

सफल हुई है । द्रविड परिवार की भाषाओं की सामान्य विशेषताएँ इसमें पायी जाती है ।

एक स्वतंत्र भाषा के रूप में मलयालम का विकास नवीं सदी में हुआ। उस समय के शासनों में प्राचीन मलयालम का रूप द्रष्टव्य है। द्रविड परिवार की अन्य भाषाओं में से मलयालम का निकटतम सम्बन्ध तमिल से है। मलयालम के विकास के प्रारंभिक चरणों में तमिल का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। राज्य के आम लोगों की भाषा मलयालम थी। लेकिन तमिल ने पश्चिम तट में जो पंडित समाज की भाषा का स्थान प्राप्त किया था। फल यह हुआ कि केरल के लोगों की भाषा तमिल से प्रभावित होने लगी। लेकिन आधुनिक काल तक आते आते यह प्रभाव कम होने लगा। कालान्तर में केरल की बोलचाल की भाषा मलयालम साहित्यिक गरिमा पाकर उच्चस्तरीय हो गयी। उसने राजकीय व्यवहारों की दृढबद्ध शैली की भाषा का स्थान प्राप्त किया। दक्षिण में प्रकारान्तर से केरल में आर्य ब्राह्मणों का प्रभाव पडा है। अतः संस्कृत से मलयालम ने प्रभूत मात्रा में भाषिक सामग्री ग्रहण की। ब्राह्मणों की भाषा, उनके रहन सहन, रीतिरिवाज़ आदि ने केरल के लोगों को पर्याप्त मात्रा

रूप ध्वनि
में प्रभावित किया है । संस्कृत ने मलयालम की वाक्यरचना, रूपरूप, संधि, अर्थ आदि सभी को किसी न किसी रूप में प्रभावित किया है । इस बाह्य प्रभाव ने मलयालम को मूल द्राविड से अलग करके एक अस्तित्व दिया और उसके विकास में उत्प्रेरक का काम किया है ।[6]

तोलकप्पियम के रचनाकाल की केरल की व्यवहार भाषा से संबंधित सामग्री तो बहुत कम है । मूल द्राविड के शब्दांत का "अ" कार तमिल में "ऐ" कार के रूप में परिवर्तित हो जाता है । मलयालम में मल (पर्वत), तल (सिर), आदि शब्दों में "अ" कारान्त उच्चारण है । लेकिन तमिल में इसके "ऐ" कार से युक्त उच्चारण है । जैसे "मलै", "तलै" आदि इस विषय में मलयालम ने अपना पूर्व रूप बनाया रखा है । तेलुगु में मलयालम के समान केवल "अ" कार ही है । लेकिन कन्नड में "अ" कार हृस्व "ए" कार के रूप में परिवर्तित हो जाता है (आ, ई,)

। मलयालम की व्यवहृत भाषा की ध्वनियाँ हैं । यह मलयालम की प्राचीनता का प्रमाण प्रस्तुत करता है । प्राचीन तमिल में क्रिया के साथ लिंग, वचन आदि प्रत्ययों का प्रयोग नहीं था । लेकिन चेन्तमिल तक आते-आते इसका प्रयोग करने लगे । मलयालम में व्यवहार की भाषा में कर्ता के अनुसार क्रिया का रूप न बदलता है । लेकिन तमिल में बदलता है । जैसे -

तमिल	मलयालम	हिन्दी
अवन्वन्तान् ।	अवन वन्नु ।	वह आया ।
अवळ वन्ताळ ।	अवळ वन्नु ।	वह आयी ।
अवर वन्तार ।	अवर वन्नु ।	वे आये ।

[illegible] । संघकाल की तमिल में "न्तु" एक प्रत्यय था । वर्तमान मलयालम में भी यह प्रत्यय प्रयुक्त होता है । "न्तु" कन्नड में "उन्तु"

बना है । तेलुगु में "उदु", "उदुव्रु" आदि रूपों में बदलते हैं । इसके "इन्टु" जैसे एक रूप था । इससे "इरु" बना है । यह "इन्टु" मलयालम में "इन्नु" के रूप में बदल गया और बाद में इसने "उन्नु" का रूप धारण किया है ।

"ई" जैसे भूतकाल प्रत्यय का "य" कारागम से "इय" बना । लेकिन विशेषण का "न" कारागम से रहित "ई" का और एक रूप तमिल में नहीं था । पषुकिय - पषुकिन् - पुराना । अटविकल - अटविकन् - {Covered} आदि रूप वर्तमान मलयालम में प्रयुक्त होता है । पोरूवान् {आने को}, वरूवान् {आने को} आदि प्राचीन तमिल का "आन्" वर्तमान मलयालम में यह रूप व्यवहार भाषा में भी लक्षित होता है । तमिल में पोरूम - मति - बस शब्द संघकाल तक प्रयुक्त होता है । अंडने - उसी प्रकार - शब्द तमिल में केवल पंडित समाज का शब्द है । प्रत्युत: मलयालम में यह शब्द यत्र तत्र देखा जा सकता है । प्राचीन तमिल में निन्टे - तुम्हारा के अर्थ में "निन" का प्रयोग था । उन् रूप बाद में आया है । मलयालम में वह "निन्" रूप आज भी प्रयुक्त होता है । उसी प्रकार मलयालम के "आयी" - हो गया - आवुं - हो जाएगा - आदि तमिल में आकि और आकुं है । टुट "T" वर्ण का शुद्ध उच्चारण द्राविड परिवार की अन्य भाषाओं की अपेक्षा मलयालम में सुरक्षित है ।

मलयालम की विशेषताएँ :-

अनुनासिकता :- अनुनासिक वर्ण उसके तुरन्त बाद आने वाला वर्ण स्पर्श है तो उसे प्रभावित करके अनुनासिक बना देता है । संयुक्ताक्षर के अनुनासिक वर्ण पूर्व में और स्पर्श वर्ण बाद में आवे तो अनुनासिकता दुगुनी हो जाती है और स्पर्श का अलग उच्चारण नहीं होगा । उदा:- निङ्गल - तुम - निङ्ळ, नेञ्चु - छाती - नेञ्ञ्, माङ्काय - आम - माङ्ङा ।

[illegible]

[illegible]

स्वर संवरण :-

मलयालम में भूतकालिक क्रिया रूप स्पष्ट करना "उ" कार के ध्वनि के भेद से है । उदा:- कण्टु - कण्ट् - देखा, केट्टु - केट्ट - सुना । [illegible]

अक्षरलोप :-

मलयालम में कुछ पुरानी द्राविड़ प्रवृत्तियों के सुधार के लिए अक्षर लोप की प्रवृत्ति पायी जाती है । "कु" आदि उद्देशिका "उटय" आदि संबन्धिका विभक्ति के चिह्नों को कुछ नियमों के अनुसार "उ", "उटे", "[illegible]", जैसे कर दिया है । उदा:- अवन् - वह, अवने - उसको, अवन्नु - उसको, अवन्टे - उसका, अवळे - उसे, अवळ्क् - उसको (स्त्री), अवळ्टे - उसकी ।

वैष्णवों और शैवों के भक्ति गीतों की भाषा कठिन चेन्तमिल शैली से होकर व्यवहार की सरल भाषा में आयी । उसका रचना काल करीब नवीं सदी है । इनकी भाषा चेन्तमिल थी । [illegible] । शैवों और वैष्णवों के गीतों और नवीं सदी में जीवित पेरुन्तेवनार की "भारत" के गीतों से पुरानी मलयालम का रूप स्पष्ट हो जाता है । इस काल में ऐ, ओटु, वकु, इन, अतु, कण आदि [illegible] द्वितीय से सप्तमि तक की विभक्तियों का व्यवहार करने लगे । लीलातिलक में हृस्व "ए" ओटु, निन्टु, उटै, इलु आदि को उसके बदले प्रत्ययों के रूप में व्यवहृत किया गया है ।

इसमें ह्रस्व "ए" द्वितीय प्रत्यय "य" केवल मलयालम में है, तमिल में नहीं है । लेकिन तृतीय को परवर्ती वैयाकरणों ने आन्, आल जैसे दो प्रत्ययों का प्रयोग किया है । इनमें आल् वर्तमान मलयालम में है । चतुर्थी प्रत्यय कु कुछ संदर्भ में उच्चारण की सुविधा के लिए मलयालम में "नु" हो जाता है । पंचमी प्रत्यय इन् - बाद में तमिल में "इल्" के रूप में बदल गया है । मूल द्रविड की शब्द समूह द्रविड की सभी शाखाओं में समान रूप में थी । लेकिन कुछ शब्द बाद में लुप्त हो गये । इसलिए दक्षिण द्रविड में प्रचलित शब्द उत्तर द्रविड में नहीं है । मलयालम के सभी द्रविड शब्द तमिल में है । कुछ शब्दों का रूप और अर्थ तो बदल गया है ।

लीलातिलकम् और मलयालम

लीलातिलकम् काल की मलयालम तमिल से मिलती जुलती रहती थी । फिर भी इस काल तक आते - आते मलयालम ने तमिल से भिन्न एक अस्तित्व बनाये रखा है । तमिल का प्रभाव होने पर भी मलयालम ने एक स्वतंत्र भाषा शैली के रूप में विकास प्राप्त किया था ।

काल विभाजन

मलयालम भाषा के विकास की प्रवृत्तियों के आधार पर विकास के इस लम्बे अन्तराल को तीन काल खण्डों में विभक्त किया जा सकता है । (1) प्राचीन काल (2) मध्य काल और (3) आधुनिक काल ।

प्राचीन काल :- 9: ई से 13: ई तक

मलयालम का यह संधिकाल है । इस कालखण्ड की भाषा में तमिल का स्पष्ट प्रभाव दृष्टव्य है । फिर भी इस समय तक आते-आते मलयालम ने एक स्वतंत्र भाषा का रूप धारण किया था । प्राचीनकाल के अन्तिम समय में मलयालम तमिल के प्रभाव से मुक्ति पाकर संस्कृत की गोदी में पड़ी । कोल्लवर्षम् (केरल का वर्ष)[8] के प्रारंभकाल के शासनों की भाषा न तमिल थी और न मलयालम । एक अपभ्रंश भाषा थी । प्राचीनकाल की भाषाशैली व्यवहृत करनेवाले

कई मुहावरे और लोकोक्तियाँ है । प्राचीन गीतों, रामचरित, कण्णश्शकृतियाँ आदि में प्राचीन मलयालम की विशेषताएँ मौजूद है । इसकाल की भाषा में दो विभाग की रचनाएँ हुई है ।① भाषा स्वरूप के आधार पर रामचरित कण्णश्शकृतियाँ, चंपु आदि संस्कृत के प्रभाव को स्पष्ट करती है । लोकगीत परंपरा में आनेवाली रचनाएँ बोलचाल की भाषा में लिखी गयी है ।② मलयालम में लोकगीतों की एक परंपरा है । वीरगाथाएँ, धार्मिक गीतों आदि इस परंपरा की पूर्ति करती है । इन गीतों की रचना शुद्ध मलयालम में हुई । वस्तुत: यह मलयालम की विरासत है ।[9] दक्षिण के गीतों में तमिल का प्रभाव है, ये गीत केरल के लोगों के सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन की अमूल्य संपत्ति है ।

रामचरितम्की भाषा :-

मलयालम में प्राप्त सबसे प्राचीन सामग्री है रामचरितम्। रामचरितम्के रचनाकार चीरामन ने इसमें तमिल और मलयालम के एक मिश्र रूप का प्रयोग किया है । मलयालम और संस्कृत के मिश्रण से बने मणिप्रवालम के समान तमिल के देश-भेद और मलयालम के मिश्रण से लिखी गयी रचनाओं में रामचरितम् सबसे प्राचीनतम नमूना प्रस्तुत करती है ।[10] इसमें संस्कृत और येन्तमिल दोनों के शब्दों का प्रयोग है । आम लोगों के लिए लिखी गयी इस रचना में तत्कालीन भाषा की सारी विशिष्टताएँ निहित है ।

कण्णश्शकृतियाँ मलयालम के विकास के मोड़ में लिखी गयी है । क्योंकि इस समय मलयालम संस्कृत के प्रभाव में आने का समय है । कण्णश्शकृतियों के रचनाकाल में मलयालम पूर्ण रूप से संस्कृत के प्रभाव में आ गयी है । इसपर तमिल का प्रभाव तो है, फिर भी मलयालम की स्वतंत्रता तो व्यक्त करती है । इस समय में भाषा के व्याकरणिक नियम और भी सरलीकृत हुआ है । साहित्येतिहास में भाषा के विकास की दृष्टि से कण्णश्शकृतियों का महत्वपूर्ण स्थान है । इसकी भाषा सरल एवं सुकुमार शैली की है । मलयालम पूर्ण रूप से तमिल के प्रभाव से मुक्त हुई है ।

मध्यकाल:- 14 वीं सदी से 18 वीं सदी तक

मध्यकाल की मलयालम काफ़ी हद्दों पर संस्कृत से प्रभावित थी । भाषा के विकास में मध्यकाल का अपना महत्व है । इस काल की सबसे बडी उपलब्धि है "मणिप्रवालम भाषा" । यह मलयालम और संस्कृत के योग से बनी हुई है । किळिप्पाट्टु में मणिप्रवालम का सबसे श्रेष्ठतम रूप मिलता है । गाथा इस समय की साहित्यिक गरिमा को व्यक्त करती है । नंपूतिरि समुदाय के लोगों के द्वारा प्रयोग के कारण संस्कृत दिन-ब-दिन प्रचार प्राप्त करने लगें । इसके फलस्वरूप केरल में संस्कृत ने उच्चश्रेणी की भाषा का स्थान प्राप्त किया । अत: विद्वत् समाज की भाषा संस्कृत ने मलयालम को प्रभावित किया । आर्यों की भाषा संस्कृत के सामने मलयालम से क्षीण दिखायी पडती थी । नये-नये विचारों और भावों को ठीक तरह से प्रकट करने की अभिव्यंजना शक्ति के अभाव से मलयालम अपर्याप्त प्रमाणित हुई । अत: संस्कृत से उन्होंने ऐसे कुछ शब्दों को ग्रहण किया जो अपने लिए आवश्यक और अनिवार्य भी है । मधुरता और कोमलता की दृष्टि से भी अनेक सुन्दर और कोमलकान्त पदावली अपनाई गई । ये शब्द ध्वन्यात्मक दृष्टि से मलयालम के अनुरूप परिवर्तित हो गये । संस्कृत के सहयोग से मलयालम ने अपने नामों का भी परिष्कार किया । आम लोगों को नंपूतिरि समुदाय के लोगों की रीतिरिवाज़ की ओर लाने में उनकी भाषा संस्कृत पूर्ण रूप से काम में न आयी । अत: उन्होंने मलयालम को स्वीकार किया और केरल के लोगों ने संस्कृत को । यह आपसी संपर्क सामाजिक जीवन में मौलिक परिवर्तन लाने लगा । मलयालम और संस्कृत के योग से बना मणिप्रवालम इसका प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करता है । बारहवीं सदी के बाद में ही मणिप्रवालम एक विशेष भाषा शैली के रूप में विकसित हुई । कूत्तु, कूटियाट्टम जैसी "क्षेत्र कलाओं"* ने मणिप्रवालम के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है । मणिप्रवालम उस समय के पंडितों

---

* कूत्तु, कूटियाट्टम जैसी मंदिर की कलाओं को ही क्षेत्र कला नाम से अभिहित है ।

की काव्यभाषा में प्रयुक्त शब्दों की खासियत को सूचित करने का नाम है । संक्षेप में मणिप्रवालम आर्य द्राविड संस्कृति के संयोग का मधुर फल है ।

लीलातिलकम् मणिप्रवालम के शास्त्रीय लक्षणों को व्यक्त करती है । इसके अनुसार मणिप्रवालम में आम लोगों द्वारा प्रयुक्त शब्द होना चाहिए । संस्कृत शब्द को भाषा शब्द -{मलयालम} के समान सरल एवं सुकुमार होना ज़रूरी है । चंपु और सन्देश काव्य मणिप्रवालम की श्रेष्ठता का परिचायक है । यह केरल के कवियों का संस्कृत पांडित्य की जयभेरी है ।

चंपु गद्य और पद्य के मिश्रित काव्य का नाम है । मलयालम के विकास में चंपु का महत्वपूर्ण योगदान है । सन्देश काव्य की भाषा में संस्कृत शब्दों के साथ उनकी ध्वनियों का प्रयोग होने लगा ।

गाथा की अपनी खासियत है । इसमें आद्योपांत मलयालम का प्रयोग है । गाथा में प्रयुक्त मलयालम उस समय के मलयालम का श्रेष्ठतम रूप है । मलयालम की ऊर्जा और गरिमा इसमें निहित है । मणिप्रवाल काल के कवि - चेरूशेरी नंपूतिरि ने मणिप्रवालम् के प्रभाव से मुक्त होकर शुद्ध मलयालम में "कृष्णगाथा" की रचना की है । कृष्णगाथा शुद्ध मलयालम का सबसे प्रथम प्रबन्धकाव्य है । इसमें ग्रामीण शब्दों का प्रयोग प्रचुरमात्रा में है । साहित्य प्रधान प्राचीन रचनाओं में भाषा की दृष्टि से कृष्णगाथा ही श्रेष्ठ है । केरल भाषा - वनिता को प्राप्त आभूषणों में कमनीयता और प्राचीनता की दृष्टि से यह ग्रंथ प्रमुख है ।[12]

मलयालम की विकास यात्रा में किलिप्पाट्ट ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है । किळिप्पाट्टु शुद्ध द्राविड शाखा का मधुर नाद है । मणिप्रवालम् को एक द्राविड छाया देकर एषुत्तच्छन ने उसे नवजीवन प्रदान किया है । मलयालम को सर्वमान्य भाषा बनाने में एषुत्तच्छन का योगदान उल्लेखनीय है ।

तुल्लल की मलयालम

चंपु के छंदोबद्ध पदों को ही तुल्लल ने आधार बनाया है । आम लोगों के लिए आम लोगों की भाषा में नंप्यार ने तुल्लल के गीतों का सृजन किया । केरलीयता नंप्यार की अपनी खासियत है । मलयालम की स्वाभाविकता एवं निकटता नंप्यार की रचनाओं में मिलती है ।

आधुनिक काल :- 19 वीं सदी से अब तक

उन्नीसवीं सदी से मलयालम का आधुनिक काल शुरू होता है । यह मलयालम का प्रगतिशील विकास का काल है । अंग्रेज़ी के प्रचार के कारण भाषा विकास के नये शिखरों को छूने लगा । अन्य भारतीय भाषाओं के समान मलयालम में भी इस समय गद्य का विकास हुआ था । पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव के कारण मलयालम में उपन्यास, कहानी आदि नई साहित्यिक शाखायें विकसित होने लगी । गद्य और पद्य दोनों शाखाओं में अंग्रेज़ी साहित्य की प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर होती थी । दूरदर्शन, आदि ने मलयालम के विकास में अपनी-अपनी भूमिका निभायी । गुण्डर्ट, अर्णस पादरी जैसे ईसाई धर्मप्रचारकों ने भाषा गद्य की अमूल्य निधि में नवीन पश्चिमी शैली के गद्य का प्रथम स्फूरण लक्षित किए हैं । समाचार पत्रों का आविर्भाव इस युग की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है । इसके कारण मलयालम ज़्यादा अयोगात्मक एवं सरल हो गयी । भाषा के विकास के लिए जान-बूझकर किए गए प्रयत्नों से ज़्यादा फायदा सीमित समय की पत्रकारिता से भाषा में लक्षित हो गया है ।

उच्चारण की विविधता एवं प्रादेशिक भेद

मलयालम् के संदर्भ में यह कहावत बिलकुल सार्थक है कि - "बारह कोस पर बदले पानी, आठ कोस पर बानी ।" अन्य जीवंत भाषाओं के समान मलयालम में भी प्राचीनकाल से प्रादेशिक भेद था । सामान्य रूप से इन्हें दक्षिणी और उत्तरी जैसे दो भागों में विभक्त किया गया है । मलयालम में उपभाषा नहीं है।

उत्तर मलबार, लक्षद्वीप, दक्षिण तिरूवितांकूर देशों की मलयालम में औच्चारणिक दृष्टि से भिन्नता तो है । लेकिन शिक्षा के प्रचार के कारण यह भेद तो कुछ कम हो जाता है । भाषाभिवृद्धि और साहित्यिक प्रगति की दृष्टि से भारतीय भाषाओं में मलयालम का स्थान महत्वपूर्ण है । विभिन्न काल खण्डों से मलयालम ने यह विकास स्वायत्त किया है । मलयालम के इस विकास में संस्कृत, तमिल हिन्दी, बंगाली, फारसी, हीब्रू, अरबी, सिरियन पुर्तगाली, अंग्रेज़ी आदि संसार की अनेक भाषाओं ने अपने अपने योगदान दिया है । इसमें अंग्रेज़ी से आधुनिक मलयालम सबसे अधिक निकट है । दो स्वरों के बीच का क, च, ट, त, प का उच्चारण की शिथिलता मलयालम की विशेषता है । अनुनासिक व्यंजन के बाद आनेवाला क कार, च कार, त कार आदि मलयालम में अनुनासिक होकर अन्त होता है । मूल भाषा के न कार मलयालम अ कार हो जाता है । जैसे - नान् - आन - मैं, आयर - रविवार । मूल भाषा में ष् का स्थान "ल" ले लिया है । लेकिन मलयालम में प्राचीन ष्कार लिखित एवं मौखिक दोनों भाषा में हैं । मूल भाषा "पट्का", "कट्टुका" आदि धातुओं के बदले मलयालम में "पेट्टुक" - फंसना, "केट्टुक" - बांधना, अकार ऍ कारागम से युक्त रूप व्यवहृत भाषा में प्रयुक्त है ।

मलयालम के विकास के इस लंबे अन्तराल में संसार की प्रमुख भाषाओं के शब्दों का योगदान अवश्य है । आर्य संस्कृति संपूर्ण भारत में व्याप्त होने पर संस्कृत पूरे भारत की भाषा बनी । अतः मलयालम में संस्कृत का शब्द काफ़ी मात्रा में आ गया है । अंग्रेज़ी ने बड़ी मात्रा में मलयालम को प्रभावित किया है । प्रमुख रूप से यह प्रभाव एवं शब्द संपदा के ध्वन्यात्मक स्तर पर देखा जा सकता है । फ - आॅ ध्वनियाँ । ध्वनियों के साथ शब्दों, शैली को भी मलयालम ने स्वीकार किया है । मलयालम अंग्रेज़ी से उधार लेते ही रहती है । विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिक्षा

साहित्य, राजनीति, आदि सभी क्षेत्रों में अंग्रेज़ी ने मलयालम को प्रभावित किया है ।

मलयालम की ध्वन्यात्मक विशेषताएँ :-

मलयालम में निम्नलिखित कुछ ध्वनि परिवर्तन की दिशाएँ पायी जाती है । पदांत व्यंजन छोडकर व्यंजनान्त शब्द के अंत में संवृत "उ" कार जोडने की प्रवृत्ति मलयालम में है - जैसे बस् - Bus , रोड - Road , बुक - Book आदि अंग्रेज़ी शब्दों के उच्चारण मलयालम के रूप में बदलते हैं ।

महाप्राण वर्णाक्षरों घोष और अघोष के उच्चारण में एकरूपता मिलता है । लेकिन मष़ु - बारिस, पुष़ु - नदी, वष़ि - रास्ता, आदि शब्दों के और मूर्धन्य संघर्षहीन व्यंजन करी - कोयला, कऱी - सब्जि आदि शब्दों के उच्चारण में एकरूपता नहीं है । मलयालम के अग्र -"ल" और मूर्धन्य "ळ" आदि पार्श्विकों का भी उच्चारण में एकरूपता नहीं है ।

शब्द मध्य के कुछ व्यंजनों को छोडकर मलयालम की लिपि अक्षर लिपि है । दक्षिण भारत की लिपियाँ प्राचीन ब्राह्मी लिपि से क्रमानुसार विकसित हुई है । अशोक के काल में प्रचलित ब्राह्मी लिपि से वट्टेषुत (केरल की प्राचीन लिपि) विकसित हुई है । मलयालम की प्राचीन शासनों की लिपि वट्टेषुत है ।

मलयालम को केरल की राज्य सरकार ने कुछ क्षेत्रों में राजभाषा घोषित किया है । स्वतंत्रता के पश्चात् केरल के स्कूलों में शिक्षा के माध्यम के रूप में मलयालम को स्वीकार किया गया है । सरकार की ओर लिखे जानेवाले पत्रों का उत्तर मलयालम में ही देने की व्यवस्था है । मलयालम में ज्ञान विज्ञान के अनुकूल भाषा की क्षमता है । मलयालम में पारिभाषिक शब्दों की कमी नहीं है । केरल के लोग भाषा के संबंध में एक समन्वयात्मक दृष्टिकोण रखते हैं ।

संदर्भ :-

1. केरल साहित्य चरित्रम - भाग I - उल्लूर - पृ. 38
2. केरल भाषा विज्ञानीयम - डॉ. के. गोद वर्मा - पृ. 135
3. तुलनात्मक व्याकरण - डा. काल्डवेल - पृ. 16
4. केरल पाणिनीयम - आर. राजराज वर्मा - पृ. 5
5. तुलनात्मक व्याकरण - डॉ. काल्डवेल - पृ. 16
6. निरीक्षणनिलयम - डॉ. के. एम. जोर्ज
7. केरल साहित्य चरित्रम - उल्लूर - पृ. 29
8. केरल भाषयुटे विकास परिणामडल - इलमकुलम पी. कुञ्ञनपिल्लै - पृ. 55
9. मलयालम साहित्य कालघट्टङलिलूटे - एरूमेलि परमेश्वरन पिल्लै - पृ. 26
10. केरल भाषा विज्ञानीयम - डॉ. के. गोद वर्मा - पृ. 169
11. मलयालम साहित्य चरित्रम - पी. के. परमेश्वरन नायर - पृ. 23
12. मलयालम साहित्य एक सर्वेक्षण - डॉ. रामचन्द्रदेव - पृ. 30

तीसरा अध्याय

हिन्दी और मलयालम के स्वनिम

हिन्दी और मलयालम के स्वनिम

स्वनिम भाषा संरचना की आधारभूत लघुतम सार्थक और प्रकार्यात्मक इकाई है । यह किसी भाषा की ध्वन्यात्मक दृष्टि से समान, ऐसी भाषा ध्वनियों के वर्ग को कहते है, जो आपस में वितरण की दृष्टि से अव्यतिरेकी है । यह किसी भाषा की अर्थ भेदक ध्वन्यात्मक इकाई है । इसके एकाधिक ऐसे उपस्वन होते हैं, जो ध्वन्यात्मक दृष्टि से मिलते जुलते और अर्थ भेदकता में असमर्थ रहते हैं ।

स्वनिम दो प्रकार के होते हैं - खंड्य स्वनिम तथा खंड्येतर स्वनिम । खंड्य स्वनिम का उच्चारण स्वतंत्र रूप से हो सकता है । इसमें किसी भाषा के स्वर तथा व्यंजन स्वनिम आते हैं । खंड्येतर स्वनिम उन्हें कहते हैं - जिनका स्वतंत्र उच्चारण न हो सकता, जो अपने उच्चारण के लिए खंड्य स्वनिम पर ही आधारित हो । दीर्घता, अनुनासिकता, बलाघात, अनुतान, संगम खंड्येतर स्वनिम के अन्तर्गत आते हैं । खंड्येतर स्वनिम प्राय: अक्षर या अक्षर से बडी इकाई पर होते हैं, अक्षर से छोटी इकाई पर नहीं ।

1. खंड्य स्वनिम -

खंड्य स्वनिम के दो भेद है, स्वर स्वनिम और व्यंजन स्वनिम । स्वर स्वनिम एक प्रकार की गूँज है । मौखिक स्वरों में यह गूँज

मुख विवर में होती है तथा अनुनासिक स्वरों में यह गूँज मुख विवर तथा नासिक विवर दोनों में होती है । स्वर के उच्चारण में उच्चारण स्थानों का स्पर्श नहीं होता, केवल जिह्वा की अवस्था में परिवर्तन होने से ही ध्वनि मुख से बाहर निकलकर उच्चरित हो जाती है । व्यंजन स्वनिमों के उच्चारण में ~~निर्मित~~ निर्गलित वायु विभिन्न उच्चारण स्थानों पर अवरुद्ध हो जाती है । इस स्पर्श के आधार पर व्यंजन स्वनिमों का वर्गीकरण किया जाता है ।

2. खंड्येतर स्वनिम

खंड्येतर स्वनिम का अलग से उच्चारण नहीं हो सकता अत: स्वनिम न कहकर स्वनिमिक कहना अधिक समीचीन होगा । खंड्येतर स्वनिम के अन्तर्गत अनुनासिकता, बलाघात, अनुतान तथा संगम उपलब्ध होते हैं ।

अनुनासिकता :

अनुनासिकता, नासिक्य रंजित स्वर का अभिलक्षण है । यह न तो स्वर है न व्यंजन । जिस स्वर के साथ अनुनासिकता है, उसके उच्चारण में हवा नाक से भी निकलती है । इसलिए इसे स्वर रंजक भी कहते हैं ।

बलाघात :

बोलने में प्राय: ऐसा देखा जाता है कि उच्चारण के ~~हर~~ अक्षर मात्रा पर बराबर बल न दिया जाता है । वाक्य में कभी एक शब्द पर

बल दिया जाता है तो कभी दूसरे पर । इस तरह शब्द में कभी एक अक्षर पर बल अधिक दिया जाता है तो कभी दूसरे पर या अक्षर में पूर्व गह्वर और पर गह्वर में बल कम दिया जाता है तो शीर्ष पर अधिक । उच्चारण के इस बल को ही बलाघात कहते हैं ।

सामान्यत: बलाघात का अर्थ अक्षर बलाघात ही लिया जाता है । जब किसी शब्द में एक से अधिक अक्षर हो तो उनमें कोई एक बलाघात युक्त होता है, दो अक्षरयुक्त शब्दों में एक अक्षर पर मुख्य बलाघात होता है तथा दूसरे पर गौण ।

ध्वनि बलाघात

ध्वनियाँ दो प्रकार की होती है - §1§ दृढ़ और §2§ शिथिल । जिस ध्वनि पर बलाघात पड़ता है यदि वह मूलत: शिथिल है तो कुछ दृढ़ हो जाती है तथा यदि दृढ़ है तो दृढ़तर हो जाती है । बलाघात के कारण ध्वनि की मात्रा भी कुछ दृढ़ हो जाती है । ह्रस्व स्वर में कुछ दीर्घता आ जाती है अर्थात दीर्घ दीर्घतर हो जाता है । किन्तु ह्रस्व स्वर इतना दीर्घ नहीं हो जाता कि वह उस स्वर का दीर्घ रूप सुनाई पड़े । बलाघातित अक्षर की अल्पप्राण ध्वनि हवा की तेज़ी तथा आधिक्य के कारण कभी कभी कुछ महाप्राण जैसी सुनाई पड़ती है । बलाघात के कारण बलाघातित ध्वनि अपेक्षाकृत अधिक मुखर हो जाती है अत: वह अपेक्षाकृत अधिक दूर तक सुनाई पड़ती है । अन्य ध्वनियों की तुलना में उसकी श्रवणीयता बढ जाती है ।

ध्वनि बलाघात

जब किसी एक अक्षर में एक से अधिक ध्वनियाँ हो तो प्राय: उन ध्वनियों में एक ध्वनि बलाघात युक्त तथा मुखर होती है ।

अक्षर बलाघात

जब किसी शब्द में एक से अधिक अक्षर हो तो उनमें कोई एक बलाघात युक्त होता है । दो अक्षर युक्त शब्द में एक अक्षर पर मुख्य बलाघात होता है दूसरे पर गौण ।

शब्द बलाघात

एक से अधिक शब्दों के वाक्यों में अर्थ-संबंधी विशेषता लाने के लिए कभी-कभी एक शब्द पर बल देते हैं, जिसे शब्द बलाघात कहते हैं ।

वाक्यांश एवं वाक्य बलाघात

कभी-कभी वाक्य के किसी एक अंश पर भी बल देते हैं, किन्तु यह बलाघात अपेक्षाकृत कम ही प्रयुक्त होता है । कभी कभी एक से अधिक वाक्यों के एक साथ आने पर उसमें किसी एक पर अधिक बल दिया जाता है ।

अनुतान

उच्चारण के समय होने वाले उतार-चढाव या आरोह-अवरोह को ही अनुतान या सुरलहर कहते हैं । बोलने में घोष और अघोष दोनों ही प्रकार की ध्वनियों का प्रयोग होता है । किसी घोष ध्वनि के उच्चारण में स्वर तंत्रियों में होनेवाले कंपन की प्रति सेकंड-आवृत्ति उस ध्वनि का सुर कहलाती है । जब लगातार कई घोष ध्वनियां उच्चरित होती है तो उनके सुर मिलकर अनुतान हो जाती है । अनुतान वाक्य या वाक्यांश को विशेष अर्थ प्रदान करता है ।

संगम

उच्चारण के समय एक ध्वनि के बाद दूसरे का उच्चारण करते जाते हैं । एक ध्वनि के बाद दूसरी ध्वनि तक जाना दो प्रकार होता है - (1) इसमें किसी व्यवधान के बिना दूसरी ध्वनि आती है । (2) इसमें ध्वनियों के अंत में कम या अधिक व्यवधान होता है । एक ध्वनि के उच्चारण के बाद दूसरे के उच्चारण के लिए उच्चारण अवयवों को अपेक्षित तैयारी करनी पडती है ।

मौन या विराम काल (संगम) की सीमा के आधार पर हर भाषा में संगम के कई भेद किए जा सकते है :-

(क) अत्यल्पकालिक संगम - इसमें मौन बहुत थोडी देर के लिए होता है ।

§ख§ अल्पकालिक संगम

अत्यल्पकालिक संगम की तुलना में इसमें मौन काल कुछ लंबा होता है ।

§ग§ दीर्घकालिक संगम

यह प्रायः दो वाक्यों के बीच में आता है जिसे पूर्ण विराम, प्रश्न चिह्न या आश्चर्य चिह्न से व्यक्त करते है । इस संगम का उद्देश्य अर्थ की स्पष्टता तथा सांस लेना या प्रायः दोनों होता है ।

हिन्दी के खंड्य स्वनिम - स्वर स्वनिम :-

मानस्वर के अनुसार हिन्दी के स्वर स्वनिमों की स्थिति -

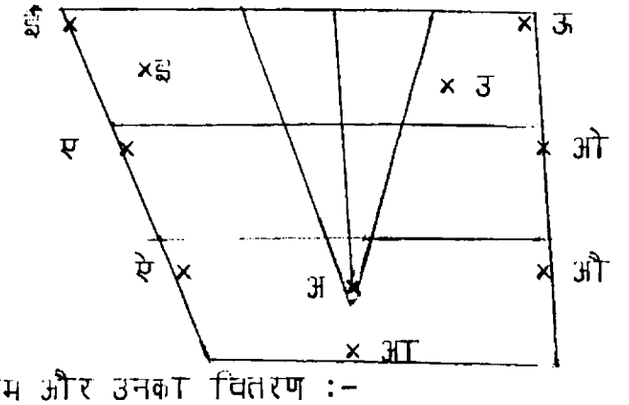

हिन्दी के स्वर स्वनिम और उनका वितरण :-

§अ§ - यह अर्धविवृत मध्य अवृत्तमुखी ह्रस्व स्वर है । इसके उच्चारण में जीभ कुछ ऊपर उठ जाती है । हिन्दी में इसका अनुनासिक रूप भी मिलता है । जैसे - सवार-संवार । यह प्रायः शब्दों के आदि मध्य और अंत में

आता है । हिन्दी के व्यंजनान्त शब्द के अंत का "अ" उच्चरित न होता है । (1)

आदि	मध्य	अंत
अम्मा	प्रणय	पलक
अगर	चपल	अलक

आ - यह अवृत्त मुखी विवृत पश्च स्वर है । मात्रा की दृष्टि से दीर्घ है । अनुनासिक रूप है - सास - सांस ।

आदि	मध्य	अंत
आदमी	काम	पाया
आदत	काल	आया

बलाघातित अक्षर के आगे या पीछे होने पर "आ" का कुछ उच्चीकृत रूप प्रयुक्त होता है । जैसे - आराम, आवारा ।

इ - यह संवृत्त अवृत्तमुखी अग्रस्वर है । संवृत्तता की दृष्टि से इसका स्थान "ई" के कुछ नीचे है । मात्रा की दृष्टि से ह्रस्व है । अनुनासिक रूप है - बिंधना - बिंधना । (2)

आदि	मध्य	अंत
इनाम	किया	गति
इलाज	किधर	पति ।

ई - यह अवृत्तमुखी संवृत्त अग्रसर है । मात्रा की दृष्टि से दीर्घ । इसके उच्चारण में जंभ का अग्र भाग बहुत अधिक ऊपर उठता है ।

अनुनासिक रूप है - चली, चलीं ।

आदि	मध्य	अंत
ईसाई	अमीर	गई
ईश्वरी	नतीजा	आई

उ- यह संवृत्त वृत्तमुखी ह्रस्व पश्च स्वर है । इसके उच्चारण में जीभ का पिछला भाग ऊपर उठता है । और ओठ गोल हो जाते हैं ।

आदि	मध्य	अंत
उसका	गुण	गुरू
उधर	पुल	मेरू

ऊ - यह ओष्ठ संवृत्त, दीर्घ, पश्च वृत्ताकार स्वर है । इसके उच्चारण में होंठ अधिक गोल हो जाते हैं और जीभ का पिछला भाग कोमल तालू की ओर उठ जाता है । अनुनासिक रूप है - पूछ - पूँछ ।

आदि	मध्य	अंत
ऊपर	ज़रूर	आलू
ऊसर	स्कूल	भालू

ए - यह अर्ध संवृत्त अवृत्तमुखी अग्र स्वर है । मात्रा की दृष्टि से "ई" से कुछ ह्रस्व है । अनुनासिक रूप है - करे - करें ।

आदि	मध्य	अंत
एक	जेब	गए
एकता	तेंदुआ	पाए

ऐ - यह अर्ध विवृत्त अवृत्तमुखी अग्र मूल स्वर है । मात्रा की दृष्टि से दीर्घ है । अनुनासिक रूप है - है, हैं ।

आदि	मध्य	अंत
ऐन	वैसा	है
ऐश्वर्यम	कैसा	हैं

ओ - यह ऊर्द्ध संवृत्त वृत्तमुखी पश्च स्वर है । मात्रा की दृष्टि से यह दीर्घ है, किन्तु "ऊ" से कुछ ह्रस्व है । अनुनासिक रूप है - ओठ, ओंठ ।

आदि	मध्य	अंत
ओज	जोर	जाओ
ओट	छोर	पाओ

औ - यह अर्द्धविवृत वृत्त मुखी पश्च स्वर है । "ऐ" के समान यह भी हिन्दी का मूल स्वर है । इसके उच्चारण में जॉभ का पश्च भाग कुछ ऊपर उठता है किन्तु "ओ" के जैसे नहीं है । अनुनासिक रूप है - चौकी - चौंकी ।

आदि	मध्य	अंत
औनत्य	कौंध	×
औजार	गौरव	×

ऑ - हिन्दी स्वरों में प्राय: इस स्वनिम का भी प्रयोग है । यह अर्ध विवृत पश्च स्वर है । इसका हिन्दी में प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्दों में प्रयोग होता है । जैसे - कॉफी, ऑफिस, डॉक्टर । सामान्यत: लोग

अंग्रेज़ी शब्दों में "ऑ" के स्थान पर "आ" का प्रयोग करते है । किन्तु सुशिक्षित लोग "ऑ" ही बोलते हैं और उनकी भाषा में "ऑ" भी स्वनिम है और इसके न्यूनतम विरोधी युग्म भी देखा जा सकता है । जैसे - बाल - बॉल, कॉफी -काफी। इसको हिन्दी का अकेन्द्रीय स्वर स्वनिम मानना उचित है । इस प्रकार हिन्दी में दस केन्द्रीय स्वर स्वनिम है तथा एक अकेन्द्रीय या गौण स्वर स्वनिम ।

संयुक्त स्वर

संध्यक्षर में दो स्वरों की अपनी अपनी स्वतंत्र आक्षरिक सत्ता नहीं रह जाती है । वस्तुत: ध्वन्यात्मक स्तर पर संध्यक्षर दो स्वरों का संयोग न होकर दो स्वरांशों का एकीकरण होता है ।[3] इसका उच्चारण वायु के एक झोंके में होता है तथा जबडा केवल एक बार हिलता है । कुछ स्वरों के उच्चारण में जीभ स्थिर रहती है, ऐसे स्वरों को मूल स्वर कहते हैं । इसके विपरीत कुछ स्वरों के उच्चारण में जीभ एक स्वर स्थान से दूसरे स्वर स्थान की ओर चलती है । जीभ की चल अवस्था में उच्चरित ये स्वर संयुक्त स्वर कहलाते हैं । क्योंकि इनके उच्चारण में दो स्वरों का संयुक्त रूप होता है । मानक हिन्दी के सभी स्वर मूल है ।

स्वरानुक्रम

स्वरानुक्रम के रूप में कोई भी दो स्वर किसी भी क्रम से आ सकते हैं । इस स्थिति में एक ही स्वर दुबारा आ सकता है ।

ह्रस्व एवं दीर्घ अथवा दीर्घ एवं ह्रस्व स्वर का भी क्रम मिल सकता है । इसके अतिरिक्त तीन तथा चार स्वर स्वनिमों का भी क्रम मिलता है । दो या अधिक स्वर एक के बाद एक आते हैं तो स्वरानुक्रम हो जाता है । स्वनिमिक स्तर पर दो से तीन स्वरों तक के अनुक्रम संभव है किन्तु स्वनिक स्तर पर दो से अधिक के क्रम में श्रुति आगमन से अनुक्रम भंग हो जाता है । कुछ द्विस्वर अनुक्रम भी श्रुति आगमन के कारण स्वनिक स्तर पर भंग हो जाता है ।*

आदि स्वरानुक्रम -	आ + उ = आउट	
	आ + ए = आए	
	आ + ओ = आओ	
मध्य स्वरानुक्रम -	अ + ई = रईस	
	ई + अ = शरीअत	
	उ + ए = छुए	
अन्त्य स्वरानुक्रम	अ + आ = गया	
	इ + आ = दिया	

स्वरानुक्रम की तालिका

×	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ
अ	तअल्लुक	चला	सइन	कई नई	अठउल	गऊ	नए	चलै	करो	कौन
आ	बाअवसर	आया	आइना	आई	आउट	आऊ ताऊ	आए	×	आओ	×
इ	मडियल	सियार दिया	बियिअर	×	चिउडा	पिऊँ	दिए आइस	×	पिओ	बसियौडा
ई	वसीअत	दीवा	×	×	×	पीऊँ पीयूष	सीए	×	सीओ	×
उ	सूअवसर	दुआ	धुइ	रूई	दुगुना	×	हुए	रूऐंधा	छुओ	×
ऊ	सूअर	सूआ	×	सूई	छूउ	छूऊँ	पूए	छूऐं	छूओ	×
ए	बेअदब	सेवा	तेइस	लेई	चेउरी	जनेऊ	खेए	×	खेओ	×
ऐ	दैअत	मैआ	नैयिक	×	×	×	×	×	छैओं	×
ओ	खोल	गोआ	कोइली	कोई	×	सोऊँ	रोए	×	सोओ	×
औ	×	औआ (हौआ)	×	×	×	×	भौंहें	×	सौओ	×

त्रिस्वरानुक्रम

इसमें एक स्वर के बाद दो स्वरों का आगमन होता है । इसमें क्रमानुसार एक ही स्वर नहीं आता है । उदा:-

आ इ ए - आइए

आ इ ओ - आइओ

इ आ इ - बनिआइन

उ आ ई - गुस्साई

औ आ ई - चौपाई

हिन्दी के व्यंजन स्वनिम और उनका वितरण

क, च, ट, त, प - अघोष अल्पप्राण :-

क - इसके उच्चारण में प्राणवायु कम निकलती है, तथा उच्चारण के समय स्वरतंत्रियाँ एक दूसरे से दूर रहने के कारण उनके बीच हवा कंपन के बिना निकलती है । सामान्य अल्पप्राणों की तुलना में "क" में प्राणत्व कुछ अधिक है ; फिर भी महाप्राण नहीं है । कंठ्य स्पर्श स्वनिम है ।

आदि	मध्य	अंत
कमला	मकान	एक
कंमरा	मकर	नाक

च - इसके उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कंपन नहीं होता और हवा कम निकलती है । च तालव्य स्पर्श संघर्षी है । इसके उच्चारण में जिह्वा

तालु के अग्रभाग का स्पर्श करके घर्षण करती है ।

आदि	मध्य	अंत
चकोर	बचा	सच
चमच	चाचा	नोच

ट - इसके उच्चारण में हवा कम निकलती है और स्वर-तंत्रियों में कंपन नहीं होता है । यह अघोष - अल्पप्राण मूर्धन्य स्पर्श व्यंजन है ।

आदि	मध्य	अंत
टपकना	मटर	काट
टाट	कटर	जाट

त - इसके उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कंपन नहीं होता तथा हवा कम निकलती है । जीभ ऊपर मसूडे का स्पर्श करती है । यह दन्त्य स्पर्श व्यंजन है ।

आदि	मध्य	अंत
तजना	आता	रात
ताज़ा	जाता	बात

प - इसके उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन नहीं होता तथा हवा कम निकलती है । उच्चारण में दोनों होंठ मिल जाते है । अतः हवा के प्रवाह में अवरोध हो जाता है और सहसा उसका स्फोट होता है ।

आदि	मध्य	अंत
पाना	अपना	ताप
पास	सपाट	छाप

अघोष महाप्राण - ख, छ, ठ, थ, फ

ख - इसके उच्चारण में प्राण वायु अधिक निकलती है । स्वरतंत्रियों में कंपन नहीं होता है । इसके उच्चारण में जीभ का पिछला भोग कोमल तालु का स्पर्श करता है ।

आदि	मध्य	अंत
खाना	सखा	राख
खाट	राखी	मुख

छ - इसके उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन नहीं होता तथा हवा अधिक निकलती है । यह अघोष महाप्राण तालव्य स्पर्श संघर्षी है ।

आदि	मध्य	अंत
छत	मछर	पूछ
छाता	मछली	रीछ

ठ - इसके उच्चारण में हवा अधिक निकलती है और स्वर तंत्रियों में कंपन नहीं होता । यह अघोष महाप्राण पूर्वतालव्य प्रतिपेष्ठिक स्पर्श है ।

आदि	मध्य	अंत
ठाठ	कठोर	आठ
ठाढ	कठिन	काठ

थ - इसके उच्चारण में हवा अधिक निकलती है तथा स्वर तंत्रियों में कंपन नहीं होता । यह अघोष महाप्राण दंत्य स्पर्श व्यंजन है ।

आदि	मध्य	अंत
थाली	कथा	हाथ
थोडा	हाथी	रथ

फ - इसका उच्चारण स्वर तंत्रियों के कंपन के बिना होता है तथा हवा अधिक निकलती है । इसका प्रयोग हिन्दी में प्रयुक्त अरबी, फारसी और अंग्रेज़ी शब्दों के ज़्यादातर होता है । हिन्दी की बोलियों में इसका प्रयोग "फ्" के समान है । यह अघोष महाप्राण द्व्योष्ठ्य स्पर्श व्यंजन है ।

आदि	मध्य	अंत
फल	सफल	हीफ
फलतः	फूफा	रेफ

सघोष अल्पप्राण : ग, ज, ड, द, ब ।

ग - इसके उच्चारण में हवा कम निकलती है, तथा "क" "ख" की अपेक्षा स्वरतंत्रियाँ एक दूसरे के निकट आती है । हवा हर्षण के साथ निकलने के कारण स्वर तंत्रियों में कंपन होता है । यह घोष अल्पप्राण कोमल तालव्य स्पर्श है ।

आदि	मध्य	अंत
गधा	अगर	आग
गला	मगर	राग

ज - इसके उच्चारण में हवा कम निकलती है और स्वर तंत्रियों में कंपन होता है । यह घोष अल्पप्राण तालव्य स्पर्श संघर्षी है ।

आदि	मध्य	अंत
जल	सजग	जलज
जब	सजाना	अनाज

ड - इसके उच्चारण में हवा कम निकलती है । स्वर-तंत्रियों में कंपन होता है । यह उत्क्षिप्त व्यंजन है । इसके उच्चारण में जीभ तालू के किसी भाग को वेग से मारकर हट जाती है । यह घोष अल्प प्राण पूर्व-तालव्य प्रतिवेष्ठित स्पर्श व्यंजन है ।

आदि	मध्य	अंत
डाल	अडिग	आड
डोर	जोडा	जोड

द - इस स्वनिम के उच्चारण में हवा कम निकलती तथा स्वर तंत्रियों में कंपन होता है । यह घोष अल्पप्राण दंत्य स्पर्श है ।

आदि	मध्य	अंत
दाल	मादा	याद
दया	गदा	वाद

ब - इसके उच्चारण के समय स्वर तंत्रियों में कंपन होता है, तथा हवा कम निकलती है । घोष अल्पप्राण, द्व्योष्ठ्य स्पर्श व्यंजन है ।

आदि	मध्य	अंत
बल	अबला	जब
बम	तबला	तब

सघोष महाप्राण - घ, झ, ढ, ध, भ

घ - इसके उच्चारण में अधिक हवा निकलती है और स्वर तंत्रियों में कंपन होता है । जीभ का पिछला भाग कोमल तालू का स्पर्श कर इसको ध्वनित करता है । यह कोमल तालव्य स्पर्श व्यंजन है ।

आदि	मध्य	अंत
घरी	सघन	माघ
घरा	औघर	काघ

झ - इसके उच्चारण में हवा अधिक निकलती है । और स्वर-तंत्रियों में कंपन होता है । इसके उच्चारण में जीभ का अग्र भाग दंत पंक्ति के पीछे के भाग को देर तक स्पर्श करता है । यह तालव्य स्पर्श संघर्षी व्यंजन है ।

आदि	मध्य	अंत
झील	रीझ	बूझ
झूला	ओझा	बोझ

ढ - इसके उच्चारण में अधिक हवा निकलती है और स्वर तंत्रियों में कंपन होता है । यह पूर्व तालव्य, प्रतिवेष्ठित स्पर्श व्यंजन है ।

आदि	मध्य	अंत
ढाल	बेढब	पढ
ढील	बेढंग	रीढ

ध - इसके उच्चारण में हवा अधिक निकलती है और स्वर तंत्रियों में कंपन होता है । यह दंत्य स्पर्श व्यंजन है ।

आदि	मध्य	अंत
धारण	आधार	बुध
धाम	अधिक	सुध

भ - इसके उच्चारण में हवा अधिक निकलती है और स्वर तंत्रियों में कंपन होता है । यह द्व्योष्ठ्य स्पर्श व्यंजन है ।

आदि	मध्य	अंत
भाषा	आभार	शुभ
भला	उभार	लाभ

अनुनासिक व्यंजन - ङ , ञ , ण, न, म

ङ - इसके उच्चारण में जीभ का पिछला भाग ऊपर उठकर कोमल तालू को छूता है तथा हवा नासिका विवर से निकलती है । स्वरतंत्रियों में कंपन होता है । निरनुनासिक व्यंजनों की अपेक्षा जीभ तालू के कुछ अधिक पिछले भाग को छूती है । यह घोष-अल्पप्राण कोमल-तालव्य नासिक्य व्यंजन है । शब्दों के अंत में ही अधिक प्रयुक्त है । जैसे अंक, गंगा, पंख । कभी कभी "म" या "न" के पूर्व में भी आता है ।
वाङमय, पराङमुख

ञ - इसके उच्चारण में जीभ का अग्र भाग कठोर तालू का स्पर्श करता है तथा हवा नासिका विवर से निकलती है । स्वर तंत्रियों में कंपन होता है । प्राचीन भारतीय आर्य भाषा के अनुनासिक व्यंजनों में "ञ" और "ण" हिन्दी में "न" के रूप में विकसित हुआ है । यह तालव्य नासिक्य व्यंजन है ।

"ञ" केवल च, छ, ज, झ, के पूर्व शब्द के मध्य में संयुक्त व्यंजन के प्रथम सदस्य के रूप में आता है । जैसे - चंञ्चल, वाञ्छा आदि ।

ण - इसके उच्चारण में जीभ उलटकर मूर्धा तथा कठोर तालू की सीमा के पास जाती है और फिर झटके से नीचे आती है । स्वरतंत्रियों में कंपन होता है । तथा हवा अधिक निकलती है । यह पूर्व तालव्य उत्क्षिप्त व्यंजन है । यह शब्द के मध्य और अंत में आता है ।

आदि	मध्य	अंत
×	प्रणाम	चरण
×	कणिका	शरण

न - इसके उच्चारण में स्वरतंत्रियाँ एक दूसरे के बहुत निकट आ जाती है । स्वर तंत्रियों में कंपन होती है । जीभ की नोक वर्त्स्य का स्पर्श करती है तथा हवा नासिका विवर से निकलती है और उसकी मात्रा कम होती है । यह घोष अल्पप्राण वर्त्स्य नासिक्य व्यंजन है ।

आदि	मध्य	अंत
नदी	जनक	कान
नाद	कनक	पान

म - इसके उच्चारण में स्वर तंत्रियाँ बहुत निकट आती है और उनमें कंपन होता है । हवा नासिका विवर से निकलती है । इसके उच्चारण में दोनों ओठ बंद हो जाते हैं और हवा नासिका विवर में गूँज पैदा करती है । यह घोष अल्पप्राण नासिक्य व्यंजन है ।

आदि	मध्य	अंत
माता	कमल	काम
मीठ	कमान	दाम

अर्धस्वर - य, व

इसके उच्चारण के प्रारंभ में जीभ ह्रस्व "इ" के उच्चारण की स्थिति में होती है, फिर आगामी स्वर के अनुरूप हो जाती है । स्वर तंत्रियों में कंपन होता है तथा हवा कम निकलती है । यह अपनी प्रकृति में स्वर है किन्तु कार्य स्वर का न करके व्यंजन के गुण से युक्त है । यह घोष अल्पप्राण तालव्य संघर्ष-हीन सप्रवाह है ।

आदि	मध्य	अंत
याग	प्रयोग	गाय
याम	प्रयास	राय

व - लेखन में एक "व" है उच्चारण में दो "व" है द्वयोष्ठ्य तथा दंत्योष्ठ्य । द्वयोष्ठ्य "व" के उच्चारण में हवा स्वरतंत्रियों में कंपन उत्पन्न करती है । हवा की मात्रा कम निकलती है । इसके उच्चारण में जीभ का पिछला भाग कोमल तालु की ओर "उ" के उच्चारण स्थान की अपेक्षा और अधिक ऊपर उठता है किन्तु यह कोमल तालु का स्पर्श नहीं कर पाता । यह "व" शब्दांत में "ऊ" के बाद आता है तो प्राय: "अव" "औ" रूप में उच्चरित होता है । श्व - शै, शव - शै । द्वयोष्ठ्य "व" के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन होता है । होठों के बीच से हवा संघर्ष करती हुई निकलती है ।

लुंठित "र"

र - इसके उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कंपन होता है कौआ ऊपर उठकर नासिकाविवर के रास्ते को बन्द कर देता है । जीभ वर्त्स के पास जाकर अपनी नोक को उसके इतना पास कर देती है कि हवा का प्रवाह नोक कांपता मुह के बाहर निकल जाती है । जीभ की नोक दो तीन बार लोटती हुई ऊपर की मसूडे को शीघ्रता से छूती है । यह घोष अल्पप्राण प्रकंपित वर्त्स्य व्यंजन है ।

आदि	मध्य	अंत
राज	तारा	बार
रात	भारत	भीर

पार्श्विक व्यंजन - ल

ल - इसके उच्चारण में हवा फेफड़े से चलती है । स्वरतंत्रियों में कंपन होता है । हवा की मात्रा "ल" के उच्चारण में कम होती है । उच्चारण के समय जीभ के दाएँ-बाएँ छूट जाती है, जिसके कारण वायु पार्श्व से निकल जाती है और कंठ में भी कंपन होता है । यह घोष अल्पप्राण वर्त्स्य पार्श्विक व्यंजन है ।

आदि	मध्य	अंत
लाल	चलना	फल
लाली	जलना	जल

संघर्षी व्यंजन - श, ष, स, ह

श - इसके उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन होता है । कौआ नासिक विवर का रास्ता बंद कर देता है । जीभ का अग्र भाग कठोर तालु के काफी निकट आ जाता है । प्रारंभिक स्थिति में यह ध्वनि-नासिक्य के पूर्व सुनी जा सकती है । सघोष तालव्य संघर्षी व्यंजन है ।

आदि	मध्य	अंत
शायद	आशय	यश
शील	सशक्त	शीशा

ष - इसका उच्चारण "श" की तरह होता है । अंतर है - "ष" में जीभ की नोक ऊपर उठ जाती है और नोक तथा पूर्व तालु के बीच में हवा घर्षण करती हुई निकलती है । हिन्दी में मूर्धन्य "ष" का अभाव है, यह केवल संयुक्त व्यंजन के रूप में "ट" वर्ग के पूर्व या "क" के बाद ही आता है । षडानन् - कषष ।

स - इसका भी उच्चारण "श" के आसपास का है । इसमें घर्षण जीभ के ऊपरी अग्रतम भाग तथा वर्त्स्य के बीच होता है । इसके उच्चारण में जीभ की नोक से वर्त्स्य स्थान को रगड के साथ छू जाता है । यह वर्त्स्य संघर्षी है ।

आदि	मध्य	अंत
सारा	आसरा	तीस
साली	संसार	पास

ह - इसके उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन उत्पन्न होता है । कौआ ऊपर उठता है और हवा नासिका विवर से जाती है । "ह" के उच्चारण में

हिन्दी के व्यंजन स्वनिम

स्थान प्रयत्न	द्वयोष्ठ्य	दंतोष्ठ्य	दंत्य	वर्त्स्य	तालव्य	मूर्धन्य	कोमल तालव्य	जिह्वा-मूलीय	स्वरयंत्रमुखी
अ:प्राण स्पर्श	प ब		त द			ट ड	क ग		
म:प्राण	फ भ		थ ध			ठ ढ	ख घ		
अ:प्राण स्पर्श संघर्षी					च छ				
म:प्राण					ज झ				
अ:प्राण अनुनासिक	म			न		ण	ङ		
अ:प्राण पार्श्विक				ल					
अ:प्राण लुंठित				र					
अ:प्राण उत्क्षिप्त									
संघर्षी				स	श	ष		ह	
अर्धस्वर	व				य				

भीतर से आयी हवा का झोंक बहुत तेज़ होता है । इसके उच्चारण में जीभ तालु और ओठों की सहायता बिलकुल नहीं लेती है । यह अघोष स्वर यंत्रमुखी संघर्षी ध्वनि है । हिन्दी में "यह" और "वह" जैसे शब्दों में "ह" प्रायः अनुच्छरित-सा होता है । पूर्ववर्ती "अ" मर्मर स्वर हो जाता है । 5

आदि	मध्य	अंत
हम	रहना	राह
हाथ	पहना	चाह

न्ह, म्ह, ल्ह - ये लिखने में संयुक्त व्यंजन है । लेकिन वास्तविक उच्चारण में ये न, म, ल वैसे ही महाप्राण है । क्ष, त्र, श - संयुक्त व्यंजन है ।

क़, ख़, ग़, ज़, फ़

अधिकांश हिन्दी भाषी इनका प्रयोग नहीं करते । इनके स्थान पर वे क्रमशः क, ख, ग, ज, फ का ही प्रयोग करते है । इनमें क़, ख़, ग़ का प्रयोग अपेक्षाकृत कम लोग करते हैं; किन्तु ज़, फ़ का प्रयोग काफी लोग करते हैं । अंग्रेज़ी शिक्षा के प्रभाव के कारण इनका ठीक उच्चारण समझने की सुविधा है । लेकिन क़, ख़, ग़, की स्थिति इससे भिन्न है । ज़, फ़ हिन्दी के ध्वन्यात्मक ढाँचे के अनुकूल है । अतः हिन्दी ने उन्हें सहज रूप से स्वीकार किए है । क़, ख़, ग़, तो केवल अरबी, फारसी, तुर्की शब्दों में आते हैं । ज़, फ़ इनके अतिरिक्त अंग्रेज़ी और अन्य युरोपीय भाषाओं से हिन्दी में गृहीत शब्दों में भी आते हैं ।

व्यंजन स्वनिमों के केन्द्रीय स्वनिम

केन्द्रीय स्वनिम - क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़, त, थ, द, ध, न, न्ह, प, फ, ब, भ, म, म्ह, य, र, ल, ल्ह, व, श, स, ह ।

अकेन्द्रीय स्वनिम - ऑ, क़, ख़, ग़, ज़, फ़ ।

सामान्य तौर पर हिन्दी में प्रयुक्त स्वनिम केन्द्रीय स्वनिम है । जो स्वनिम भाषा में सामान्य रूप से अर्थभेदक तथा व्यतिरेकी होते हैं उन्हें केन्द्रीय स्वनिम कहते हैं, किन्तु जो कुछ सीमित लोगों, सीमित शब्दों या सीमित परिस्थितियों में प्रयुक्त होते हैं वे अकेन्द्रीय स्वनिम या गौण स्वनिम है । अकेन्द्रीय स्वनिम सामान्य भाषा में व्यतिरेकी न होकर मुक्त परिवर्तन होता है । ये अर्थ भेदक नहीं है - जैसे क़ानून - कानून ।

ड़ और ड

ये दोनों स्वनिम "ड" स्वनिम के उपस्वन थे । क्योंकि इसका परिपूरक वितरण उपलब्ध है ।

ड़ - मध्य में दो स्वरों के बीच में - घोड़ा

अन्त में स्वर के बाद - पहाड़

ड - शब्दादि में - डाली । मध्य में रूपिम सीमा पर - अंडिग ; अनुनासिक स्वर के बाद - डोंडी, दीर्घ रूप में - गड्डी तथा संयुक्त व्यंजन के सदस्य के रूप में - गड्ढा । अब रेडियो, रोड, सोडा, कोड, आदि अंग्रेज़ी शब्दों में आने के कारण - मध्य- घोड़ा-सोड़ा, तथा अन्त में जोड़-रोड शब्दों में दोनों व्यतिरेकी हो गये है । अतः पहले ये परिपूरक वितरण में

होने के बावजूद ये दो स्वनिम आने जा सकते है । "ड़", "ड" संदिग्ध युग्म थे और वितरण के आधार पर यह सिद्ध किया किया कि ये दोनों पहले तो एक स्वनिम के उपस्वन थे । किन्तु अब अलग-अलग स्वनिम है । हिन्दी "ड" आर्की स्वनिम है । जो एक स्थिति में "ड" रूप में प्रतिफलित होता है तो दूसरी स्थिति में "ड़" रूप में ।

ढ, ढ़ - इनकी स्थिति भी "ड ड़" जैसी है । स्वनिमों की सूची में ड-ड़ की अलग-अलग स्वनिम माना गया है । अतः इन्हें भी अलग-अलग स्वनिम मानना चाहिए । सामान्यतः ये दोनों एक स्वनिम "ढ" के उपस्वन के रूप में आते हैं ।

ढ़ - दो स्वरों के बीच में - पढ़ाई, तथा अन्त में स्वर के बाद - गढ़ ।

ढ - आदि में ढाल, तथा मध्य में रूपिम सीमा पर या संयुक्त सदस्य के रूप में - गड्ढा, या अनुनासिक स्वर के बाद । कई स्थितियों में परिपूरक वितरण के बावजूद ढ - ढ़ को भी अलग-अलग स्वनिम माना जा सकता है ।

× आर्की स्वनिम की संकल्पना (प्राग) संप्रदाय की है । यदि कोई स्वनिम अलग-अलग स्थितियों में विभिन्न रूप ले या विभिन्न रूपों में प्रतिफलित हो तो उसे आर्की स्वनिम कहते हैं । संस्कृत हिन्दी जैसी भारतीय भाषाओं के अनुस्वार आर्की स्वनिम है जो - क, ख, ग, घ, के पूर्व "ङ" -(कंगण, पंखा गंगा, जंघा) च, छ, ज, झ के पूर्व "ञ" - (चंञ्चल, झंझा, अंजन) ट, ठ, ड, ढ़ के पूर्व "ण" - (टंटा, कंठ, डंडा) त, थ, द, ध, के पूर्व "न" (संत, कंथा, अंधा) तथा प, फ, ब, भ के पूर्व "म" (पंप, बंबा, रंभा) रूप में प्रतिफलित होता है ।

हिन्दी व्यंजन स्वनिमों के न्यूनतम युग्म -

हिन्दी के अधिकांश व्यंजन स्वनिमों के न्यूनतम युग्म मिलते हैं ।

कड़ा - खड़ा - गड़ा - घड़ा

चला - छला - जला - झल

टाला - ठाला - डाला - ढाला

ताल - थाल - दाल - धाल

पली - फली - बली - भली

यह - रह - लह - वह

साल - शाल - हाल

कुमार - कुम्हार

कानु - कान्हु

~~हिन्दी के व्यंजन स्वनिमों की वर्गीकरण~~

संयुक्त व्यंजन तथा व्यंजन अनुक्रम

संयुक्त व्यंजन दो या अधिक व्यंजनों के योग से बनते है । व्यंजन अनुक्रम में एक के बाद दूसरे व्यंजनों का प्रयोग होते है । संयुक्त व्यंजन और अनुक्रम के भेद :-

व्यंजन अनुक्रम में दो व्यंजनों की स्वतन्त्र सत्ता होती है, वे दो इकाई होती है, किन्तु संयुक्त व्यंजन में दोनों मिलकर एक हो जाते है ।

उनकी एक इकाई हो जाती है । अनुक्रम में दोनों की सम्मिलित मात्रा बड़ी होती है । किन्तु संयुक्त में दोनों के मिलकर एक इकाई होने से मात्रा छोटी हो जाती है । समान ढाँचे के शब्दों में अनुक्रम के पूर्व का स्वर मात्रा में कुछ बड़ा होता है तथा उसके उच्चारण में मांस पेशियाँ दृढ़ होती है । अनुक्रम में सर्वत्र मूलतः "अ" है जो स्वनिमिक नियमों के अनुसार लुप्त हो गया है । कमल - कमला, निकलना - निकला, फिसलना - फिसला जैसे युग्मों में यह बात स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है । इसके विपरीत संयुक्त व्यंजनों में मूलतः यह "अ" नहीं होता । हिन्दी में व्यंजन अनुक्रम तथा संयुक्त व्यंजन दोनों की सत्ता तो है - किन्तु इनका अन्तर सतर्क तथा सहज उच्चारण करने में ही अधिक है ।

उदा:- कमल, कमला, अम्ल । कमल में "म" तथा "ल" के बीच "अ" है कमला में "म" तथा "ल" के बीच उच्चारण में "अ" नहीं है । "म" के तुरन्त बाद "ल" व्यंजन आता है । उसी प्रकार इसमें "मृ", "लृ" अनुक्रम के रूप में आता है । अम्ल में "मृ" और "लृ" पूर्णतः मिल जाते हैं । "कमला" में "म" "ल" व्यंजन अनुक्रम है तथा "अम्ल" में म् ल् का व्यंजन संयोग है और वे संयुक्त व्यंजन या व्यंजन या व्यंजन गुच्छ है ।[5] "अ" लुप्त व्यंजन अनुक्रम केवल बीच की ही स्थिति में आते हैं । उपकार - प+क ।

संयुक्त व्यंजन या व्यंजन गुच्छ

	आदि	मध्य	अन्त
प + ल	प्लावन	विप्लव	-
ब + र	ब्राह्मण	-	कब्र
भ + र	भ्रम	अपभ्रंश	शुभ्र
म + ल	म्लेच्छ	-	अम्ल
त + र	त्रुटि	कृत्रिम	मित्र

ध + र	ध्रुव	–	–
न + य	न्याय	कन्या	अन्य
च + य	च्यवन	अच्युत	वाच्य
ज + व	ज्वाला	उज्वल	–
क + ल	क्लेश	शक्लों	अक्ल
ख + य	ख्याति	विख्यात	मुख्य
घ + र	घ्राण	शीघ्रता	शीघ्र
श + य	श्याम	घनश्याम	अवश्य

तीन व्यंजन –

स + त + र	स्त्री	विस्तृत	वस्त्र
न + त + र + य			स्वतंन्त्र्य

दीर्घ व्यंजन

किसी ह्रस्व स्वर का देर तक उच्चरित रूप उस का दीर्घ रूप होता है उसी प्रकार किसी व्यंजन का देर तक उच्चरित रूप भी उसका दीर्घ रूप है । सभी व्यंजन अपने मूल रूप में ह्रस्व व्यंजन है । हिन्दी में महाप्राण व्यंजनों तथा ड़, ढ़, ङ, ञ को छोडकर अन्य अधिकांश व्यंजनों के दीर्घ रूप मिलते हैं । महाप्राण का दीर्घ रूप उच्चारित नहीं हो सकता । महाप्राण को यदि दीर्घ किया जाय तो वह दो व्यंजनों का संयुक्त रूप हो जाता है जिनका दूसरा सदस्य तो वही महाप्राण रूप होता है । अध्धा – अद्धा, अच्छा – अच्छा, पथ्थर – पत्थर । ह्रस्व व्यंजना की तुलना में दीर्घ व्यंजन दृढ़ होते है । हिन्दी के दीर्घ व्यंजन – क़ – रूक़्क़ा, क– चक्की, ग– बग्गी ।

अर्धस्वर और श्रुति

बोलने में उच्चारणावयव जब एक ध्वनि के उच्चारण के बाद दूसरे का उच्चारण करने के लिए नयी स्थिति में जाने लगते है तो कभी-कभी हवा मन्द्र रहने के कारण बीच में ही एक ऐसी ध्वनि उच्चरित होती है जो वस्तुतः उस शब्द में नहीं होती । ऐसी अकस्मात् आ जानेवाली ध्वनि श्रुति कहलाती है ।

हिन्दी के श्रुति तथा अर्ध स्वर में निम्नांकित भेद है : य, व श्रुति तो मात्र स्वनिक स्तर पर होते हैं स्वनिमिक स्तर पर या प्रकार्य की दृष्टि से उनकी सत्ता नहीं है । इसके विपरीत य, व अर्ध स्वर उच्चारण में श्रुति के समान होते हुए प्रकार्य की दृष्टि से स्वनिम है ।

श्रुति का अर्थ है जो सुनाई पडे । श्रुति की सत्ता स्वनिक स्तर पर ही होती है, व्याकरण या स्वनिम के स्तर पर वह अर्धस्वर संज्ञा का अधिकारी होता है । उदाहरण के लिए "चल" से "चलो" रूप चल में "ओ" जोडने से बना है । इसी प्रकार यदि "आ" से रूप बनना चाहें तो आ+ आ-आआ रूप बनेगा । उच्चारण की सुविधा के लिए इसमें "य" श्रुति आने से "आया" रूप होगा । आया के "या" की सत्ता मात्र उच्चारण या स्वनिम स्तर पर है । व्याकरणिक दृष्टि से यह "आ" धातु तथा "आ" प्रत्यय है अर्थात् व्याकरणिक स्तर पर "य" की सत्ता नहीं है । संज्ञाओं में जहाँ "य" आयेगा अर्धस्वर या व्यंजन स्वनिम होगा, किन्तु क्रिया रूपों में वह मात्र श्रुति होगा ।

संज्ञा - आया, खाया, पाया ।

क्रिया - आया, खाया, पाया ।

हर "य" "व" हिन्दी में स्वनिम नहीं है । जो संज्ञा में आते है, वे तो स्वनिम है ; और जो क्रिया में आते है, वे मात्र श्रुति है । यदि दोनों को ही अर्धस्वर कहें तो संज्ञा के "य", "व" अर्धस्वर स्वनिम होते है और क्रिया के अर्धस्वर स्वनिम नहीं होते ।

हिन्दी में "य" और "व" के क्रम

-"य"-

1. विवृत - संवृत	आ - ई	भलाई, खिलाई
2. अर्द्धविवृत - अर्द्ध - संवृत	अ - ए	नए, गए, भए
3. अर्द्ध संवृत - संवृत	ओ - ई	सोई, रोई, खोई
4. अर्द्ध संवृत - अर्द्ध-संवृत	ए - ए	खेए, सेए
5. अर्द्ध विवृत - संवृत	अ - ई	गई, नई, भई
6. विवृत - अर्द्ध संवृत	आ - ए	आए, लाए
7. अर्द्ध संवृत - अर्द्ध संवृत	ओ - ए	सोए, रोए, खोए
8. संवृत - अर्द्धसंवृत	इ - ए	दिए, लिए, पिए
9. अर्द्ध संवृत - विवृत	ओ - आ	सोया, रोया
10. अर्द्ध संवृत - विवृत	ए - आ	खेया, सेया
11. अर्द्धविवृत - विवृत	अ - आ	गया, नया
12. संवृत - विवृत	इ - आ	दिया, लिया, पिया
13. विवृत - विवृत	आ - आ	आया, पाया, लाया

- "व" -

1. विवृत - संवृत	आ - ऊ	दिखाऊ, बिकाऊ
2. अर्ध संवृत - अर्ध संवृत	ए - ओ	खेओ
3. संवृत - विवृत	उ - आ	हुआ, दुआ, जुआ

4. संवृत - अर्द्ध संवृत उ - ए हुए, पुए

5. अर्ध विवृत - विवृत औ - आ कौआ ।

नासिक्य व्यंजन

अपने सीमित अर्थ में नासिक्य, आश्रित नासिक्य व्यंजन है । उच्चारण संबंधी अभिलक्षणों में ये स्वतंत्र होते है । हिन्दी में अनाश्रित नासिक्य व्यंजन मूलतः तीन है - न्, म् और ण्[7] । इन तीनों को व्यतिरेकी वितरण में देखा जा सकता है - कण - कन, कोण - कोन, लवण - लवन । हिन्दी ध्वनियों के विकास के संदर्भ में यह संकेत दिया जाता है कि म् और न् के अब महाप्राण रूप "म्ह" और "न्ह" भी मिलने लगे है । कुछ स्थितियों में इनके व्यतिरेकी युग्म भी देखे जा सकते है । अपने सीमित प्रयोग के बावजूद न्ह, म्ह भी स्वनिम है ।

कुमार - कुम्हार, कान - कान्ह

हिन्दी में नासिक्य व्यंजन पाँच है । ङ, ञ, ण, न, म । इनमें "ण" का प्रयोग न और म की तुलना में सीमित है । कुछ लोग "ण" के स्थान पर "न" का प्रयोग करते है । प्रमुख रूप से उच्चारण के संदर्भ में । जैसे - कण् - कन्, प्राण् - प्रान् । "ण" शब्दादि में नहीं आता । जबकि "न" म आते है । "ण" प्रकारान्तर से तद्भव, देशज, तथा विदेशी भाषाओं से आगत शब्दों में नहीं आता ; किन्तु न, म आते है । बोलचाल तथा काव्य भाषा में "ण" के स्थान पर "न" प्रयोग खूब होता है - जैसे गुन, प्रान, चरन अर्थात् "न" "ण" का मुक्त परिवर्तन है । "ञ "केवल च, छ, ज , झ के पूर्व संयुक्त व्यंजन के प्रथम सदस्य के रूप में आता है -

जैसे - चंचल, वांछा, जंगल, संझा । किन्तु "न" कभी कभी इनके पूर्व नहीं आता है जहाँ "न" आता है वहाँ "ञ" नहीं आता है । जहाँ "ञ" आता है वहाँ "न" नहीं आता ।

ङ केवल क, ख, ग, घ के पूर्व संयुक्त व्यंजन के प्रथम सदस्य के रूप में आता है, अंक, पंखा, तंगा, जंघा - वाङ्मय, पराङ्मुख- अपवाद है । जहाँ ङ आती है वहाँ "न" नहीं आता तथा जहाँ ङ नहीं आता ।

अनुस्वार

अनुस्वार उन नासिक्य व्यंजन ध्वनियों के वर्ग को कहते है जो अपनी उच्चारणात्मक प्रकृति में अपने परिवेश पर आश्रित होती है । स्वनिमिक व्यवस्था के संदर्भ में इनकी प्रकृति आर्की-स्वनिम की होती है । देवनागरी लिपि में अनुस्वार को बिन्दु (ं) द्वारा संकेतित करने का विधान है । यह नासिक्य व्यंजनों के स्थान पर आनेवाली ध्वनि इकाई है ।

ङ, ञ, ण, न, म के वर्ग को अनुस्वार नहीं कहा जा सकता क्योंकि "ञ" को छोडकर शेष ध्वनियाँ जहाँ आती है वहाँ सर्वत्र अनुस्वार का प्रयोग नहीं किया जा सकता । उदाहरण के लिए वाङ्मय, पराङ्मुख, नाम, बना, सुन, गणता, गुण, महान, समान आदि में नासिक्य व्यंजनों के स्थान पर अनुस्वार नहीं आ सकता ।

अनुस्वार संयुक्त व्यंजन के प्रथम सदस्य के रूप में - क, ख, ग, घ के पूर्व "ङ" के स्थान पर - जैसे - शंका । च, छ, ज, झ के पूर्व "ञ" के स्थान पर - जैसे चंचल । ट, ठ, ड, ढ के पूर्व "ण" के स्थान पर - जैसे - पंडित । त, थ, द, ध के पूर्व "न" के स्थान पर - जैसे - संत । प, फ, ब, भ के पूर्व "म" के स्थान पर - जैसे - स्वयं आ सकता है ।

अनुस्वार कुछ ऐसी स्थितियों में भी आ सकता है जहाँ और कोई नासिक्य व्यंजन नहीं आता - जैसे - संयम, संरचना, संलाप, संवेदना संसार, संहार । यों इन सब के साथ भी अनुस्वार का क्रमशः य, र, ल, व, स, श, ह के स्थानानुरूप ही उच्चारण होता है ।

अनुस्वार की शब्दांत वाली स्थिति -(स्वयं, अहं) को छोडकर इसके उच्चारण का परवर्ती व्यंजन पर आधारित होना रूपिम के भीतर (अंक, पंख, चंचल) भी मिलता है तथा रूपिम सीमा पर भी । जैसे

सं - सम् - कलन -संकलन

" " - गीत - संगीत

" " - चित - संचित

" " - जय - संजय

अनुस्वार का अर्थ होता है - जो स्वर का अनुसरण करे अर्थात् स्वर के बाद आए । यह हमेशा स्वर के बाद ही आता है । शब्दांत में हमेशा "म" होता है जैसे अहं, स्वयं । इसी प्रकार कुछ स्थितियों में अनुस्वार का उच्चारण नासिक्य व्यंजन जैसा होता है । ऐसे नासिक्य

व्यंजन पांच है । अनुस्वार विशेष रूप से दो संदर्भों में आता है - §1§ शब्द के बीच स्वर और व्यंजन के बीच - जैसे पंडित, संदेश §2§ शब्दांत में स्वर के बाद जैसे - स्वयं, अहं ।

महाप्राण व्यंजन

हिन्दी के महाप्राण व्यंजन मूल व्यंजन है । हिन्दी में महाप्राण व्यंजन प्रायः इन स्थितियों में आते है, जिनमें व्यंजन गुच्छ नहीं आते ; अपितु केवल मूल व्यंजन ही आते हैं । इस तरह ध्वनियों का वितरण इस बात को स्पष्ट कर देता है कि महाप्राण ध्वनियों को गुच्छ नहीं माना जा सकता है । उदाहरण के लिए मध्य स्थिति में महाप्राण व्यंजन उसी स्थिति में आते है - जहाँ अल्पप्राण आते हैं -

बकना	-	रखना
कूटना	-	रूठना
लडना	-	पढना
कतना	-	कथना
काँपना	-	हाँफना

जैसी स्थितियों में "न" के पूर्व संयुक्त व्यंजन कभी नहीं आते ; केवल मूल व्यंजन ही आते है । अतः महाप्राणों को स्पर्श + प्राणत्व का योग अर्थात् संयुक्त व्यंजन नहीं माना जा सकता । उन्हें क्, प्, ट्, त्, प् आदि की तरह मूल व्यंजन ही मानना पडेगा ।

हिन्दी धातुओं के अन्त में संयुक्त व्यंजन नहीं आते, किन्तु अल्पप्राण और महाप्राण व्यंजन आते है - जैसे रोक् - सोख । इसका अर्थ यह है कि महाप्राण व्यंजन धातुओं में स्थिति या वितरण की दृष्टि से एक स्वनिम के समान है ।

संयुक्त व्यंजन या व्यंजन गुच्छ के दोनों सदस्य जैसे - "क्य" में "क्" और "य" स्वतंत्र रूप से उच्चरित हो सकते है । किन्तु महाप्राण व्यंजन के केवल प्रथम सदस्य अल्पप्राण व्यंजन का ही स्वतंत्र उच्चारण हो सकता है ; महाप्राणत्व का नहीं । अतः इसे गुच्छ या दो का योग नहीं माना जा सकता ।

अल्पप्राण तथा महाप्राण के पूर्ववर्ती स्वर में मात्रा का अन्तर नहीं पडता, किन्तु संयुक्त व्यंजन या व्यंजन गुच्छ के पूर्ववर्ती स्वर की मात्रा अपेक्षाकृत बडी होती है - नत -नथ्, चक - चख, रूक - रूख । किन्तु सत - सत्य - सथ, पक - पक्व - पख, कता - कथा - कत्था, इस तरह पूर्ववर्ती स्वर की मात्रा की दृष्टि से भी महाप्राण व्यंजन मूल अल्पप्राण के समान है, व्यंजन गुच्छ के समान नहीं ।

उच्चारण के स्तर पर महाप्राण व्यंजन अल्पप्राण की तरह ही एक यत्न से उच्चरित होते है । संयुक्त व्यंजनों की तरह एकाधिक से नहीं । सामान्य संयुक्त व्यंजनों में एक से अधिक श्वास-प्रवाह अपेक्षित होता है, किन्तु महाप्राण व्यंजनों में ऐसा नहीं होता । उनमें अल्पप्राण की तरह ही एक श्वास प्रवाह की अपेक्षा होती है । हिन्दी स्वनिमों की स्वनिमिक व्यवस्था में महाप्राण व्यंजनों को मूल व्यंजन मानना ही उचित है ।

<u>अक्षर</u>

अक्षर शब्द के अन्तर्गत उन ध्वनि समूहों की छोटी-सी-छोटी इकाई को कहते है जिनका उच्चारण एक साथ हो तथा जिन्हें करके

बोलने पर उसका कोई अर्थ न प्रकट हो ।[8] "अक्षर" शब्द का प्रयोग सामान्य तौर पर वर्ण चिह्न के लिए चलता है । अक्षर एक ध्वनि या एकाधिक ध्वनियों की वह इकाई है जिसका उच्चारण एक झटके में होता है । इसमें एक शीर्ष अवश्य होता है । इसके पहले या बाद में एक या एकाधिक ध्वनियाँ गह्वर रूप में आ भी सकते है और नहीं भी । उदाहरण के लिए हिन्दी "आ", कम, क्रम, आम आदि शब्दों का उच्चारण करें तो हम पायेंगे कि इन सभी का उच्चारण एक-एक झटके से होता है । "आ" में केवल स्वर अर्थात् "शीर्ष" है "काम" में "आ" स्वर (शीर्ष) के पूर्व "क" तथा बाद में "म" व्यंजन (गह्वर) है ; "क्रम" में "अ" स्वर के पूर्व दो व्यंजन - क, र - है "आम" में "आ" स्वर के पूर्व कोई व्यंजन नहीं है - केवल बाद में एक व्यंजन "म" है "आम्र" में "आ" स्वर के बाद दो व्यंजन - म, र - है तथा व्याप्त में "आ" स्वर के पहले तथा बाद में दो - दो व्यंजन है । ये सभी शब्द एक-एक अक्षर है । यह भी स्पष्ट है कि हर अक्षर में एक शीर्ष अवश्य होता है; पूर्व और पर गह्वर हो भी सकते है और नहीं भी ।

अक्षर उच्चारण के स्तर स्वनिम से उच्चतर इकाई है । यह एक स्वनिम का भी हो सकता है - जैसे "आ" तथा एकाधिक स्वनिम का भी ।

अक्षर स्वनिम से उच्चतर इकाई है । किन्तु शब्द या रूप से छोटी इकाई है, क्योंकि यद्यपि एक अक्षर के भी शब्द - क्रम, मेज़, पान - तथा रूप - ना, दो, पी - होते है । किन्तु ऐसे भी बहुत सारे शब्द - व्यापारी, पिता, भाई, तथा रूप बैठिए, उठो, पढना - होते है, जिनमें एकाधिक अक्षर होते है ।

"शीर्ष"

अक्षर का शीर्ष सबसे मुखर भाग होता है । यह प्राय: स्वर होता है । शाम, इर्द, मोर, सुख में क्रमशः आ, ई, ओ, उ - शीर्ष है । अंग्रेज़ी में Bottle में "L" Button में "n" तथा Bottom में "m" की यही स्थिति है । हिन्दी में केवल स्वर ही अक्षर के केन्द्रक होते है तथा व्यंजन गह्वर ।

शब्द या रूप में जितने अक्षर शीर्ष होते है उतने ही अक्षर भी होते है, जैसे "आई" में दो अक्षर अतः दो केन्द्रक ; दो अक्षर; तो बैठाइए में चलाइए में चार, तो भगाइए में पाँच ।

एकाधिक अक्षर के शब्दों में हर अक्षर के बीच छोटा सा मौन होता है यह मौन दो शब्दों के बीच के मौन से छोटा होता है । अक्षर की कम से कम एक मात्रा होती है और अधिक से तीन । इस दृष्टि से अक्षर चार प्रकार के हो सकते है ।

1. मात्रा - केन्द्रक - आ
2. पूर्व गह्वर + केन्द्रक - जो, तो, तो, दो
3. केन्द्रक + पर गह्वर - आज, ईख, एक
4. पूर्व गह्वर + केन्द्रक + परगह्वर - काम, तीन, शोर

अक्षर के और भी दो भेद है -

शीर्षान्त और गह्वरान्त

शीर्षान्त - जैसे - आ । जिसके अन्त में गह्वर हो उसे गह्वरान्त कहते है - जैसे दम, रोज़, नाम, ईद, अब ।

"शीर्ष"

अक्षर का शीर्ष सबसे मुखर भाग होता है । यह प्राय: स्वर होता है । शाम, ईद, मोर, सुख में क्रमश: आ, ई, ओ, उ - शीर्ष है । अंग्रेज़ी में Bottle में "L" Button में "n" तथा Bottom में "m" की यही स्थिति है । हिन्दी में केवल स्वर ही अक्षर के केन्द्रक होते है तथा व्यंजन गह्वर ।

शब्द या रूप में जितने अक्षर शीर्ष होते है उतने ही अक्षर भी होते है, जैसे "आई" में दो अक्षर अत: दो केन्द्रक ; दो अक्षर; तो बैठाइए में चलाइए में चार, तो भगाइए में पाँच ।

एकाधिक अक्षर के शब्दों में हर अक्षर के बीच छोटा सा मौन होता है यह मौन दो शब्दों के बीच के मौन से छोटा होता है । अक्षर की कम से कम एक मात्रा होती है और अधिक से तीन । इस दृष्टि से अक्षर चार प्रकार के हो सकते है ।

1. मात्रा - केन्द्रक - आ
2. पूर्व गह्वर + केन्द्रक - जो, तो, तो, दो
3. केन्द्रक + पर गह्वर - आज, ईख, एक
4. पूर्व गह्वर + केन्द्रक + परगह्वर - काम, तीन, शोर

अक्षर के और भी दो भेद है -

शीर्षान्त और गह्वरान्त

शीर्षान्त - जैसे - आ । जिसके अन्त में गह्वर हो उसे गह्वरान्त कहते है - जैसे दम, रोज़, नाम, ईद, अब ।

आक्षरिक संरचना का संबंध उच्चारण से भी है । इस दृष्टि से किसी भाषा के शब्दों को दो वर्गों में रखा जा सकता है - एकाक्षरी शब्द और अनेकाक्षरी शब्द । एकाक्षरी शब्दों के उच्चारण में केवल एक बात ध्यान देने की है कि अक्षर का शीर्ष अधिक मुखर होता है । अक्षर के भीतर बलाघात हमेशा शीर्ष पर ही होता है । अतः उसका उच्चारण कुछ मुखर होना चाहिए । अनेकाक्षरी शब्दों के उच्चारण के समय जहाँ आक्षरिक विभाजन होता है, वहाँ वक्ता थोड़ी देर के लिए रुकता है या अल्पकालिक संगम होता है । उस मौन या संगम के अभाव में उच्चारण में अपेक्षित सहजता नहीं आती - जैसे, पक्का - पक्-का ।

यह ध्यान देने की बात है कि हर अक्षर पर बलाघात होता है किन्तु प्रायः एक पर अधिक होता है तो दूसरे पर कम । हिन्दी बलाघात प्रधान भाषा नहीं है अतः उसमें बलाघात बहुत महत्वपूर्ण तो नहीं है । किन्तु शुद्ध और सहज उच्चारण के लिए कम से कम अनेकाक्षरी शब्दों में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि मुख्य बलाघात किस पर है । उदाहरण के लिए "अप्रामाणिकता" शब्द का उच्चारण होगा - अप + प्रा + मा + णिक् + ता 5 §अक्षर§ तथा इसमें बलाघात होगा णिक् अक्षर पर ।

हिन्दी के खंड्येतर स्वनिम

§1§ अनुतान -

हिन्दी के उच्चारणों में सुर के विभिन्न तल तो मिलते है, पर शब्द एक भी ऐसा नहीं है, जिसके सुर निश्चित हो, अर्थात् मात्र शब्द स्तर पर हिन्दी में सुर की सार्थकता नहीं है [9] । अनुतान के द्वारा

वाक्य या वाक्यांश को एक विशेष अर्थ प्रदान करता है ।

उदाहरण के लिए -

राम गया ।

राम गया !

राम गया ?

§2§ संगम

यह औच्चारणिक प्रक्रिया में होनेवाली आयाजित रुकावट है । एक स्वनिम के उच्चारण के बाद दूसरे स्वनिम तक आने में लगनेवाले समय ही संगम है । नल्की - नल्-की ।

मौन या विराम काल §संगम§ की सीमा के आधार पर हिन्दी में इसके तीन भेद है -

§1§ अत्यल्पकालिक संगम - इसका प्रयोग हिन्दी में मुख्यत: दो स्थानों पर मिलता है ।

§क§ शब्द भीतर दो स्वरों ; दो व्यंजनों ; व्यंजन+ स्वर तथा स्वर + व्यंजन एवं एक अक्षर + दूसरे अक्षर के बीच आता है जैसे - इनकार

§ख§ दो शब्दों के बीच अर्थ की स्पष्टता बनाए रखने के लिए उच्चारण में संगम लाते है - जैसे - सिरका - सिर - का ।

§2§ अल्पकालिक संगम - इसमें संगम लंबा होता है । कभी-कभी वाक्य में कुछ अर्थ-वर्ण होते है - जैसे - उद्देश्य, विधेय ; पदबंध और उपवाक्य ।

उदा:- यह + लडका अच्छा है, यह लडका+ अच्छा है ।

§3§ दीर्घ कालिक संगम - इसके द्वारा वाक्य के अर्थ की स्पष्ट तथा सांस लेना या प्राय: दोनों होता है ।

हिन्दी में संगम एक स्वनिम है क्योंकि संगम के कारण अर्थ में अन्तर आ जाता है । जैसे - खाली - खा-ली, पाली - पा-ली, नदी - न-दी । वह घोडा गाडी खींचता है । वह घोडा गाडी खींचता है ।

अनुनासिकता -

अनुनासिकता नासिक्य रंजित स्वर का अभिलक्षण है । यह न तो स्वर है न व्यंजन । हिन्दी में सभी स्वर अनुनासिक होते है - जैसे हंसना, सांस, बिंधना, सींचना ।

हिन्दी में यदि शिरोरेखा के ऊपर कोई मात्रा नहीं तभी अनुनासिकता का चिह्न चन्द्र बिन्दु (ँ) लगाते है । किन्तु यदि शिरोरेखा के ऊपर मात्रा होता चन्द्र बिन्दु के स्थान पर भी सुविधा के लिए बिन्दु ही लगाते है - जैसे में, मैं, हैं । सबल अनुनासिकता केवल नासिक्य के बाद सुनी जाती है ; और यह सर्वदा ध्वनिमीय होती है । सामान्य अनुनासिकता तब ध्वनिमीय होती है, जब उसके अगल - बगल कोई नासिक्य नहीं होता जैसे ईंटँ - ईंट , पाँच - पांच ।[10] अनुनासिकता की स्थिति तीन प्रकार से काम करती है -

(1) व्याकरणिक - इस रूप से अनुनासिकता बहुवचन का चिह्न है -

संज्ञा - चिडिया - चिडियाँ

क्रिया - है - हैं

जाती - जातीं

(2) स्वनिमिक - इस रूप में यह स्वनिम या स्वनिमिक है -

सवार - संवार, सास - सांस, पूछ - पूँछ ।

§3§ स्वनिक - इस रूप में अनुनासिकता मात्र स्वनिक होती है और यह पास के नासिक्य व्यंजन के प्रभाव से होती है । नाना - नाँनाँ, नाम - नाँम, मामा - माँमा इन शब्दों का उच्चारण करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि सम्बद्ध स्वर यद्यपि मौखिक है किन्तु उच्चारण के स्तर पर वे नासिक्य व्यंजनों के प्रभाव के कारण अनुनासिक हो गए हैं ।

बलाघात -

हिन्दी में बलाघात का अर्थ अधिकांशतः यह रहता है कि उसके द्वारा किसी कोशगत इकाई के सामान्य अर्थ में कोई अर्थ संबंधी वैशिष्ट्य भर दिया जाता है ।[11]

§1§ ध्वनि बलाघात

एकाधिक ध्वनियों से युक्त अक्षर में एक बलाघातित ध्वनि होती है - जैसे "घास" शब्द में एक ही अक्षर है जिसमें घ आ स् तीन ध्वनियाँ है स्पष्ट ही इन तीनों में "आ" बलाघात युक्त है ।

§2§ अक्षर बलाघात

"गाया" शब्द में मुख्य बलाघात होता है - "गा" अक्षर में और गौण बलाघात "या" में ।

§3§ शब्द बलाघात

§1§ मुझे एक खिडकी वाला मकान चाहिए ।

§2§ मुझे एक खिडकी वाला मकान चाहिए ।

मलयालम के स्वर स्वनिम और उनका वितरण

अ - यह अर्ध विवृत निम्न मध्य अवृत्तमुखी ह्रस्व स्वर है । मलयालम में इसके तीनों स्थितियों में प्रयुक्त रूप उपलब्ध है ।

आदि	मध्य	अंत
अम्म - माँ	वळञ्ञ - टेढा	कट - दूकान
अच्छन - पिता	उलञ्ञ - थका	पट - सेना ।

आ - यह अवृत्तमुखी विवृत पश्च स्वर है । मात्रा के अनुसार दीर्घ है । मलयालम में इसके तीनों रूप प्रयुक्त हैं । लेकिन अंतिम रूप प्रकारान्तर से कम है ।

आदि	मध्य	अंत
आशा - इच्छा	कालम् - काल	पाला - स्थान
आद्यम - पहला	पालम् - पुल	- - -

इ - यह संवृत अवृत्तमुखी उच्चतर अग्र स्वर है । संवृतता की दृष्टि से इसका स्थान "ई" से कुछ नीचे है । मात्रा के अनुसार ह्रस्व स्वर है । मलयालम में इसके तीनों रूप मिलते है ।

आदि	मध्य	अंत
इत् - यह	चिरि - हंसना	सालि - नाम
इण् - साथी	पटिकल - सीढ़ियाँ	लालि - नाम

ई - यह अवृत्तमुखी संवृत अग्र स्वर है । मात्रा की दृष्टि से दीर्घ है । मलयालम के इनके आदि और मध्य में प्रयुक्त रूप है - अंतिम रूप नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
ईणम - नाद	कुटीरम्-कुटीर	×
ईश्वरी - नाम	कीर्ति - यश	×

उ - यह संवृत वृत्तमुखी ह्रस्व पश्च स्वर है । मात्रा की दृष्टि से ह्रस्व है । मलयालम में इसके तीनों रूप मिलते हैं ।

आदि	मध्य	अंत
उम - उमा	ऑरुम-एकता	कोट्टुत्तु - दिया
उण्म - उजियाला	पेरुम - यश	ऍडुत्तु - ले लिया ।

ऊ - यह ओष्ठ्य संवृत दीर्घ पश्च वृत्तमुखी स्वर है । मात्रा की दृष्टि से दीर्घ है । आदि और मध्य में प्रयुक्त होता है अंतिम रूप प्राय: नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
ऊञ्ञाल - झूला	आञ्ञूल - एक कटा	x
ऊम - गूँगा	कटिञ्ञूल - पहला बच्चा	x

ऍ - यह मध्य अग्र अवृत्त मुखी अग्र स्वर है । मात्रा की दृष्टि से ह्रस्व है । इसका आदि मध्यांत में प्रयोग होता है ।

आदि	मध्य	अंत
ऍत्र - कितना	तॆरुवु - गली	अवनॆ - उसे
ऍन्नु - किस दिन	तॆण्ड - बदमाश	अवळॆ - उसे (स्त्री)

ए - यह अर्ध संवृत अवृत्त मुखी अग्र स्वर है मात्रा की दृष्टि से दीर्घ है । इसका प्रयोग आदि और मध्य में होता है । अंतिम रूप प्राय: नहीं मिलता है ।

आदि	मध्य	अंत
एतु - कौन सा	केट्टु - सुना	x
एलम - इलायची	तेन - मधु	x

ऐ - इसका स्थान अर्ध विवृत अवृत्त मुखी अग्रस्वर के पीछे है ।

[illegible] होता है । [illegible] -

[illegible] - [illegible] [illegible] - पैपिल[illegible] [illegible] ।

आदि	मध्य	अंत
ऐश्वर्यम - ऐश्वर्य	सैनिकन - सैनिक	कै - हाथ
ऐम्पत - पच्चास	सैन्यम् - सेना	

ऑ - यह मध्य वृत्त मुखी पश्च स्वर है । मात्रा की दृष्टि से ह्रस्व है । आदि मध्यांत में प्रयुक्त होता है ।

आदि	मध्य	अंत
ऑन्नु - एक	तॉष़ुल - प्रणाम	वन्नॉ - आया ?
ऑरुम - एकता	कॉट्टुत्तु - दिया	पोयॉ - गया ?

ओ - यह अर्ध संवृत वृत्तमुखी पश्च स्वर है । मात्रा की दृष्टि से दीर्घ है । आदि और मध्य में प्रयुक्त रूप है । अंतिम रूप नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
ओणम् - ओणम	कोलम - गुड़िया	×
ओल - नारियल के पत्ता	जोलि - काम	×

औ - यह अर्ध विवृत वृत्तमुखी स्वर है । पश्चस्वर के आगे है । किन्तु "ओ" के जैसे नहीं है । आदि और मध्य में प्रयुक्त रूप है । अंतिम रूप नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
औन्नत्यम्-उन्नति	कौशलम - कौशल	×
औत्सुक्यम-जिज्ञासा	कौरवर - कौरव	×

संयुक्त स्वर - एक स्वर के बाद दूसरे स्वर की आवृत्ति से संयुक्त स्वर बनता है । लेकिन मलयालम में संयुक्त स्वर बहुत कम है । संस्कृत शब्दों में यत्र तत्र मिलता है - कौरव, गौरव, "औ" । मलयालम के - "कै" - हाथ, तै - पौधा, पैय - गाय, मेय - शरीर जैसे शब्दों में "य" पर श्रुति होने के कारण संयुक्त स्वर केवल अकार बन जाता है ।

मलयालम स्वरों का मानस्वरों से संबंध [12]

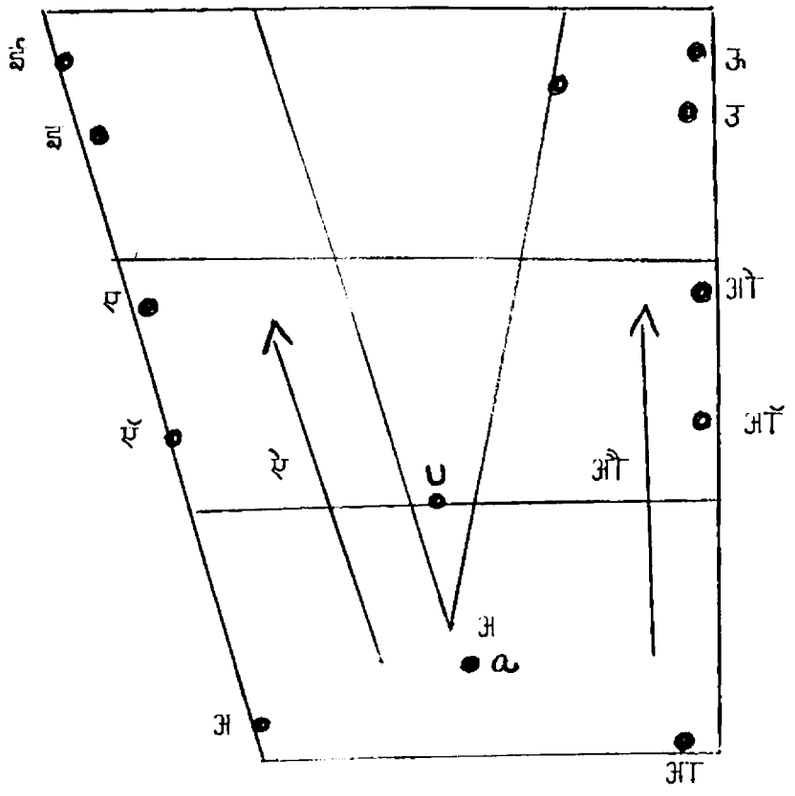

मलयालम के व्यंजन स्वनिम और उनका वितरण

क - यह कंठ्य अल्पप्राण अघोष स्पर्श व्यंजन है ।[13] मलयालम में इसके आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप मिलता है ।

आदि	मध्य	अंत
कलम - बर्तन	अकत्तु - अन्दर	वक - अपना
करि - सब्जी	पकरम् - बदले	तुक - दाम

ख - यह कंठ्य महाप्राण अघोष कोमल तालव्य स्पर्श व्यंजन है । मलयालम इसके आदि और मध्य में प्रयुक्त रूप है । अंतिम रूप नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
खरम - धातु	नखम - नाखून	×
ख्याति - यश	मुखम् - मुख	×

ग - यह सघोष कोमल तालव्य स्पर्श व्यंजन है । इसका आदि और मध्य में प्रयुक्त रूप है । अंतिम रूप नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
गमनं - जाना	वेगम् - जल्दी	×
गौरी - गौरी	भाग्यम् - भाग्य	×

घ - यह सघोष महाप्राण स्पर्श व्यंजन है । मलयालम में इसका प्रयोग बहुत कम है । केवल मध्य में प्रयुक्त रूप मिलता है - मेघम् - मेघ

च - यह अघोष अल्पप्राण तालव्य स्पर्श व्यंजन है । इसका आदि और मध्य में प्रयुक्त रूप है । लेकिन अंतिम रूप बहुत कम है ।

आदि	मध्य	अंत
चमयं - आभूषण	अरयन - राजा	परिच - ढाल
चारम् - राख	परिचय - जानना	×

छ - यह अघोष महाप्राण तालव्य स्पर्श व्यंजन है । मलयालम में इसका आदि और मध्य रूप मिलता है । अंतिम रूप नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
छलं - निश्चल	अच्छन - पिता	×
छाय - छाया	मूर्च्छिच्चु - बेहोश हो गया	×

ज - यह सघोष अल्पप्राण तालव्य स्पर्श संघर्षी व्यंजन है । इसका आदि मध्यांत में इनका प्रयोग होता है ।

आदि	मध्य	अंत
जलम् - जल	गजम् - हाथी	गिरिज - गिरिजा
जाति - धर्म	अजम् - बकरी	जलज - जलजा

झ - यह सघोष महाप्राण स्पर्श व्यंजन है । इसका केवल आदि में प्रयुक्त रूप है । मध्य और अंतिम रूप नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
झषम - मत्स्य	×	×
झटुति - जल्दी	×	×

ट - यह अघोष मूर्धन्य स्पर्श व्यंजन है । मलयालम में इसका मध्य और अंत में प्रयुक्त रूप है । शब्दादि में प्रयुक्त रूप नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
×	कटकम - चूड़ी	अट - पकवान
×	कुटकल - छतरियाँ	पिट - मुर्गी

ठ - यह मूर्धन्य अघोष महाप्राण स्पर्श व्यंजन है । मलयालम में इनका शब्दादि में प्रयोग नहीं है । मध्य और अंत में प्रयुक्त रूप है ।

आदि	मध्य	अंत
×	पाठम - पाठ	प्रतिष्ठ - प्रतिष्ठा
×	शाठ्यम - शठता	×

ढ़ – इसके उच्चारण में हवा अधिक निकलती है । यह सघोष महाप्राण स्पर्श व्यंजन है । मलयालम में इसका केवल आदि रूप है लेकिन मध्य और अंतिम रूप नहीं ।

आदि	मध्य	अंत
ढषि – ढब्बा	×	×
[redacted] – [redacted]	×	×

त – यह दन्त्य स्पर्श अघोष अल्पप्राण व्यंजन है । इसका प्रयोग आदि मध्यांत में होता है ।

आदि	मध्य	अंत
तन्नु – दिया	मति – बस	अत् – वह
तातन – पिता	मतम् – धर्म	इत – यह

थ – यह दन्त्य महाप्राण अघोष स्पर्श व्यंजन है । इसका मध्य में प्रयुक्त रूप उपलब्ध है । शब्दादि में प्रयोग नहीं है । शब्दांत में प्रकारान्तर से कम है ।

आदि	मध्य	अंत
×	रथम – रथ	कथ – कथा
×	पथ्यम – पथ्य	×

द – यह अल्पप्राण सघोष दन्त्य व्यंजन है । इसका प्रयोग आदि और मध्य में होता है । अंतिम रूप कम है ।

आदि	मध्य	अंत
दय – दया	मद्य – दारू	गद् – गदा
दीनं – बीमारी	उदयम् – उदय	×

ध – इसके उच्चारण में हवा अधिक निकलती है और स्वर तंत्रियों में कंपन होता है । यह सघोष महाप्राण दन्त्य स्पर्श व्यंजन है । इसका प्रयोग

आदि और मध्य में होता है । अंतिम रूप नहीं ।

आदि	मध्य	अंत
धनम् - धन	विधि - तरीका	×
धवलम् - सफेद	सविधम् - समीप	×

प - यह अघोष द्वयोष्ठ्य स्पर्श व्यंजन है । इसका प्रयोग आदि और मध्य में होता है अंतिम रूप नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
पाल - दूध	अपायम् - खतरा	×
पालम - पुल	उपकारम् - उपकार	×

फ - यह द्वयोष्ठ्य महाप्राण अघोष स्पर्श व्यंजन है । मलयालम में इसका प्रयोग आदि और मध्य में होता है । अंतिम रूप नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
फलम् - फल	कफम् - कफ	×
फालम् - हार	रेफम् - रेफ	×

ब - यह द्वयोष्ठ्य अल्पप्राण सघोष स्पर्श व्यंजन है । मलयालम में इसका आदि और मध्य में प्रयुक्त रूप है । अंतिम रूप नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
बलम् - बल	शबरि - शबरी	×
बालन् - बाल	अबल् - अबला	×

भ - यह सघोष महाप्राण द्वयोष्ठ्य स्पर्श व्यंजन है । इसका आदि और मध्य रूप उपलब्ध है । अंतिम रूप नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
भारम् - भार	आभरणम्-आभूषण	×
भाष - भाषा	संभारम् - छाछ	×

अनुनासिक व्यंजन

ङ - यह कोमल तालव्यानुनासिक व्यंजन है । मलयालम में इसका मध्य और अंतिम रूप का प्रयोग है । शब्दादि में इसका प्रयोग नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
×	पेङ्ङल - बहिन	माङ - आम
×	ङ्ङल - हम	तेङ् - नारियल का पेड़

ञ - यह तालव्यानुनासिक व्यंजन है । इसका प्रयोग केवल शब्दादि में होता है । मध्य और अंत में इसका प्रयोग नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
ञान - मैं	×	×
ञायर - रविवार	×	×

ण - यह मूर्धन्यानुनासिक व्यंजन है । इसका प्रयोग मध्य और अंत में होता है । आदि में इसका प्रयोग बहुत कम है ।

आदि	मध्य	अंत
×	पणम् - धन	इण - साथी
×	गणम् - गण	अण - बाँध

न - यह दन्त्यानुनासिक व्यंजन है । इसका प्रयोग शब्दादि और शब्दांत में होता है । मध्य में इसका प्रयोग नहीं होता है ।

आदि	मध्य	अंत
नल्ल - अच्छा	×	वन्नु - आया
नालु - चार	×	चेन्नु - पहुँचा

न् - यह वर्त्स्यानुनासिक व्यंजन स्वनिम है । मलयालम में इसका मध्य और अंतिम रूप प्रयुक्त होता है । आदि में प्रयुक्त रूप नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
x	अवनाल - उससे	अन्न - नाम
x	एन्नाल - मुझसे	ञान् - मैं

म - यह ओष्ठ्यानुनासिक व्यंजन है । इसका आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप है ।

आदि	मध्य	अंत
मरम - पेड	अमरम् - अमर	उम - उमा
मतम् - धर्म	पामरन् - दरिद्र	इम - भृकुटि

ट्ट - यह वर्त्स्य स्पर्श व्यंजन है । मलयालम में इसका मध्य और अंत में प्रयुक्त रूप है । इसका प्रयोग शब्दादि में नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
x	अवट्टकल - वे लोग	चिट्ट - माँ की छोटी बहिन
x	कट्टकल - बाँधे हुए धान्य	पट्ट - कर्ज

ल - यह वर्त्स्य पार्श्विक व्यंजन है । इसका आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप है ।

आदि	मध्य	अंत
लाभम् - लाभ	कलम् - बर्तन	चिल - कुछ
लाति - लाठि	कल्पना - आशा	पल - कई

ळ - यह मूर्धन्य पार्श्विक व्यंजन है । मलयालम में इसका मध्य और अंत में प्रयुक्त रूप है । शब्दादि में प्रयुक्त रूप नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
x	कळव् - चोरी	तवळ - मेंढक
x	वळव् - टेढापन	वळ - कंकण

उत्क्षिप्त व्यंजन

र - यह दन्त्य वर्त्स्योत्क्षिप्त व्यंजन है । मलयालम में इसका आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप है ।

आदि	मध्य	अंत
रवि - रवि	आरवं - शोर	अर - आधा
रामन् - राम	अर्यकल - पीसना	पार - बाण

तालव्य संघर्षी दन्त्य वर्त्स्योत्क्षिप्त यह स्वनिम शब्दादि में शब्द मध्य में और स्वरों के बीच य कार के पूर्व आता है । रामन् - राम, अर - आधा । भार्य - पत्नी, द्रुवम् - द्रुव, ग्रामम् - ग्राम ।

ऱ - यह वर्त्स्योत्क्षिप्त व्यंजन है । इसका प्रयोग आदि मध्यांत में होता है ।

आदि	मध्य	अंत
ऱव - रवा	पऱव - तितली	अऱ - कमरा
ऱाणि - ऱानी	पऱक्कुक - उड़ना	पेरुमऱ - ढिंढोरा

संघर्षी व्यंजन - मलयालम के संघर्षी व्यंजन सघोष है ।

स - यह दन्त्य वर्त्स्य संघर्षी व्यंजन है । इसका आदि मध्यांत में प्रयोग होता है ।

आदि	मध्य	अंत
समम् - सम	कसेर - कुर्सी	शिरस - सिर
सारि - साड़ी	पंचसार - चीनी	यशस - यश

ष - यह मूर्धन्य संघर्षी व्यंजन है । इसका प्रयोग आदि मध्यांत में होता है ।

आदि	मध्य	अंत
षष्ठि - षष्ठि	मनुष्यन - मनुष्य	भाष - भाषा
षडपदम् - षडपदम्	वेषम - वेष	परिभाष - अनुवाद

श - यह तालव्य संघर्षी व्यंजन है । इसका आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप है ।

आदि	मध्य	अंत
शरि - ठीक	विशप्पु - भूख	निश - रात्री
शवम - शव	मोशम - बुरा	पश - गोंद

ह - यह कोमल तालव्य संघर्षी व्यंजन है । इसका प्रयोग शब्दादि और शब्द मध्य में होता है । अंतिम में प्रयुक्त रूप नहीं है ।[24]

आदि	मध्य	अंत
हरि - हरि	सहायम - सहायता	×
हंसम - हंस	सहायी - सहायक	×

व - यह ओष्ठ्य दन्त्य प्रवाही व्यंजन है । इसका आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप है ।

आदि	मध्य	अंत
वळरूक - बढना	अवळ - वह (स्त्री)	परव - तितली
वन्नु - आया	अवन् - वह (पु)	उरव - श्रोता

ष़ - यह सघोष मूर्धन्य प्रवाही व्यंजन है । मलयालम में इसका मध्य और अंत में प्रयुक्त रूप है । शब्दादि में प्रयुक्त रूप नहीं है ।

आदि	मध्य	अंत
×	पष़म् - केला	मष़ - बारिश
×	वष़क् - झगडा	इष़ - तन्तु

य - यह तालव्य प्रवाही व्यंजन है । मलयालम में इसका आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप है ।

आदि	मध्य	अंत
यवं - यव	अयव - ढीलापन	वाय - मुंह
यात्र - यात्रा	वयल - खेत	पाय - कोसडी

			काकल्य	कण्ठ्य	पूर्व कण्ठ्य	तालव्य	मूर्धन्य	पर वर्त्स्य	वर्त्स्य	दन्त्य	दन्तोष्ठ्य	द्वयोष्ठ्य
स्पर्श	अघोष	अल्पप्राण		क		च	ट		ट़	त		प
		महाप्राण		ख		छ	ठ			थ		फ
	सघोष	अल्पप्राण		ग		ज	ड			द		ब
		महाप्राण		घ		झ	ढ			ध		भ
अनुनासिक				ङ		ञ	ण		ऩ	न		म
अपूर्ण अवरोधी		विसर्प या अर्ध स्वर				य					व	
		पार्श्विक					ळ		ल			
		कम्पनजात या लुंठित						ऱ				
		उत्क्षिप्त					ड़		र			
अल्पप्राण संघर्षी			ह			श	ष			स		

हलन्त् व्यंजन

मलयालम में पांच हलन्त् व्यंजन है - ण्, न्, र्, ल्, ळ् है । मलयालम के प्राय: हर व्यक्ति वाचक संज्ञा - हलन्तान्त है - जैसे रामन्, कृष्णन, गोपालन । शब्दांत में यह संवृता के बिना आता है ।
उदा:- अवन् (वह), आण् (पुरुष), पेण् (स्त्री), आर् (कौन), पाल्(दूध), वाळ (छुरि) ।

संयुक्त व्यंजन - संयुक्त व्यंजन एक के बाद दूसरे के योग से आता है । और उसका संयुक्त रूप हो जाता है ।

सवर्ण द्वित्व व्यंजन -

क + क - क्क, च + च - च्च, ट + ट - ट्ट, त + त - त्त, प + प - प्प, म + म - म्म, द + द - द्द, ब + ब - ब्ब ।

अनुनासिक व्यंजन से बने द्वित्व व्यंजन

ङ + क - ङ्क, ञ + च - ञ्च, ण + क - ण्क, म + प - म्प

अन्तस्थ और अन्य व्यंजनों का योग

य + क - य्क, य + त - य्त, ष + त - ष्त, य + प - य्प, र + क - र्क । र + च + च - र्च्च, र + न + न - र्न्न, र + प + प - र्प्प, र + म + म - र्म्म ।

प्रतिवर्ण संयुक्त व्यंजन

ष + क - ष्क, ष + च - ष्च, ळ + त - ळ्त, ळ + प - ळ्प ।

स्वनिम वितरण के नियम

मलयालम में स्वनिम वितरण का स्पष्ट नियम है । "क" कार, "य" कार से प्रारंभ होने वाले शब्दों में "क" या "य" के बाद इ, ए, अ, ओ, उ इन स्वरों में कोई भी स्वर आ सकता है ।

उदा:-किट्टि - मिला, केट्टि - बांधा, कुट्टि - लडका, चिट्ट - माँ की छोटी बहन । लेकिन शब्द का आरंभ भ कार से है तो उनमें केवल अ, और उ स्वर आते है । यदि "व" कार में आरंभ होता तो केवल - अ, ए और इ आते हैं । उदा:- वन्नु - आया, वेन्नु - जीत लिया, विरल - उंगली ।

स्वनिमीय भिन्नता

भाषा में प्रयुक्त स्वनिमों के स्वभाव में भिन्नता है । वितरण में यह भिन्नता स्पष्ट होती है । इसमें एक प्रवृत्ति है निरविषमीकरण । "र" कार और "ऱ" कार मलयालम में भिन्न - भिन्न स्वनिम है । उदा:- करि - कोयला, "कऱि"- सब्जी । लेकिन शब्दांत में स्वर न जोडने पर यह भिन्नता स्पष्ट नहीं होता है । "ऱ" कार से सदृश्य एक ध्वनि सुनाई पडती है । जैसे मलऱ - फूल, कयऱ - रस्सी । इन शब्दों में स्वरों के योग से "र" कार और "ऱ" कार व्यक्त होता है । जैसे मलरिल - फूल में, कयरिल - रस्सी में । इस प्रकार विशेष संदर्भ में स्वरों की उपस्थिति से व्यक्त होनेवाला स्वनिमीय भिन्नता को निरविषमीकरण कहा जाता है । व्यंजन स्वनिम के पूर्व में "र" कार आने पर उसका भी उच्चारण "ऱ" के समान हो जाता है । उदा:- आरक् - किसको ।

स्वनिम संहिता

दीर्घ स्वर और दीर्घ व्यंजन समस्थानीय स्वनिम संहिता है । कैयिल - हाथ में, कौरवर - कौरव आदि शब्दों के ऐ और औ द्विस्वरों को "अ" कार के बाद "इ" और "उ" आने पर भिन्न स्थानीय और भिन्न धर्मों से युक्त स्वर संहिता कहा जाता है । इनमें "ऐ" अधिकांशतः मलयालम शब्दों में मिलता है । लेकिन "औ" मलयालम में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों में मिलता है ।

दीर्घ व्यंजन

"र" "ऱ" ह और ष़ के अलावा मलयालम के बाकी व्यंजन स्वनिमों के दीर्घ और ह्रस्व रूप मिलते हैं । ड, ग, स, श स्वनिमों के दीर्घ रूप प्रकारान्तर से कम है । संस्कृत से आए हुए शब्दों में यह मिलता है । दीर्घ व्यंजन मात्र शब्द मध्य में आता है ।

स्पर्श संघर्षी एवं अनुनासिक

"ष्ट", "ष्ठ", "श्च", "ष्ण" "श्न" जैसे व्यंजन युग्मों के समान समस्थानीय व्यंजन संहिता भी शब्द मध्य में ही आता है ।

देशीय शब्दों में भिन्न स्थानीय व्यंजन संहिता बहुत कम है । प्रायः यह शब्द मध्य में ही आता है । और इनके स्वनिम पार्श्विक उत्क्षिप्त स्पर्श या विरले से ही अनुनासिक स्वनिम आता है । उदा:- "ल्प", "ल्क", "र्प", "र्त", "र्ल", "र्क", "ष्त" "मच"।

संस्कृत से आए हुए शब्दों में कई प्रकार के भिन्न स्थानीय व्यंजन संहिता शब्दों के आदि और मध्य में आते हैं । उदा:- द्रवम् - द्रव, उपद्रवम् - उपद्रव, स्टेषन - स्टेशन ।

<u>अक्षर</u> - अक्षर एक या एकाधिक स्वनिमों की वह इकाई है, जिसका उच्चारण एक झटके से होता है । उदा:- (क) विवृताक्षर - पूव् - फूल, वा - आओ, पो - जाओ ।

(ख) संवृताक्षर - पाल् - दूध, वाळ - छुरि, कार् - कार, मान् - हिरण ।

मलयालम के खंड्येतर स्वनिम

खंड्येतर स्वनिमों का स्वतंत्र उच्चारण नहीं होता है ; जो अपने उच्चारण के लिए खंड्य स्वनिमों पर ही आधारित होता है ।

(1) <u>अनुतान</u>

उच्चारण के समय होनेवाले आरोह-अवरोह वाक्य या वाक्यांश को एक विशेष अर्थ प्रदान करता है ।[16] यही मलयालम में अनुतान है ।

उदा:- (1) सीतया ओडि प्पोयत् - क्या सीता भाग गयी ।

(2) सीतया ओडिप्पोयत् ? - क्या सीता भाग गयी ?

बलाघात

उच्चारण के समय कभी कभी एक शब्द पर अधिक बल दिया जाता है तो कभी दूसरे पर । किसी शब्द में एक से अधिक अक्षर हो तो उनमें कोई एक एक बलाघात युक्त होता है ।

उदा:- §1§ अप्पु मद्रासिल निन्ना वान्नत् ?
क्या अप्पु मद्रास से ही आया ?
§2§ अप्पुवा मद्रासिल निन्नु वन्नत् ?
क्या मद्रास से अप्पु ही आया ?

बलाघात के कारण इन दो वाक्यों में अर्थ-भिन्नता होती है ।

संगम

उच्चारण में होने वाली अयाचित रुकावट ही संगम है । जिससे वाक्य को एक विशेष अर्थ होता है या अर्थ भिन्नता होती है ।

उदा:- पाव कुट्टिक्क कोट्टत्तु ।
गुडिया बच्चे को दिया ।
पावकुट्टिक्क कोट्टत्तु ।
गुडिया को दिया ।

संदर्भ :-

1. हिन्दी भाषा की ध्वनि संरचना (सं) कैलाशचन्द्र भाटिया - पृ.सं.30
   संपादक भोलानाथ तिवारी
2. A short outline of Hindi Phonetics - DJORDIE KOSTIC, Page 12
3. परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन - डा.महावीर सरन जैन -
   पृ.सं. 7
4. हिन्दी भाषा की ध्वनि संरचना (सं) भोलानाथ तिवारी - शारदा मसीन -
   पृ.सं. 19
5. भाषा विज्ञान - भोलानाथ तिवारी - पृ.सं. 322
6. हिन्दी भाषा शिक्षण - भोलानाथ तिवारी, कैलाशचन्द्र भाटिया - पृ.सं. 107
7. हिन्दी भाषा का ध्वनि संरचना - रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव - पृ. 101
8. भाषा शास्त्र की रूप रेखा - डा.उदयनारायण तिवारी - पृ. 126
9. हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी - रमेशचन्द्र महरोत्रा - पृ. 260
10. हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी - रमेशचन्द्र महरोत्रा - पृ.54
11. हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी - रमेशचन्द्र महरोत्रा - पृ.242
12. मलयाळम भाषा~~ध्ययन~~ पठनङ्ङळ - डॉ.के एम प्रभाकर वार्यर, डॉ.पी.एन.रवीन्द्रन -पृ.84
13. आधुनिक भाषा शास्त्रम् - डा.के.एम.प्रभाकर वार्यर, शान्ता अगस्टिन - पृ.50
14. Cochin Dialect of Malayalam - P.Somasekharan Nair, Page 12
15. Vowel Duration in Malayalam - S. Velayudhan, Page 14.

चौथा अध्याय

हिन्दी और मलयालम के स्वनिमों का तुलनात्मक अध्ययन

हिन्दी और मलयालम के स्वनिमों का

तुलनात्मक अध्ययन

पिछले अध्यायों के अध्ययन विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ है कि हिन्दी और मलयालम के स्वनिमों में विभिन्न स्तरों पर समानता है और कुछ संदर्भों में विषमता भी । हिन्दी और मलयालम संस्कृत से काफी मात्रा में प्रभावित है । अरबी फारसी और अंग्रेज़ी का भी इस पर प्रभाव लक्षित होता है ।

जहाँ तक हिन्दी के स्वनिमों का संबंध है वे वैदिक संस्कृत से वर्तमान हिन्दी तक आते-आते हिन्दी के स्वनिमों में पर्याप्त परिवर्तन आए है । । हिन्दी के स्वनिमों के समान मलयालम के स्वनिमों में भी वर्तमान काल तक आने पर काफी परिवर्तन हुए है । विदेशी स्वनिम दोनों भाषाओं में पाए जाते हैं । जैसे - ऑ, ज़, फ़ । हिन्दी और मलयालम में संस्कृत का ऋ स्वनिम तो है केवल लिखित रूप में । इसका उच्चारण "रि, री, रु, के रूप में बदल गए है । अतः दोनों भाषाओं "ऋ" स्वनिम नहीं है । हिन्दी में स्वर स्वनिमों की संख्या दस है जबकि मलयालम में स्वर स्वनिम बारह है ।

हिन्दी के स्वर स्वनिम -

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ ।

मलयालम के स्वर स्वनिम -

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऍ, ए, ऐ, ऑ, ओ, औ ।

हिन्दी में स्वर स्वनिमों की संख्या कुल मिलाकर दस है । जबकि मलयालम में ह्रस्व ऍ, और ऑ के साथ इसकी संख्या बारह है ।

हिन्दी और मलयालम में स्वर स्वनिमों का वितरण

अ - यह स्वनिम दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होता है । दोनों में यह ह्रस्व मूल स्वर है । स्वनिम वितरण की दृष्टि से आदि मध्यांत में दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होता है । हिन्दी में "अ" का एक उपस्वर "ए" जैसा होता है, जो "ह" के पहले - (शहर, नहर, कहना) आता है । मलयालम में शब्दांत में "अ" है । जबकि हिन्दी में शब्दांत "अ" बहुत कम है ।

आ - हिन्दी और मलयालम में यह स्वनिम "अ" का दीर्घ रूप है । दोनों में इसका आदि मध्यांत में प्रयोग होता है । हिन्दी के शब्दांत में प्रयुक्त "आ" मलयालम के लिखित रूपों में नहीं है । मात्र उच्चारण में है । जैसे - मल्लिका - मल्लिक, कला- कल ।

इ - यह स्वनिम दोनों भाषाओं में अग्रस्वर है । औच्चारणिक दृष्टि से कोई भिन्नता नहीं है । दोनों में इसका आदि मध्यांत में प्रयोग है । कभी-कभी मलयालम का "इ" स्वनिम शब्दादि में "ऍ" के रूप में बदल जाता है । जैसे इल - ऍल (पत्ता), निणम - नॅणम (सून) । दोनों भाषाओं में संयुक्त व्यंजन के पूर्व में "इ" पूर्वश्रुति के रूप में आता है । जैसे स्त्री - इस्त्री, स्कूल - इस्कूल ।

ई - यह स्वनिम दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होता है । दोनों में इसका शब्दादि और शब्द मध्य में प्रयुक्त रूप है । लेकिन मलयालम में शब्दांत रूप नहीं है । दोनों भाषाओं के शब्दांत "ई" के प्रयोग में कुछ अन्तर है । हिन्दी के ई कारान्त शब्द मलयालम में इकार हो जाता है । जैसे - नारी -नारि, नदी - नदि ।

उ - यह स्वनिम दोनों भाषाओं में प्रयुक्त है । मलयालम में "उ" संवृत उकार है । दोनों में आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप है । कुछ संदर्भ में मलयालम के शब्द मध्य उकार "ऑ" कार हो जाता है । जैसे - कुटा -कॉटा (छत्तरी)

ऊ - यह दोनों भाषाओं में प्रयुक्त स्वनिम है । दोनों में इसका आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप है ।

ऍ - यह स्वनिम मात्र मलयालम में प्रयुक्त होता है । आर्य भाषाओं के मध्यकाल में यह स्वनिम प्रयुक्त होता था । लेकिन बाद में लुप्त हो गया । वर्तमान मलयालम में प्रयुक्त यह स्वनिम मूल द्रविड में प्रयुक्त होता था । मलयालम के यह मूल स्वर है और इसका आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप है । मलयालम में इससे बने कई शब्द है - जैसे - ऍंविटे - कहाँ, ऍंत्र - कितना । ऍंकार की बहुलता मलयालम की निजी विशेषता है । जैसे - रवि -रॅंवि, गणपति - गॅंणपति ।

ए - यह स्वनिम हिन्दी तथा मलयालम दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होता है । हिन्दी में यह आदि मध्यांत में प्रयुक्त है । जबकि मलयालम में केवल आदि और मध्य में प्रयुक्त है । साधारणत: शब्दांत में इसका प्रयोग बहुत कम है ।

ऐ - यह स्वनिम दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होता है । हिन्दी और मलयालम में इसका उच्चारण स्वतन्त्र रूपमें है । दोनों में आदि मध्यांत में प्रयोग होता है ।

ऑ - यह स्वनिम भी मध्यकालीन आर्य भाषा में प्रयुक्त होता था । बाद में लुप्त हो गए । वर्तमान मलयालम में यह प्रयुक्त होता है । हिन्दी में इसका प्रयोग नहीं है । मलयालम का यह मूल स्वर मूल द्रविड में प्रयुक्त होता था । मलयालम में इनका आदि मध्यांत में प्रयोग होता है । मलयालम में इससे बने कई शब्द प्रचलित है - जैसे - ऑन्नु - एक, ऑरुम - एकता ।

ओ - यह स्वनिम दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होता है । दोनों में इसका आदि मध्यांत में वितरण है ।

औ - यह स्वनिम हिन्दी और मलयालम में प्रयुक्त होता है । हिन्दी में इसका आदि मध्यांत में वितरण पूर्ण होता है । लेकिन मलयालम में केवल आदि और

मध्य में प्रयोग होता है । अंतिम रूप नहीं है । दोनों भाषाओं के संस्कृत शब्दों में यह स्वनिम बडी मात्रा में प्रयुक्त होता है ।

स्वरानुक्रम

स्वरानुक्रम आर्य परिवार की भाषाओं की अपनी विशेषता है । अतः यह प्रवृत्ति हिन्दी में पायी जाती है । लेकिन मलयालम में नहीं है । द्रविड परिवार की भाषाओं में दो स्वरों के बीच अर्धस्वर {य-व} आकर संधि हो जाती है । अतः मलयालम में स्वरानुक्रम नहीं है । हिन्दी में तीन और चार स्वरों का अनुक्रम उपलब्ध होता है । संयुक्त स्वर भी मलयालम में नहीं है लेकिन हिन्दी में उपलब्ध है ।

हिन्दी और मलयालम के व्यंजन स्वनिम

वर्तमान हिन्दी में प्रयुक्त व्यंजन स्वनिम संस्कृत से आये हैं । मलयालम के व्यंजन स्वनिम मूल द्रविड में प्रयुक्त होते थे ।[2] हिन्दी तथा मलयालम के व्यंजन स्वनिम प्रारंभ काल से आधुनिक काल तक आते-आते काफी बदल गए है ।

हिन्दी के व्यंजन स्वनिम

1. जिह्वामूलीय - ह ।
2. कोमल तालव्य - क, ख, ग, घ, ङ
3. मूर्द्धन्य - ट, ड, ठ, ढ, ण, व
4. तालव्य - च, छ, ज, झ, ञ , श, य

5. वर्त्स्य - न, ल, र,

6. दंत - त, थ, द, ध,

7. द्वयोष्ठ्य - प, फ, ब, भ, म व ।

मलयालम के व्यंजन स्वनिम

1. काकल्य - ह

2. कंठ्य - क, ख, ग, घ, ङ

3. मूर्धन्य - ट, ठ, ड, ढ, ण, ळ, ऱ, ष

4. तालव्य - च, छ, ज, झ, ञ, य, श

5. पर वर्त्स्य - ऱ ।

6. वर्त्स्य - ट्ट, न्, ल्, र ।

7. दन्त्य - त, थ, द, ध, न्, म ।

8. दंन्तोष्ठ्य - व

9. द्वयोष्ठ्य - प, फ, ब, भ, म ।

व्यंजन स्वनिमों का वितरण

क - यह स्वनिम हिन्दी और मलयालम में प्रयुक्त होता है । दोनों में इसका आदि मध्यांत में प्रयोग है । यह कंठ्य अघोष अल्पप्राण व्यंजन स्वनिम है ।

ख - यह अघोष महाप्राण व्यंजन स्वनिम है । दोनों भाषाओं में प्रयोग है । हिन्दी में इसका आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप है जबकि मलयालम शब्दादि और शब्द मध्य में प्रयुक्त रूप है । अंतिम प्रयोग नहीं है ।

ग - यह स्वनिम का दोनों भाषाओं में प्रयोग होता है । यह सघोष अल्पप्राण व्यंजन स्वनिम है । शब्द के आदि मध्यांत रूप दोनों भाषाओं में प्रयुक्त है । लेकिन मलयालम में इसका अंतिम रूप बहुत कम है ।

घ - यह स्वानिम का केवल हिन्दी में प्रयोग है । मलयालम के लिखित रूप में इसका प्रयोग हैं लेकिन उच्चरित रूप में नहीं है । मलयालम में इसका उच्चारण "ख" के आस-पास है । हिन्दी में इसका आदि मध्यांत में प्रयोग है । मलयालम के शिक्षित लोगों के उच्चारण में भी इसका सघोष महाप्राण उच्चारण बहुत कम नहीं मिलता है ।

च - यह स्वनिम दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होता है । यह तालव्य अघोष अल्पप्राण व्यंजन स्वनिम है । दोनों में इसका आदि मध्यांत में वितरण होता है । लेकिन मलयालम में इसका अंतिम रूप बहुत कम है । फिर भी एकाध शब्दों में अंतिम में प्रयुक्त स्वनिम है । जैसे परिच - ढाल ।

छ - हिन्दी और मलयालम में इसका प्रयोग होता है । दोनों में यह अघोष महाप्राण है । आदि मध्यांत में प्रयुक्त हिन्दी में है । मलयालम में इसका शब्दादि और शब्द-मध्य में प्रयुक्त रूप मिलता है लेकिन शब्दांत रूप बहुत कम है ।

ज - यह स्वनिम दोनों भाषाओं में प्रयुक्त है । यह दोनों में सघोष महाप्राण है । आदि मध्यांत में इसका प्रयोग दोनों में मिलता है । मलयालम में शब्दादि में प्रयुक्त "ज" कार "ऍ"कार से युक्त उच्चारण है - जैसे - जलम - जॅलम - जल, जॅन्मि - जन्मि - अमीर । उर्दू फारसी आदि विदेशी भाषाओं के प्रभाव के कारण इसका स्पर्श संघर्षी रूप हिन्दी में पाया जाता है । विदेशी शब्दों के "ज़" का उच्चारण मलयालम में "स" के समान होता है । ज़माना - ज़मीन ।

झ - यह स्वनिम मात्र हिन्दी में प्रयुक्त होता है । हिन्दी में इसका प्रयोग शब्द के आदि मध्यांत में होता है । यह सघोष महाप्राण व्यंजन स्वनिम है । मलयालम के लिखित रूप में इसका प्रयोग है । लेकिन उच्चारण अघोष महाप्राण के समान है ।

ट - यह हिन्दी और मलयालम में प्रयुक्त अघोष अल्पप्राण व्यंजन स्वनिम है । दोनों में इसका आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप है । मलयालम में इसका उच्चारण "ड" जैसे हो जाता है - जैसे कुट - कूड - छत्तरी, नाटकम् - नाडकम् - नाटक ।

ठ - यह दोनों भाषाओं में प्रयुक्त सघोष महाप्राण व्यंजन स्वनिम है । हिन्दी में शब्द के आदि मध्यांत में इसका प्रयोग होता है । लेकिन मलयालम में इसका शब्दांत और शब्द मध्य रूप उपलब्ध है । शब्दादि में प्रयुक्त रूप बहुत कम है ।

ड - यह स्वनिम हिन्दी और मलयालम दोनों में प्रयुक्त होता है । हिन्दी में शब्द के आदि मध्यांत में यह आता है । लेकिन मलयालम में केवल शब्दादि और शब्द मध्य में प्रयुक्त रूप है । शब्दांत में प्रयुक्त रूप बहुत कम है ।

ढ - यह स्वनिम मात्र हिन्दी में प्रयुक्त सघोष महाप्राण व्यंजन है । हिन्दी में इसके आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप है । मलयालम के लिखित रूप में सघोष महाप्राण "ढ" तो है । लेकिन उच्चारण अघोष महाप्राण "ठ" जैसा हो जाता है ।

त - यह अघोष अल्पप्राण व्यंजन स्वनिम है । हिन्दी और मलयालम में इसका आदि मध्यांत में प्रयोग होता है ।

थ - यह स्वनिम दोनों भाषाओं में प्रयुक्त अघोष महाप्राण व्यंजन है । हिन्दी में इसके आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप है । लेकिन मलयालम में शब्द मध्य और शब्दांत में इसका प्रयोग होता है । शब्दादि में प्रयुक्त रूप नहीं है ।

द - यह दोनों भाषाओं में प्रयुक्त सघोष अल्पप्राण व्यंजन स्वनिम है । हिन्दी में इसके आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप उपलब्ध है । मलयालम में शब्दादि और शब्द मध्य रूप उपलब्ध है - शब्दांत रूप बहुत कम है ।

ध - यह स्वनिम मात्र हिन्दी में प्रयुक्त अघोष, महाप्राण व्यंजन है । हिन्दी में इसका आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप उपलब्ध है । शब्दांत रूप प्रायः कम है । मलयालम के लिखित रूप में सघोष महाप्राण "ध" तो है लेकिन उच्चारण अघोष "थ" के समान है ।

प - यह स्वनिम दोनों भाषाओं में प्रयुक्त अघोष अल्पप्राण व्यंजन स्वनिम है । हिन्दी तथा मलयालम में इसका आदि-मध्यांत में प्रयुक्त रूप उपलब्ध है ।

फ - यह अघोष महाप्राण व्यंजन स्वनिम है । हिन्दी में इसका आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप है । मलयालम में इसका शब्दादि में प्रयुक्त रूप है । शब्दमध्य और शब्दांत रूप बहुत कम है । अरबी, फारसी के प्रभाव के कारण हिन्दी में इसके स्पर्श-संघर्षी रूप है । मलयालम में प्रयुक्त विदेशी शब्दों में इसका संघर्षी उच्चारण है ।

ब - यह दोनों भाषाओं में प्रयुक्त सघोष अल्पप्राण व्यंजन स्वनिम है । हिन्दी में इसका आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप है । मलयालम में इसका शब्दादि और शब्द मध्य में प्रयोग है । शब्दांत में प्रयुक्त रूप बहुत कम है ।

भ - यह दोनों भाषाओं में प्रयुक्त सघोष महाप्राण व्यंजन स्वनिम है । दोनों में इसका शब्द के आदि मध्यांत में उपलब्ध रूप है । मलयालम में अघोष महाप्राण "भ" का उच्चारण अघोष महाप्राण "फ" के रूप में होता है ।

अनुनासिक व्यंजन

ङ - यह दोनों भाषाओं में प्रयुक्त कंठ्यानुनासिक व्यंजन स्वनिम है ।

दोनों में इसका शब्दादि में प्रयुक्त रूप बहुत कम है । हिन्दी में शब्द मध्य रूप तो है । लेकिन शब्दांत में प्रयोग नहीं है । मलयालम शब्द-मध्य और शब्दांत में प्रयोग है ।

ञ - यह दोनों भाषाओं में प्रयुक्त तालव्यानुनासिक व्यंजन स्वनिम है । हिन्दी में इससे बने कई शब्द है । जैसे - वाँञ्चा, चंञ्चल । हिन्दी में केवल शब्द मध्य रूप प्रयुक्त होता है । शब्दादि और शब्दांत रूप बहुत कम है । मलयालम में यह स्वनिम शब्दादि और शब्द मध्य में प्रयुक्त होता है । शब्दांत रूप बहुत कम है ।

ण - यह दोनों भाषाओं में प्रयुक्त मूर्धन्यानुनासिक व्यंजन स्वनिम है । हिन्दी तथा मलयालम में इसका शब्द मध्य और शब्दांत में प्रयुक्त रूप है । शब्दादि में प्रयुक्त रूप दोनों में नहीं है ।

न - यह दोनों भाषाओं में प्रयुक्त वर्त्स्यानुनासिक व्यंजन स्वनिम है । हिन्दी में शब्द की तीनों स्थितियों में प्रयोग है । मलयालम में इसका शब्दादि में प्रयोग नहीं है । शब्द मध्य और शब्दांत में इसका प्रयोग होता है ।

ऩ् - यह मात्र मलयालम में प्रयुक्त दन्त्यानुनासिक व्यंजन स्वनिम है । यह शब्दादि में प्रयुक्त होता है । शब्द मध्य रूप नहीं है । शब्दांत रूप प्राय: कम है ।

म - यह दोनों भाषाओं में प्रयुक्त द्व्योष्ठ्यानुनासिक व्यंजन स्वनिम है । हिन्दी में शब्दांत "म" का पूर्ण उच्चारण नहीं है । जैसे - राम -राम्, दाम - दाम् । लेकिन मलयालम "म" का व्यंजनान्त शब्दों का "आ" से युक्त उच्चारण है । जैसे - रम - रमा, उम - उमा । लेकिन "आ" कार लिखित रूप नहीं, केवल उच्चारण में । दोनों भाषाओं में इसका आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप है ।

अर्ध स्वर

य - यह स्वनिम दोनों भाषाओं में शब्दों के आदि मध्यांत में प्रयुक्त होता है । यह अपनी प्रकृति में स्वर है किन्तु कार्य स्वर का न करके व्यंजन के गुण से युक्त है । मलयालम में दो स्वरों के बीच एक अर्ध स्वर आकर संधि हो जाती है । यह द्रविड भाषाओं की अपनी विशेषता है । अतः मलयालम में स्वरानुक्रम की प्रवृत्ति नहीं है ।

व - यह दोनों भाषाओं में प्रयुक्त स्वनिम है । दोनों में इसका आदि मध्यांत में वितरण होता है । "य" के समान "व" भी अर्धस्वर है । "य" की प्रवृत्ति "व" में भी पाई जाती है ।

लुंठित व्यंजन

र - यह दोनों भाषाओं में प्रयुक्त स्वनिम है । दोनों में आदि मध्यांत में इसका वितरण पूर्ण होता है ।

ऱ - यह स्वनिम केवल मलयालम में प्रयुक्त होता है । मलयालम में यह शब्द के आदि मध्यांत प्रयोग हैं । हिन्दी में प्रायः यह स्वनिम प्रयुक्त नहीं होता है । मलयालम में इससे बने कई शब्द है । यह वर्त्स्योक्षिप्त स्वनिम है ।

ल - यह दोनों भाषाओं में प्रयुक्त स्वनिम है । दोनों में शब्द के आदि मध्यांत में इसका प्रयोग है । दोनों में यह पार्श्विक स्वनिम है ।

श - यह हिन्दी तथा मलयालम दोनों में प्रयुक्त होता है । दोनों में इसका आदि मध्यांत में वितरण होता है । हिन्दी में "श" का उच्चारण "ष" जैसा है ।

ष - यह स्वनिम दोनों भाषाओं में है । हिन्दी में इसका आदि मध्यांत में तीन स्थितियाँ हैं । मलयालम में शब्दादि और शब्दमध्य में प्रयोग होता है । शब्दांत रूप प्रायः कम है ।

स - यह स्वनिम दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होता है । दोनों में इसका शब्द के आदि मध्यांत में प्रयुक्त रूप है ।

ह - यह दोनों भाषाओं में प्रयुक्त स्वनिम है । हिन्दी में इसका शब्द के आदि मध्यांत में प्रयोग है । लेकिन मलयालम में यह शब्दादि और शब्दमध्य में प्रयुक्त है । शब्दांत में इसका प्रयोग नहीं है ।

ळ - यह स्वनिम मात्र मलयालम में प्रयुक्त है । मलयालम में इसका शब्द मध्य और शब्दांत में प्रयुक्त रूप है । शब्दादि में प्रयोग नहीं है । संस्कृत में यह स्वनिम का प्रयोग था । बाद में लुप्त हो गया । मलयालम के यह स्वनिम मूल द्रविड में प्रयुक्त होते थे । मलयालम में इसके बने कई शब्द है । जैसे
तवळ - मेंढक ।

ष़ - यह मलयालम में प्रयुक्त स्वनिम है । हिन्दी में इसका प्रयोग नहीं है । मलयालम में इसका शब्दमध्य और शब्दांत में प्रयोग होता है । शब्दादि में इसका प्रयोग नहीं है । मलयालम के यह मूर्द्धन्य स्वनिम है ।

ट्ट - यह मलयालम का अपना स्वनिम है । मलयालम में यह वर्त्स्य स्पर्श व्यंजन स्वनिम है । इसका प्रयोग शब्द मध्य और शब्दांत में होता है । शब्दादि में प्रयोग नहीं है । इसका उच्चारण स्थान "ट्ट" औ "त्त" के बीच में है । उच्चारण के समय जिह्वाग्र कठोर तालु का स्पर्श करता है । अंग्रेज़ी के "T" जैसे उच्चरित होता है ।

हलन्त - चिल्लु

मलयालम पाँच हलन्त् व्यंजन है - ण्, न्, ल्, ळ् और र् ।

मलयालम के प्राय: हर शब्द इसमें समाप्त होता है - जैसे - आण् - पुरुष, अवन् - वह, अवळ् - वह (स्त्री), पाल् - दूध, अवर् - वे ।

व्यंजनानुक्रम

व्यंजनानुक्रम की स्थिति दोनों भाषाओं में समान है । सम व्यंजन और विषम व्यंजन दोनों प्रकार के व्यंजनानुक्रम हिन्दी तथा मलयालम में देखा सकते हैं ।

स्वनिम वितरण

हिन्दी और मलयालम के स्वर स्वनिमों का वितरण एक हद तक समान है । हिन्दी की अपेक्षा मलयालम दो स्वर स्वनिम अधिक है । "ऐ" और "औ" । इन दोनों स्वनिमों से बने कई शब्द मलयालम में प्रयुक्त होता है । दोनों का प्रयोग शब्द में तीनों स्थितियों में है । हिन्दी में दस स्वर स्वनिम है । संयुक्ताक्षर की स्थिति हिन्दी और मलयालम में समान है । स्वरानुक्रम मात्र हिन्दी में है मलयालम में नहीं । यह द्रविड भाषाओं का अपना नियम है । दो स्वरों के बीच एक अर्द्धस्वर आकर संधि होना मलयालम की विशेषता है ।

हिन्दी के सारे स्वर स्वनिम आदि मध्यांत में प्रयुक्त होते हैं । मलयालम में ऐं, और औं के बिना बाकी स्वर स्वनिम तीनों स्थितियों में प्रयुक्त है । इन दोनों का शब्दांत रूप नहीं है ।

हिन्दी और मलयालम के व्यंजन स्वनिमों के वितरण में भी समानता ही मुख्य: है । वितरण की दृष्टि से हिन्दी के प्राय: सभी व्यंजन

वितरण
स्वनिमों का तीनों स्थितियों में होता है । लेकिन मलयालम के अघोष अल्पप्राण स्वनिम द्वयोष्ठ्य "प" का प्रयोग केवल शब्दादि और शब्द मध्य में होता है "तो" वर्त्स्य "ट्ट" और मूर्द्धन्य "ट" का केवल शब्दमध्य और शब्दांत में । अघोष महाप्राण स्वनिमों में द्वयोष्ठ्य "फ" तालव्य "छ" और कोमल तालव्य "ख" का प्रयोग केवल शब्दादि और शब्द मध्य में होता है । तो दन्त्य "थ" और मूर्द्धन्य "ठ" का प्रयोग केवल शब्द मध्य और शब्दांत में होता है । सघोष अल्पप्राण स्वनिमों में द्वयोष्ठ्य "ब" दंत्य "द" और कोमल तालव्य "ग" का प्रयोग केवल शब्दादि और शब्द मध्य में उपलब्ध होता है । घोष महाप्राण व्यंजन स्वनिमों में कोमल तालव्य "घ" तालव्य "झ", मूर्द्धन्य "ढ" दन्त्य "ध" और द्वयोष्ठ्य "भ" का वितरण केवल शब्दादि और शब्द मध्य में होता है । इसका उच्चारण अघोष महाप्राण के समान है । यह केवल लिखित रूप में है ।

हिन्दी में अनुनासिक स्वनिमों की संख्या पाँच है । जबकि मलयालम में दन्त्य "न्" को जोडकर इसकी संख्या छः है । हिन्दी के कोमल तालव्य मूर्धन्य स्वनिम "ङ" तालव्य "ञ" और मूर्धन्य "ण" का वितरण शब्द मध्य और शब्दांत में मिलता है । "न" और "म" का वितरण आदि मध्यांत में होता है । मलयालम कोमल तालव्य "ङ" और मूर्द्धन्य "ण" का वितरण केवल मध्य और अंत में मिलता है । तालव्य "ञ" का मात्र शब्दादि में मिलता है । मलयालम में "न" के दो रूप मिलते हैं वर्त्स्य और दन्त्य । इनमें वर्त्स्य "न" का केवल शब्दमध्य और शब्दांत में प्रयोग होता है । दन्त्य "न" का शब्दादि और शब्दांत में प्रयोग होता है । द्वयोष्ठ्य का प्रयोग तीनों स्थितियों में होता है । पार्श्विक मूर्धन्य स्वनिम "ळ" और उत्क्षिप्त स्वनिम "ऴ" का प्रयोग केवल शब्द मध्य और शब्दांत में होता है । अल्पप्राण संघर्षी - मूर्द्धन्य स्वनिम "ष" और कंठ्य "ह" का प्रयोग केवल शब्दादि और

शब्द मध्य में प्रयोग होता है । व्यंजन स्वनिमों में ड़, व़, ढ, हिन्दी के विशेष स्वनिम है । मलयालम में इसका प्रयोग नहीं है । क़, ख़, ग़, ज़, ड़ आदि स्वनिम हिन्दी में स्पर्श संघर्षी है । यह अरबी, फारसी का प्रभाव है । हिन्दी में इसके प्रयोग होते हैं । लेकिन मलयालम में नहीं है । "ए" कार की अधिकता मलयालम की विशेषता है - जैसे - गणपति - गेणपति, बेलम - बल, जेय - जय, जेलम् - जल ।

मलयालम के तत्सम् शब्दों के मध्य में आनेवाले "ट" वर्गीय स्वनिम "त" वर्ग में बदलते है । जैसे पट्टणम् - पत्तनम - शहर, वैडूर्यम - वैदूर्यम । तद्भव शब्द का "ड़"कार मलयालम में "ष़" बन जाता है । जैसे नाडिका -नाषिका । "ल" कार का कभी कभी मलयालम में "न" कार का उच्चारण होता है । जैसे - वाल्मीकि - वान्मीकि, कल्मष - कन्मष स्वरागम की प्रवृत्ति भी पाई जाती है । जैसे - राजाव् - अरयन - राज । लवंगम् - इलवंगम् ।

खंड्येतर स्वनिम

खंड्येतर स्वनिमों की प्रवृत्ति हिन्दी तथा मलयालम में उपलब्ध है । बलाघात, अनुतान और संगम दोनों भाषाओं में एक ही समान है । लेकिन अनुनासिकता की प्रवृत्ति हिन्दी में अधिक है । अनुनासिक व्यंजनों की संख्या मलयालम में हिन्दी से भी ज़्यादा है - छः । फिर भी अनुनासिकता हिन्दी की अपनी विशेषता है । मलयालम में यह प्रवृत्ति बहुत कम है ।

अक्षर हिन्दी तथा मलयालम में उपलब्ध होता है ।

संदर्भ :- 1. भाषा वैज्ञानिक निबन्ध - जगदीश प्रसाद कौशिक - पृ. 15

2. Contrastive Grammar of Hindi & Tamil S.N. GANESAN, Page 33

हिन्दी और मलयालम के खंडेतर स्वनिम

हिन्दी और मलयालम दोनों भाषाओं में खंडेतर स्वनिमों को प्रवृत्ति मिलती है ।

(अ) अनुतान

अनुतान के कारण वाक्य या वाक्यांशों का एक विशेष अर्थ उत्पन्न होता है ।

हिन्दी - राम ने रावण को मारा ।
राम ने रावण को मारा ?
राम ने रावण को मारा !

मलयालम - गोपालन् वन्नु ।
गोपाल आया ।
गोपालन् वन्नु !
गोपाल आया !
गोपालन् वन्नु ?
गोपाल आया ?

(आ) बलाघात

बलाघात के कारण शब्द या वाक्यों में अर्थ भिन्नता होती है ।

हिन्दी - मुझे एक खिड़की वाला मकान चाहिए ।
मुझे एकखिड़की वाला मकान चाहिए ।

मलयालम - अप्पु मद्रासिल निन्ना वन्नत् ?
क्या अप्पु मद्रास से ही आया ?
अप्पुवा मद्रासिल निन्नै वन्नतं ?
क्या अप्पु ही मद्रास से आया ?

(इ) संगम

उच्चारण में होनेवाली असामान्य रुकावट के कारण शब्द या शब्दांशों का अर्थ बदल जाता है ।

हिन्दी - वह घोडा गाडी खीचता है ।
वह घोडागाडी खीचता है ।

मलयालम - पाव कुट्टिक्कु कोटुत्तु ।
गुडिया बच्चे को दिया ।
पावक्कुट्टिक्कु कोटुत्तु ।
गुडिया को दिया ।

अनुनासिकता

अनुनासिकता नासिक्य रंजित स्वर का अभिलक्षण है । यह न तो स्वर है और न व्यंजन । मलयालम मे अनुनासिक व्यंजनो की संख्या छः है । लेकिन हिन्दी मे इसकी संख्या पाच है । मलयालम मे अनुनासिकता नही है । हिन्दी मे अनुनासिकता की प्रवृत्ति बहुत ज़्यादा है । हिन्दी और मलयालम के खंडेयतर स्वनिमो मे यही एक प्रमुख अन्तर है ।

--0--

पाँचवाँ अध्याय

हिन्दी और मलयालम के रूपिम

हिन्दी और मलयालम के रूपिम

रूप की रचना रूपिम के द्वारा होती है । रूपिम "रूप" की सबसे छोटी इकाई है । स्वनों से रूपिम की रचना होती है । रूपिम एक स्वतंत्र शब्द है और शब्दांश भी । यह वस्तुतः परिपूरक वितरण का या मुक्त वितरण में आए हुए सहपदों का समूह है ।

1. रचना और प्रयोग के अनुसार रूपिम

रचना और प्रयोग के अनुसार रूपिम के दो भेद है । (1) मुक्त रूपिम (2) बद्ध रूपिम ।

मुक्त रूपिम

मुक्त रूपिम वाक्य में किसी भी शब्द का वह स्वतंत्र अर्थवान रूप है जिसे लघुतर रूपों में विभक्त करने पर उसका अस्तित्व नष्ट हो जाता है । अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए मुक्त रूपिम को किसी सहायक की आवश्यकता नहीं होती ।

बद्ध रूपिम

बद्ध रूपिम विभक्ति अथवा प्रत्यय का रूप है ; जो किसी मुक्त रूपिम से मिलकर उसका अर्थगत परिवर्तन लाता है । बद्ध रूपिम अपने आप में पूर्ण नहीं होता, इसलिए यह स्वतः अर्थवान भी नहीं ।

वितरण के आधार पर रूपिम

एक रूपिम में कई रूपिमों का योग संभव है । वितरण के आधार पर संख्या को ध्यान में रखकर और रूप रचना की दृष्टि से रूपिम के दो भेद है - (1) एक रूपिम (2) बहु रूपिम ।

1. एक रूपिम

एक रूपिम जो है जिसमें मात्र एक ही रूपिम रहता है यह रूपिम मुक्त हो सकता है और बद्ध भी ।

2. बहु रूपिम

बहु रूपिम जो है जिसमें एक से अधिक रूपिम हो । बहु रूपिम के मुख्यत: दो भेद है - मिश्र और यौगिक ।

मिश्र रूपिम

मिश्र रूपिम के अन्तर्गत वैसे रूप आते हैं जिसमें एक अथवा एक से अधिक बद्ध रूपिम तो हो - किन्तु एक से अधिक मुक्त रूपिम न रहे ।

यौगिक

यौगिक रूप रचना के अन्तर्गत वैसे रूप आते है, जिसमें एक से अधिक मुक्त रूपिम अवश्य है ।

रूपिम विश्लेषण

रूपिमीय विश्लेषण की दो पद्धतियाँ है अर्थ पद्धति और रूप पद्धति ।

अर्थ पद्धति

अर्थ पद्धति के अनुसार रूपिमीय विश्लेषण का मुख्य आधार अर्थ है ।

रूप पद्धति

इस पद्धति में शब्द का अर्थ, प्रयोग और प्रसंग के अनुसार लगाया जा सकता है ।

अर्थ और कार्य के आधार पर रूपिम

शब्द के जिस युक्ति के सहारे आई हुई रूपावली के अवयव शब्द एक दूसरे से पृथक किए जाते है । उसे रूपीय प्रक्रिया कहते हैं । इसके दो भेद है - §।§ अर्थ तत्व और संबन्ध तत्व ।

अर्थ तत्व

अर्थ तत्व वे हैं जो भाव की प्रतिभा मस्तिष्क में उपस्थित कर देते हैं । अर्थ तत्व के लिए आवश्यक है कि रूप का अर्थ एक से अधिक न हो क्योंकि अनेकार्थी शब्दों में कई अर्थ तत्व हो सकते हैं ।

संबन्ध तत्व

अर्थ तत्व के द्वारा अभिव्यक्त शब्दों की प्रतिभा भाव के सही उद्‌बोध के लिए जिस रूपात्मक अंश का सहारा लिया जाता है उसे संबन्ध तत्व कहते हैं । इनमें अर्थ का प्राधान्य नहीं होता । इनका प्रमुख कार्य होता है संबन्ध दर्शन या व्याकरणिक कार्य ।[2]

सहपद

पदों या रूपों के परिपूरक वितरण तथा अर्थगत समानता के आधार पर रूपिम को वर्गीकृत किया जा सकता है । पदों को न्यूनतम इकाई में खंडित करने से ही रूपिम की प्राप्ति संभव है । क्योंकि परिपूरक वितरण में आए हुए सहपद रूपिम कहलाते हैं ।

सहपद का अभिनिर्धारण

एक या एक से अधिक रूपिम अनुक्रम जो, स्वत: एक रूप का निर्माण करते है, जिसे किसी रूपिम के सहपद कहे जा सकते है अगर वे परिपूरक वितरण की स्थिति में है ।

2. संबन्ध तत्व के आधार पर रूपिम

विभिन्न अर्थ तत्वों का आपस में संबन्ध दिखलाना संबन्ध तत्व का प्रमुख कार्य होता है । प्रातिपादिक में प्रत्यय - परसर्ग या कभी-कभी स्वतंत्र शब्द जोडकर भी व्याकरणिक कोटियों की अभिव्यक्ति होती है । संबन्ध तत्व के निम्नांकित भेद है - §1§ मुक्त रूपिम योग §2§ रूपिम योग §3§ आभ्यंतर परिवर्तन §4§ शून्य रूप §5§ स्वतंत्र रूप §6§ शब्द क्रम §7§ द्विरावृत्ति ।

§1§ मुक्त रूपिम योग

मुक्त रूपिम योग उस रूपिमीय प्रक्रिया का अंग है जिनमें दो अथवा दो से अधिकों रूपों के परस्पर योग से एक नवीन रूप का निर्माण होता है । ये रूपिम समानार्थी भी हो सकते है और भिन्नार्थी भी । इस की रचना के लिए कम से कम दो दो मुक्त रूपिमों का योग अत्यन्त आवश्यक है ।

§2§ रूपिम योग

रूपिम योग के अन्तर्गत शब्द के मूल रूप के साथ बद्ध रूपिम के योग से निर्मित शब्द का प्रचलन है । प्रत्यय वस्तुतः बद्ध रूपिम है । प्रत्यय का अपने आप में कोई अर्थ नहीं होता । किन्तु धातु से मिलकर वह स्वतंत्र अर्थवान रूप का निर्माण करता है । पूर्व प्रत्ययों और पर प्रत्ययों का प्रयोग शब्द अथवा प्रातिपादिक के प्रारंभ अथवा अन्त को निश्चित कर सकता है । सामान्यतः रूपिम योग तीन प्रकार के होते हैं - पूर्व रूपिम योग, पर रूपिम योग, मध्य रूपिम योग ।

§3§ आभ्यंतर परिवर्तन

अर्थ और रूप में प्रायः समानता होते हुए भी कुछ स्वनिमों में यदि नाम-मात्र परिवर्तन हो जाता है तो मूल शब्द से निकली रूपावली को आभ्यंतर परिवर्तन द्वारा निर्मित शब्द की संज्ञा दी जाती है । आभ्यंतर परिवर्तन के मुख्यतः तीन भेद ह - §1§ स्वर परिवर्तन §2§ व्यंजन परिवर्तन §3§ समूल परिवर्तन ।

§4§ शून्य रूप

शब्द जब रूप में प्रयुक्त होता है तो उसमें विभक्तियों का योग अत्यन्त आवश्यक है । फिर भी अपरी तौर पर कभी-कभी यह दिखाई पडता है कि वाक्य में प्रयोग के लिए शब्द में विभक्तियों के योग की आवश्यकता नहीं होती । वस्तुत: बिना विभक्ति के योग के शब्द वाक्य में प्रयुक्त हो ही नहीं सकता । जहाँ विभक्तियाँ स्पष्ट नहीं होती वहाँ शून्य रूपिम के योग की परिकल्पना कर ली जाती है ।

§5§ स्वतंत्र रूप

भाषा में कुछ ऐसे स्वतन्त्र रूप भी है जो संबन्ध तत्व का काम करते हैं ।

§6§ शब्द क्रम

रूप रचना में शब्दों का क्रम निश्चित रहता है । यदि उनके क्रम में परिवर्तन का निदेश कर दिया जाए तो उनके रूप और अर्थ में अंतर आ जाता है । क्योंकि शब्दों अथवा रूपों के क्रम में भी रूपिम सन्निहित रहता है ।

§7§ द्विरावृत्ति

सम या विषम प्रातिपादिक अथवा रूप रचना की आवृत्ति से संबन्ध तत्व का जो नया रूप सामने आता है उसे द्विरावृत्ति कहते है । आवृत्ति के मुख्यत: दो भेद मिलते है सम तथा विषम । सम द्विरावृत्ति के और भी दो रूप है आंशिक सम तथा पूर्ण सम ।

सम द्विरावृत्ति - आंशिक सम

जब शब्द की ध्वनि ही आवृत्त हो तो उसे आंशिक द्विरावृत्ति कहता है । उसके तीन रूप है - पूर्वा वृत्ति, मध्यावृत्ति और परावृत्ति ।

पूर्व वृत्ति

जब शब्द का केवल पूर्व रूप ही आवृत्त होकर प्रायः समान ध्वनियों का निष्पादन करे तथा उसके अंतिम अंश में किसी प्रकार की ध्वन्यात्मक समता नहीं रहे तो इसे पूर्ववृत्ति कहते है ।

मध्यावृत्ति

जब आवृत्त शब्द के केवल मध्य भाग में ध्वन्यात्मक समता हो तथा उसके पूर्व और अन्त में कोई ध्वनि-साम्य न हो तो उसे मध्यावृत्ति कहते है ।

परावृत्ति

युग्म शब्द के केवल अन्तिम भाग में ही ध्वनि साम्य होने पर उसे परावृत्ति कहते है ।

पूर्ण सम

उच्चरित अंश जब पूर्ण रूप से आवृत्त हो जाए तो उसे पूर्णावृत्ति कहते है ।

2. विषम द्विरावृत्ति

जब उच्चरित अंश किसी भिन्न प्रकार के उच्चरित अंश के साथ युग्म के रूप में व्यवहृत हो तो वह विषम आवृत्ति कही जाती है ।

3. अर्थ और कार्य के आधार पर रूपिम

शब्द जब रूप बनकर वाक्य में प्रयुक्त होता है तो यह आवश्यक नहीं कि भाव की प्रतिभा मानस पटल पर स्पष्ट हो जाए । यह कार्य अर्थ के द्वारा पूरा होता है । अर्थ स्पष्ट होते ही अभिव्यक्त भाव मानस पटल पर छा जाता है किन्तु कठिनाई यह है कि शब्द का कोई निश्चित अर्थ नहीं होता । अर्थ तो प्रयोग और प्रसंग के अनुकूल लगाया जाता है । इस क्रम में संबन्ध तत्व सहायक होते है ।[4] अतएव अर्थ और कार्य के आधार पर रूपिम के दो भेद है - अर्थ दर्शी

और संबन्ध दर्शी । अर्थ दर्शी रूपिम भाषा-विशेष के प्रचलित पद विभाग के विश्लेषण पर विचार करते है । संबन्ध दर्शी रूपिम व्याकरणिक कोटियों के आधार पर स्पष्ट होते है ।

पदविभाग

प्रयोग के अनुसार शब्दों की भिन्न भिन्न जातियों को शब्द भेद कहते है तथा शब्दों की भिन्न-भिन्न जातियां बतलाना उनका वर्गीकरण है ।[5] रूपवैज्ञानिक गठन अथवा वाक्य रचना के अनुसार भाषा विशेष के शब्दों को कई वर्गों में विभाजित किया जा सकता है । वैयाकरणों ने इसे पद विभाग कहा है । पद विभाग वह रूप वर्ग है जो वाक्य विन्यास अथवा रूपांतरण में प्रयुक्त शब्दों की जाति निर्धारित करने का प्रयास करता है ।

प्रकार्य के आधार पर रूपिम

शब्द के मूल रूप में प्रत्यय परसर्ग आदि के योग से व्याकरणिक कोटियों की सहज अभिव्यक्ति रूपिमों के क्रमबद्ध परिहार रूपीय चलन तथा शब्द क्रम आदि के निश्चित भाषा शास्त्रीय रूप के साहचर्य से संभव है ।

संज्ञा

पद विभाग की दृष्टि से भाषा में संज्ञा के निम्नांकित भेद होते है - व्यक्ति वाचक, जाति वाचक और भाव वाचक ।

लिंग

लिंग से किसी व्यक्ति या वस्तु का लिंग का बोध होता है । रूपिम निर्धारण में लिंग का विशेष महत्व है ।

वचन

भाषा में एक का बोध करनेवाला शब्द एक वचन तथा एक से अधिक का बोध करनेवाला बहुवचन कहा जाता है ।

कारक

नाम पद के साथ क्रिया का जो संबन्ध है अथवा क्रिया के साथ अपना संबंध स्थापित करते हुए संज्ञा या सर्वनाम जिस रूप में अभिव्यक्त होती है उस शब्द रूप को कारक कहते है । कारक को अभिव्यक्त करनेवाले इस शब्द रूप में जो प्रत्यय लगाये जाते है उन्हें विभक्ति प्रत्यय कहते है ।[6]

पुरुष

भाषाविज्ञान में पुरुष के तीन प्रकार प्रचलित है - प्रथम पुरुष, द्वितीय पुरुष, तृतीय पुरुष ।

सर्वनाम

रूप रचना तथा प्रकार्य की दृष्टि से सर्वनाम शब्द अन्य नाम शब्दों - संज्ञा तथा विशेषण - से भिन्न है । सर्वनाम रूपों में प्राप्त होनेवाली विभक्तियां संज्ञा तथा विशेषण रूपों की विभक्तियों से सर्वथा भिन्न है । पुरुष वाचक सर्वनामों के वचन तथा कारक की दृष्टि से तो नितांत नवीन रूप ही मिलते है । निश्चय वाचक सर्वनाम को छोडकर अन्य जितने प्रकार के सर्वनाम है, कर्ता बहुवचन में उनके रूप ज्यों-के-त्यों रहते है या कभी-कभी पुनरुक्ति करके कर्ता बहुवचनत्व का बोध कराया जाता है ।[7]

विशेषण

रूप रचना की दृष्टि से भाषा में विशेषण दो वर्गों में विभक्त है - रूपान्तर सहित और रूपान्तर रहित ।

क्रिया

भाव की अभिव्यक्ति में क्रिया की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है । क्रिया की रचना धातु से होती है ।

कृदन्त

क्रिया की रूप रचना में कृदन्त का महत्वपूर्ण स्थान है । क्रिया की रूप रचना के लिए सामान्यतः कर्तृ वाचक कृदन्त, वर्तमान कालिक कृदन्त तथा भूतकालिक कृदन्त का योग महत्वपूर्ण है ।

प्रयोग के आधार पर क्रिया

रूप रचना की दृष्टि से लिंग और वचन के अनुसार क्रिया के तीन प्रयोग होते हैं । जैसे - कर्तरि प्रयोग, कर्मणी प्रयोग और भाव प्रयोग ।

हिन्दी के रूपिम

रचना और प्रयोग के आधार पर हिन्दी के रूपिम

रचना और प्रयोग के आधार पर हिन्दी के रूपिम के दो भेद है - मुक्त रूपिम और बद्ध रूपिम ।

(क) मुक्त रूपिम

हिन्दी में आम, माँ, केला, हंस - जैसे शब्द बिना किसी संयोजन के भी अपना अर्थ बनाए रखते है । मुक्त रूपिम अपने-आप में पूर्ण है ।

(ख) बद्ध रूपिम

परसर्ग और प्रत्यय के रूप में हिन्दी में बद्ध रूपिमों के कई उदाहरण मिलते है - जैसे - एक + ता- एकता, सुन्दर + ता - सुन्दरता, लिख + आवट - लिखावट ।

वितरण के आधार पर हिन्दी के रूपिम

वितरण के आधार पर हिन्दी के रूपिम के दो भेद है - एक रूपिम और बहुरूपिम ।

(क) एक रूपिम

एक रूपिम मुक्त भी हो सकता है और बद्ध भी । जैसे - प्राण, चाह, मन, लाल, पीत, पढ । बहु रूपिम - अ, अन, उप, कु..... ।

(ख) बहु रूपिम

हिन्दी में बहु रूपिम के दो भेद है - मिश्र और यौगिक ।

मिश्र रूपिम

मुक्त+बद्ध	जन+ता	जनता
बद्ध+मुक्त	अ+नीति	अनीति
मुक्त+बद्ध+बद्ध	भारत+ईय+ता	भारतीयता
बद्ध+मुक्त+बद्ध	अनु+शास+अन	अनुशासन
बद्ध+मुक्त+मुक्त	अ+स+फल	असफल
बद्ध+मुक्त+बद्ध+बद्ध	प्रा+देश+इक+ता	प्रादेशिकता
बद्ध+बद्ध+मुक्त+बद्ध	अ+वि+श्वास+ई	अविश्वासी
बद्ध+बद्ध+बद्ध+बद्ध	उत्+तर+उत्+तर	उत्तरोत्तर
बद्ध+बद्ध+बद्ध+मुक्त+बद्ध	उत्+तर+अधि+कार+ई	उत्तराधिकारी
बद्ध+बद्ध+मुक्त+बद्ध+बद्ध	अ+नि+यम+इत+ता	अनियमितता

यौगिक

मुक्त+मुक्त	राष्ट्र+पिता	राष्ट्रपिता
मुक्त+मुक्त+बद्ध	भारत+वास+ई	भारतवासी
मुक्त+बद्ध+मुक्त	तीव्र+अनु+राग	तीव्रानुराग
बद्ध+मुक्त+मुक्त	आ+धार+शिला	आधारशिला
मुक्त+मुक्त+मुक्त+मुक्त	गिरि+धर+गो+पाल	गिरिधरगोपाल
मुक्त+मुक्त+मुक्त+बद्ध	बहु+रूप+दर्श+ई	बहुरूपदर्शी

मुक्त + मुक्त + बद्ध + बद्ध   सह + धर्म + इन + ई   सहधर्मिणी
मुक्त + बद्ध + मुक्त + बद्ध   शब्द + अनु + शास + अन   शब्दानुशासन

रूपिम विश्लेषण

हिन्दी में रूपिमीय विश्लेषण की दो पद्धतियाँ है - अर्थ पद्धति और रूप पद्धति । अर्थ पद्धति के अनुसार रूपिमीय विश्लेषण का मुख्य आधार अर्थ है - रूप पद्धति में शब्द का अर्थ, प्रयोग और प्रसंग के अनुसार लगाया जा सकता है । हिन्दी में कर, पंख, कनक, सोना - ऐसे अनेक शब्द है जिनके एक से अधिक अर्थ प्रसंगानुकूल निकला जा सकता है ।

अर्थ और कार्य के आधार पर हिन्दी के रूपिम

अर्थ और कार्य के आधार पर हिन्दी के रूपिम के दो भेद है - अर्थ तत्व और संबन्ध तत्व ।

(क) अर्थ तत्व

"राम मैदान में खेलता है" - इस वाक्य में अर्थ तत्व है - राम, मैदान, खेलना अर्थ तत्व इन प्रतिमाओं की भावों की अभिव्यक्ति करते है ।

(ख) संबन्ध तत्व

"राम मैदान में खलता है" वाक्य में - राम अर्थ तत्व + शून्य परसर्ग - संबन्ध तत्व - मैदान अर्थ तत्व + में संबन्ध तत्व तथा खेल अर्थ तत्व + ता है - सामान्य वर्तमान काल का क्रिया रूप - संबन्ध तत्व । अतः इसमें संबन्ध तत्व होता है - शून्य रूप + में + ता है ।

सहपद एवं उसका अभिनिर्धारण

1.	आता	आया
2.	नहाता	नहाया
3.	बुलाता	बुलाया
4.	हंसता	हंसा
5.	चलता	चला
6.	कहता	कहा

उपयुक्त रूपों से स्पष्ट हो जाता है कि आना, नहाना, बुलाना, हंसना, तथा कहना धातु में प्रत्यय के योग से रूपों की रचना हुई है । योग देखने से ज्ञात होता है कि ये काल-प्रत्यय है । प्रत्यय रूप वर्तमान काल के है और द्वितीय भूतकाल के । इन में आना नहाना तथा बुलाना धातु में व्यंजन के साथ स्वर मिश्रित रूप /या/ के योग से इनक भूतकालिक रूप का निर्माण हुआ है तथा हंसना, चलना, और कहना में स्वर /आ/ के योग से । इस प्रकार भूतकालिक रूप के निर्माण के लिए उपर्युक्त धातुओं में दो प्रकार के रूप /या/ और /आ/ के योग का प्रचलन है । दोनों ही रूप समानधर्मी है तथा परिपूरक वितरण की स्थिति में है क्योंकि दोनों भिन्न परिवेश में आते है । उपर्युक्त उदाहरणों में भूतकालिक रूप में जहाँ दो सहपद /या/ तथा /आ/ है वहाँ उन सभी के वर्तमान कालिक रूप में केवल एक सहपद /ता/ दृष्टिगत है ।

सहपद का वितरण

हिन्दी के उपर्युक्त उदाहरणों में भूतकालिक रूप की रचना के लिए दो सहपदों /या/ तथा /आ/ का योग दृष्टिगत है ये दोनों सहपद ऊपर की सारी धातुओं के वितरण में पूरक का काम करते है तथा आना, नहाना, तथा बुलाना में /या/ एवं हंसना, चलना तथा कहना में /आ/ ।

संबन्ध तत्व के आधार पर रूपिम

हिन्दी भाषा की आकृति प्रकृति के आधार पर संबन्ध तत्व दर्शी रूपिम के निम्नांकित भेद है । §1§ मुक्त रूपिम योग §2§ रूपिम योग §3§ आभ्यंतर परिवर्तन §4§ शून्य रूप §5§ स्वतंत्र रूप §6§ शब्द क्रम §7§ द्विरावृत्ति ।

§1§ मुक्त रूपिम योग

विभिन्न शब्द रूपों के योग से बने मुक्त रूपिम शब्द -

संज्ञा + संज्ञा	पनघट - पन + घट	- संज्ञा
संज्ञा + संज्ञा	दिनरात - दिन + रात	- अव्यय
संज्ञा + विशेषण	प्राणप्रिय - प्राण + प्रिय	- संज्ञा
संज्ञा + क्रिया	मनचला - मन + चला	- विशेषण
संज्ञा + क्रिया	दिनभर - दिन + भर	- अव्यय
संज्ञा + अव्यय	जलजात - जल + जात	- संज्ञा
विशेषण + संज्ञा	त्रिलोचन - त्रि + लोचन	- संज्ञा
विशेषण + विशेषण	श्यामसुन्दर - श्याम + सुन्दर	- संज्ञा
विशेषण + क्रिया	अधजला - आधा + जला	- विशेषण
क्रिया + संज्ञा	चलचित्र - चल + चित्र	- संज्ञा
क्रिया + क्रिया	चलचली - चला + चली	- संज्ञा
क्रिया + संज्ञा	हंस मुख - हंस + मुख	- विशेषण

§2§ रूपिम योग

§क§ पूर्व रूपिम योग

धातु के पूर्व में बद्ध रूपिम योग को पूर्व-रूपिम योग कहता है । परंपरित व्याकरण में उसको उपसर्ग कहते हैं ।

पूर्व रूपिम	मूल शब्द	निर्मित शब्द
अ	ज्ञान	अज्ञान
अन	हित	अनहित
अनु	बंध	अनुबंध
अप	यश	अपयश
अवि	रेचन	अविरेचन
आ	क्रोश	आक्रोश
उप	हास	उपहास
औ	गुण	औगुण
कु	कर्म	कुकर्म
दु	पट्टा	दुपट्टा
परि	त्याग	परित्याग
बे	होश	बेहोश
ला	चार	लाचार
वि	ज्ञान	विज्ञान
स	पत्नी	सपत्नी
सु	फल	सुफल

(ख) मध्य रूपिम योग

शब्द के मध्य में आकर संबन्ध तत्त्व यदि एक पृथक स्वतंत्र शब्द का निर्माण करते है तो मध्य में इस प्रकार के योग को मध्य रूपिम योग कहते है । हिन्दी में मध्य रूपिम योग नहीं के बराबर है ।

(ग) पर रूपिम योग

मूल शब्द	पर रूपिम	निर्मित शब्द
सवा	अइया	सवइया
रूप	अक	रूपक
साधन्	अक	साधक
दश	अक	दशक
घूम	अक्कड	घूमक्कड
कीच	अड	कीचड
संग	अत	संगत
ज्वल	अन्त	ज्वलन्त
धडक	अन	धडकन
घाव	अल	घायल
मन	अस्वी	मनस्वी
भूख	आ	भूखा
भला	आई	भलाई
बिक	आऊ	बिकाऊ
पोश	आक	पोशाक
खिल	आडी	खिलाडी
बार	आत	बारात
बरस	आती	बरसाती
सेना	आनी	सेनानी
पंच	आयत	पंचायत
लोह	आर	लोहार
भिख	आरी	भिखारी
दया	आलु	दयालु

चुन	आव	चुनाव
लिख	आवट	लिखावट
पथ	इक	पथिक
प्रेम	इका	प्रेमिका
रूप	इम	रूपिम
लाल	इमा	लालिमा
धुन	इया	धुनिया
ज्ञान	ई	ज्ञानी
रंग	ईन	रंगीन
भारत	ईय	भारतीय
मछ	उआ	मछुआ
मात	उल	मातुल
बाज़ार	ऊ	बाज़ारू
नाख	ऊन	नाखून
विजय	एता	विजेता
अक	एला	अकेला
सह	एली	सहेली
कला	कार	कलाकार
याद	गार	यादगार
जन	ता	जनता
दूकान	दार	दूकानदार
बच	पन	बचपन
पूजा	री	पूजारी
रूप	वान	रूपवान
माया	वी	मायावी

रूपिम योग के अन्तर्गत पूर्व रूपिम योग, मध्य रूपिम योग और पर रूपिम योग के अतिरिक्त एक भिन्न वर्ग भी है । इस वर्ग के अन्तर्गत वैसे रूप आते है जिनमें मूल रूप के साथ पूर्व रूपिम और पर रूपिम दोनों का योग होता है । हिन्दी में वैसे शब्द भी प्रचलित है जिनके मूल में एक अथवा एक से अधिक पूर्व रूपिम अथवा पर रूपिम का योग होता है ।

मूल रूप में एक पूर्व रूपिम तथा एक पर रूपिम का योग :-

मूल रूप	पू:रूपिम	प:रूपिम	शब्द
शरीर	अ	ई	अशरीरि
योग्य	अ	ता	योग्यता
गिन	अन	अत	अनगिनत
सुन	अन	ई	अनसुनी
शास	अनु	अन	अनुशासन
मान	अप	इत	अपमानित
कार	उप	इक	उपकारक
मार्ग	कु	ई	कुमार्गी
चल	प्र	इत	प्रचलित
नाम	बद	ई	बदनामी
चैन	बे	ई	बेचैनी

मूल रूप में एक पूर्व रूपिम तथा दो पर रूपिम के योग :-

मूल रूप	पूर्व रूपिम	पर रूपिम	शब्द
शोभ	अ	अन + ईय	अशोभनीय
राज	अ	क + ता	अराजकता
गिन	अन	अत + ई	अनगिनती
कर	अनु	अन + ईय	अनुकरणीय
योग	उप	इ + ता	उपयोगिता

मूल रूप में दो पूर्व रूपिमों का योग :-

मूल रूप	पूर्व रूपिम	शब्द
फल	अ + स	असफल
मान	अ + स	असमान
आय	अभि + प्र	अभिप्राय
गत	सु + आ	स्वागत

मूल में दो पर रूपिमों का योग :-

मूल रूप	पर रूपिम	शब्द
दर्श	अन + ईय	दर्शनीय
भारत	ईय + ता	भारतीयता
पत्र	कार + इता	पत्रकारिता

मूल में दो पूर्व रूपिम तथा एक पर रूपिम

मूल रूप	पूर्व रूपिम	पर रूपिम	शब्द
यम	अ + नि	इत	अनियमित
श्वास	अ + वि	ई	अविश्वासी
नाश	अ + वि	ई	अविनाशी
फल	अ + स	ता	असफलता
चार	अन + आ	ई	अनाचारी

मूल में दो पूर्व रूपिम तथा दो पर रूपिमों का योग :-

मूल रूप	पूर्व रूपिम	पर रूपिम	शब्द
यम	अ + नि	इत + ता	अनियमितता
योग	अन + उप	इ + ता	अनुपयोगिता

मूल में तीन पूर्व रूपिम तथा एक पर रूपिमों का योग :-

मूल रूप	पूर्व रूपिम	पर रूपिम	शब्द
कार	उत् + तर + अधि	ई	उत्तराधिकारी
स्थ	सु + वि + अव	इत	सुव्यवस्थित

§3§ आभ्यंतर परिवर्तन

हिन्दी में आभ्यंतर परिवर्तन के तीन भेद है - §1§ स्वर परिवर्तन §2§ व्यंजन परिवर्तन §3§ समूल परिवर्तन ।

स्वर परिवर्तन

आदि स्वर परिवर्तन	- शिव - शैव
मध्य स्वर परिवर्तन	- आसन - आसीन
अन्त्य स्वर परिवर्तन	- प्रणय - प्रणयी
आदि और अंत में परिवर्तन	- भूमि - भौम

व्यंजन परिवर्तन

स्वर के समान व्यंजन में परिवर्तन हो जाने से भी संबन्ध तत्व प्रकट होता है -

आदि व्यंजन परिवर्तन	- यमुना - जमुना
मध्य व्यंजन परिवर्तन	- प्रकट - प्रगट
अन्त्य व्यंजन परिवर्तन	- गणन - गणक

समूल परिवर्तन

आन्तरिक परिवर्तन द्वारा निर्मित शब्द की रूप - रचना में जब ऐसा अन्तर दृष्टिगत है जिसमें मूल और परिवर्तित रूप में कोई ध्वन्यात्मक समता नहीं रहे । ऐसे परिवर्तित रूप को समूल परिवर्तित रूप कहते है । जैसे - "जाना" से "गया" । "जाना" और "गया" में किसी प्रकार की ध्वन्यात्मक समानता नहीं है । फिर भी यह निर्विवाद सत्य है कि "गया" का मूल रूप "जाना" है । इन रूपों में जो परिवर्तन हुए है इसकी व्याख्या केवल ऐतिहासिक विकास में ही प्रस्तुत की जा सकती है । इस से यह देखा जा सकता है कि एक शब्द में इतना अधिक परिवर्तन हो जाता है कि नवीन शब्द का निर्माण हो जाता है ।[8]

§4 § शून्य रूप

हिन्दी में ऐसे बहुत सारे शब्द है जिन्हें एकवचन से बहुवचन बनाते समय उनके रूपों में परिवर्तन नहीं होता । जैसे -

एकवचन	बहुवचन
जय	जय /Ø/
मान	मान /Ø/
तोष	तोष /Ø/

उपर्युक्त एकवचन द्योतक शब्द जय, मान और तोष की रचना एक रूपिम के योग से हुई है । किन्तु बहुवचन द्योतक जय, मान और तोष की रचना दो रूपिमों के योग से हुई है । बहुवचन द्योतक इन तीनों रूपों शून्य रूपिम के योग से हुआ है क्योंकि बहुवचन द्योतक ऐसा कोई शब्द होता ही नहीं जिसमें रूप रचनात्मक दृष्टि से मात्र एक रूपिम हो ।

ऐसे शब्द हिन्दी में असंख्य है । शून्य रूपिम के योग द्वारा इनके रूप विशेषण, क्रिया अथवा कारकीय परसर्गों से स्पष्ट है ।

§5§ स्वतंत्र रूप

हिन्दी के कारकीय परसर्ग ने, को, से, में, पर..... आदि स्वतंत्र रूप का काम करते है । जैसे -

श्याम का घर
कृष्ण से बड़े
स्कूल के सामने
कम से कम
नगर से गाँव ।

§6§ शब्द क्रम

रूप रचना में शब्दों का क्रम निश्चित रहता है । यदि उनके क्रम में परिवर्तन का निर्देश कर दिया जाए तो उनके रूप और अर्थ में अंतर आ जाता है क्योंकि शब्दों अथवा रूपों के क्रम में भी रूपिम सन्निहित रहता है । हिन्दी में शब्द क्रम -

थोडा - बहुत - बहुत थोडा
थोडा - बहुत - कुछ - स्वल्प
जन - श्रेष्ठ - श्रेष्ठ - जन
जन - श्रेष्ठ - नर पुंगव !
खाना - पीना - भोजन खाना
पीना-खाना - शराब पान तथा मंसाहार
धर्मराज - राज धर्म
धर्म राज - युधिष्ठिर

वाक्यों में भी शब्दों का क्रम बदल जाने से अर्थ में परिवर्तन हो जाता है, जैसे -

लडका काला स्वेटर पहनता है ।
काला लडका स्वेटर पहनता है ।
काला स्वेटर लडका पहनता है ।
स्वेटर काला लडका पहनता है ।

द्विरावृत्ति - §1§ सम द्विरावृत्ति - §क§ आंशिक सम

§1§ पूर्वावृत्ति - काम - काज

दिल-दिमाग

§2§ मध्यावृत्ति - सवाल-जवाब

§3§ परावृत्ति - काट-छाँट

रूखा-सूखा

(ख) पूर्ण सम - बार-बार

2. विषम द्विरावृत्ति

पढी-लिखी

हार-जीत

प्रकार्य के आधार पर हिन्दी के रूपिम :-

(1) संज्ञा

पदविभाग की दृष्टि से हिन्दी में संज्ञा के तीन मुख्य भेद है, व्यक्ति वाचक, भाव वाचक तथा जाति वाचक । हिन्दी में संज्ञा के दो अन्य रूप भी प्रचलित है - जैसे द्रव्य वाचक तथा समुदाय वाचक ।

व्यक्तिवाचक संज्ञा

भारत-गंगा - दो जाति वाचक संज्ञा शब्दों के योग से भी व्यक्ति वाचक संज्ञा शब्द का रूप निर्मित होता है - जैसे तीर्थ राज, गाय धार ।

जातिवाचक संज्ञा - नदी, नर, शिला

द्रव्य वाचक संज्ञा शब्दों में जाति वाचक संज्ञा शब्दों के मेल से निर्मित संज्ञा शब्द इस रूप में प्रचलित है - जैसे - स्वर्ण कलश, ताम्र पत्र ।

भाववाचक संज्ञा - सुख, हर्ष, समझ

भाव वाचक संज्ञा शब्दों की रचना पदविभाग में मुक्त रूपिम के साथ बद्ध रूपिम के योग से स्पष्ट होती है - मित्र - मित्रता, कटु - कटुता, अपना - अपनापन ।

समुदाय वाचक संज्ञा - सभा दर्द वर्ग

जाति वाचक संज्ञा शब्दों के साथ द्रव्यवाचक संज्ञा शब्दों के योग से निर्मित द्रव्यवाचक संज्ञा शब्द - गोरस, कूपजल ।

§2§ लिंग

हिन्दी का जन्म संस्कृत की परंपरा में हुआ है । किन्तु संस्कृत के नपुंसक लिंग का प्रचलन हिन्दी में नहीं मिलता । पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के रूप में हिन्दी में दो ही लिंगों का प्रचलन है । नपुंसक लिंग के अन्तर्गत आनेवाले शब्द हिन्दी में पुल्लिंग और स्त्री लिंग के रूप में समाहित है । इसलिए हिन्दी व्याकरण में लिंग निर्णय दुरूह कार्य बन गया है । प्राणिवाचक शब्दों के लिंग निर्णय में कठिनाई नहीं होती, जिनके युग्म शब्द प्रचलित है - पुरुष-स्त्री, लडका-लडकी, घोडा-घोडी आदि ऐसे शब्द है जिनका लिंग निर्धारण सहज संभव है । फिर भी कुछ ऐसे प्राणिवाचक शब्द है जिनके युग्म तो है किन्तु पुल्लिंग और स्त्रीलिंग में उनका रूप समान होता है ।

उदा:- कौआ - नेपला - कोयल

जोंक - गौरया - गिलहरी

हिन्दी में संज्ञा और सर्वनाम शब्दों का तो लिंग निर्णय होता ही है ; मुक्त के साथ बद्ध रूपिम के योग से इनका प्रभाव कारक विशेषण और क्रियाओं पर भी पडता है ।

कारक द्वारा	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
	राम का घर	राम की किताब
विशेषण द्वारा	अच्छा घर	अच्छी पुस्तक

पुल्लिंग संज्ञा शब्द के साथ /ई/ बद्ध रूपिम के योग से स्त्रीलिंग शब्द बनाया जाता है -

शब्द	बद्ध रूपिम	निर्मित शब्द
घोडा	ई	घोडी
लडका	ई	लड़की
बेटा	ई	बेटी
/इन/ बद्ध रूपिम के योग से -		
चमार	इन	चमारिन
लुहार	इन	लुहारिन
धोबी	इन	धोबिन
माली	इन	मालिन
/आइन/ के योग से -		
पंडित	आइन	पंडिताइन
गुरू	आइन	गुरूआइन
लाला	आइन	लालाइन
बनिया	आइन	बनियाइन
/आनी/ के योग से -		
सेठ	आनी	सेठानी
देवर	आनी	देवरानी
क्षत्र	आनी	क्षत्रानी
चौधर	आनी	चौधरानी
/नी/ के योग से -		
राजपुत	नी	राजपुतानी
ऊँट	नी	ऊँटनी

कुछ ऐसे शब्द है जिनके पुल्लिंग और स्त्रीलिंग रूप समान है - ऐसे रूपों में शून्य /ø/ रूपिम के योग की परिकल्पना करतो है ।

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
मित्र	मित्र ø
साथी	साथी ø

§3§ वचन

हिन्दी में एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए सामान्यत: एकवचन शब्द के अन्त में बहु रूपिमों का योग होता है । किन्तु कुछ ऐसे शब्द भी है जिनके बहुवचन रूप शून्य रूपिम के योग से निर्मित होते हैं ।

एकवचन	बहुवचन
जय	जय + /ø/
यश	यश + /ø/
सत्य	सत्य + /ø/

बहुवचन द्योतक शब्द की रचना सामान्यत: एकवचन द्योतक शब्दों के साथ बद्ध रूपिम के योग से होती है । संज्ञा और सर्वनाम के रूप पर तो इनका प्रभाव पडता है । कारक, विशेषण और क्रिया के रूप भी वचन से प्रभावित है ।

कारक द्वारा

	एकवचन	बहुवचन
संबंध कारक	मेरा घोडा	मेरे घोडे
विशेषण	अच्छा घोडा	अच्छे घोडे
क्रिया रूप	वह हंसता है ।	वे हंसते हैं ।

शून्य रूपिम

एकवचन	बहुवचन
नाम §मेरा नाम§	नाम §हम सबके नाम§
विजय§राम की विजय§	विजय §हम सबकी विजय§

मुक्त रूपिम के योग से

एकवचन	मुक्त रूपिम	बहुवचन
छात्र	गण	छात्र गण
अधिकारी	वर्ग	अधिकारी वर्ग
आप	लोग	आप लोग
छात्र	वृन्द	छात्र वृन्द
बच्चा	सब	बच्चा सब

§4§ कारक

व्यावहारिक रूप से हिन्दी में आठ कारक प्रचलित है । कारक के लिए प्रचलित परसर्ग स्वतंत्र रूपिम है ।

कर्ता कारक /ने/

कुछ परिस्थितियों में कर्ता कारक के साथ शून्य रूपिम का योग भी होता है ।

/ने/ राम ने रोटी खायी । श्याम ने किताब पढी है ।

शून्य /ø/ वह काम करता है । वह बंबई गया है ।

कर्म कारक /को/

/को/ श्याम को बुलाओ ।

अपने कपडे को साफ रखिए ।

शून्य /ø/ वह आम खाएगा ।

करण कारक /से/

/से/ वह कलम से लिखता है ।

संप्रदान कारक /के लिए/ ~~को~~

/के लिए/ आपकी भलाई के लिए कहता हूँ ।

शून्य /ø/ चुनाव-प्रचार प्रारंभ हो गया ।

अपादान कारक /से/

/से/ वह घर से आता है ।

संबन्ध कारक /का/

/का/ यह राम का घर है ।

अधिकरण कारक /में/ /पर/

/में/ बाज़ार में तरकारियाँ नहीं मिलती है ।

/पर/ उसके पैर ज़मीन पर नहीं पडते ।

शून्य /ø/ बच्चे स्कूल गए हैं ।

पुरुष

हिन्दी में पुरुष के तीन रूप है, उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष ।

		एकवचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	सामान्य	तू, तुम	तुम लोग
	आदर सूचक	आप	आप लोग
अन्य पुरुष	सामान्य	वह	वे लोग
	आदर सूचक	वे	वे लोग
उत्तम पुरुष	सामान्य	मैं	हम

§5§ सर्वनाम

अर्थ एवं प्रयोग के आधार पर हिन्दी सर्वनामों के निम्नांकित भेद है - पुरुष वाचक, निश्चय वाचक, अनिश्चय वाचक, निज वाचक, प्रश्न वाचक और संबंध वाचक ।

§1§ पुरुष वाचक सर्वनाम

पुरुष वाचक सर्वनाम के तीन रूप है - उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष । कारक के अनुसार उनके रूप :-

उत्तम पुरुष

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	मैं, मैं ने	हम, हमने
कर्म-संप्रदान	मुझे, मुझको	हमें, हमको
करण-अपादान	मुझसे	हमसे
संबन्ध	मेरा/री/रे	हमारा/री/रे
अधिकरण	मुझमें/मुझ पर	हम में/ हम पर

मध्यम पुरुष

कर्ता	तू, तूने	तुम, तुमने
कर्म-संप्रदान	तुझे, तुझको	तुम्हें, तुमको
करण-अपादान	मुझसे	हमसे
संबन्ध	मेरा/री/रे	हमारा/री/रे
अधिकरण	मुझमें/ मुझ पर	हममें/ हम पर

अन्य पुरुष

कर्ता	वह, उसने	वे, उन्होंने
कर्म-संप्रदान	उसे, उसको	उन्हें, उनको

करण-अपादान	उससे	उनसे
संबन्ध	उसका/के/की	उनका/के/की
अधिकरण	उसमें/पर	उनमें/पर

§2§ निश्चय वाचक

निश्चित संकेत करने के लिए निश्चय वाचक सर्वनामों का प्रयोग करते है । इसका निकटवर्ती रूप है - /यह/ ।

§3§ अनिश्चय वाचक

अनिश्चय वाचक सर्वनाम दो है -"कोई" और "कुछ" । "कोई" का प्रयोग किसी प्राणिवाचक संज्ञा के स्थान पर होता है और "कुछ§ का प्रयोग किसी अप्राणिवाचक का प्रयोग किसी अप्राणिवाचक संज्ञा के लिए ।

§4§ निज वाचक

इसके लिए प्रयुक्त रूप है /आप/

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	आप	आप
कर्म	अपनें को	अपने को
संबन्ध	अपना/अपनी	अपना/अपनी

§5§ प्रश्न वाचक

प्रश्न वाचक सर्वनाम के लिए दो रूप प्रचलित है - "कौन" और "क्या" । "कौन" का प्रयोग किसी प्राणि वाचक संज्ञा के लिए होता है और "क्या" का प्रयोग किसी अप्राणिवाचक संज्ञा के लिए ।

§6§ संबन्ध वाचक

संबन्ध वाचक सर्वनाम के लिए जो और सो का प्रचलन है ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता §ऋजु§	जो	जो
§तिर्यक§	जिसने	जिन/जिन्होंने
कर्म	जिसे/जिसको	जिन्हें/जिनको
करण	जिससे	जिनसे
संबन्ध	जिसका/की/के	जिनका/की/के

§7§ विशेषण

हिन्दी में सामान्यतः तीन प्रकार के विशेषण प्रचलित है । गुण वाचक, संख्या वाचक तथा सार्वनामिक । रूप रचना की दृष्टि से यह दो वर्गों में विभक्त है - रूपान्तर सहित और रूपान्तर रहित ।

रूपान्तर सहित विशेषण

सामान्यतः रूपान्तर सहित विशेषण अकारान्त होते है । लिंग वचन के कारण उनका रूप बदलता है । पुल्लिंग द्योतक गुणबोधक विशेषण शब्द "नीला" से इसका विश्लेषण प्रस्तुत है -

	एकवचन	बहुवचन
पुल्लिंग	नीला	नीले
	नीले	नीले
स्त्रीलिंग	नीली	नीली

रूपान्तर रहित विशेषण

रूपान्तर रहित विशेषण के अन्तर्गत विशेषण के सभी भेदों - भेद के उदाहरण मिलते है -

गुणवाचक - लाल - सुन्दर

संख्यावाचक - चार - पांच-बीस

§8§ क्रिया

रचना की दृष्टि से हिन्दी में धातुओं के दो भेद मिलते हैं । मूल तथा यौगिक । मूल धातु वह है जिसकी रचना में किसी प्रत्यय की सहायता नहीं लेती है जैसे - चल, पढ, लिख । यौगिक धातु की रचना शब्दों या प्रत्ययों की सहायता से होती है - चल§ना§, लिख§ना§, पढ§ना§ । रूपिम के विचार से हिन्दी के यौगिक धातुओं के दो वर्ग है - नाम धातु तथा प्रेरणार्थ ।

नाम धातु

यह मौलिक रूप से धातु नहीं है । वस्तुतः संज्ञा अथवा विशेषण के अन्त में प्रत्यय के योग द्वारा जो रूप बनाए जाते है उन्हें नाम धातु कहते हैं । जैसे - स्वीकार§ना§, त्याग§ना§, खरीद§ना§ ।

प्रेरणार्थक

प्रेरणार्थक धातु मूल धातु का विकृत रूप है । मूल धातु के जिस विकृत रूप से यह बोध हो कि कर्ता स्वयं कार्य व्यापार न कर किसी दूसरे को कार्य करने को प्रेरित करना हो तो उसे प्रेरणार्थक धातु कहते है । प्रेरणार्थक धातु से प्रेरणार्थक क्रिया की रचना होती है ।

जैसे - सीख - सिखाना - सिखवाना

प्रेरणार्थक क्रिया के दो रूप मिलते है - §1§ प्रथम प्रेरणार्थक §2§ द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया ।

मूल	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
नाप	नपाना	नपवाना
खा	खिलाना	खिलवाना

कर्म के आधार पर क्रिया

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद है - सकर्मक और अकर्मक ।

सकर्मक - मैं रोटी खाता हूँ ।

राम ने आम खाया ।

द्विकर्मक - वे भूखे को अन्न देते है ।

अकर्मक - मैं जाता हूँ ।

§9§ कृदन्त

कर्तृवाचक कृदन्त

एकवचन पुल्लिंग - जाने वाला - §जाने + वाला§

बहुवचन पुल्लिंग - आने वालों - §आने + वालों§

एकवचन स्त्रीलिंग - पढनेवाली - §पढने + वाली§

बहुवचन स्त्रीलिंग - करनेवाली - §करने + वाली§

वर्तमान कालिक कृदन्त

धातु के अन्त में "ता" बद्ध रूपिम के योग के द्वारा यह कृदन्त की रचना होती है ।

हंसता चेहरा - हंस§ना§ + ता

यह रूप लिंग वचन से भी प्रभावित होते है ।

लिंग - मुस्कुराती आँखें - मुस्कुरा§ना§ + ती

वचन - नाचते मोर - नाच§ना§ + ते

भूतकालिक कृदन्त

सामान्यतः क्रिया धातु के अन्त में "आ" रूपिम के योग के द्वारा भूतकालिक कृदन्त की रचना होती है । किन्तु इसका स्पष्ट रूप अकार

वर्ण वाले धातु के साथ ही दृष्टि गत है । यदि धातु "अ" कार वर्णान्त हो तो अन्त्य "अ" "आ" हो जाता है ।

लिख - लिखा + {आ}

चल - चला + {आ}

यदि धातु अकारान्त, एकारान्त अथवा ओकारान्त हो तो धातु के बाद य कारागम होता है तथा उसके बाद "आ" का योग होता है ।

खा{ना} - खा या - खा+{ख+ य् + आ}

आ{ना} - आ या - आ+{आ+ य् + आ}

प्रयोग के आधार पर क्रिया

लिंग और वचन के अनुसार हिन्दी में क्रिया के तीन प्रयोग होते है - जैसे - कर्तरी प्रयोग, कर्मणी प्रयोग और भावे प्रयोग ।

कर्तरि प्रयोग

कर्ता के साथ स्वतंत्र रूपिम के रूप में ने अथवा शून्य /ø/ परसर्ग का योग हो । किन्तु कर्म के साथ केवल /ø/ शून्य परसर्ग का योग हो तो वैसी स्थिति में क्रिया कर्ता के लिंग वचन का अनुगमन करती है । ऐसे प्रयोग को कर्तरि प्रयोग कहते है ।

जैसे - राम आम खाता है ।

लीला किताब पढती है ।

कर्मणी प्रयोग

स्वतंत्र रूपिम के रूप में कर्ता के साथ /ने/ परसर्ग हो और कर्म का परसर्ग शून्य /ø/ हो तो क्रिया कर्म के लिंग वचन के अनुसार बदलता है । जैसे - राम ने रोटी खायी ।

राधा ने भात खाया ।

भावे प्रयोग

यदि कर्ता के साथ स्वतंत्र रूपिम के रूप में /ने/ परसर्ग का योग हो और कर्म के साथ उसमें /को/ परसर्ग भी रहे तो वैसी स्थिति में क्रिया न तो कर्ता के लिंग वचन का अनुगमन करती है और न कर्म के । जैसे - "लडके ने लडकी को देखा" ।

मलयालम के रूपिम

रचना और प्रयोग के अनुसार मलयालम के रूपिम

रचना और प्रयोग के अनुसार मलयालम के रूपिम के दो भेद है - मुक्त रूपिम और बद्ध रूपिम ।

§क§ मुक्त रूपिम

मुक्त रूपिम बिना किसी संयोजन से भी अपना अर्थ बनाए रखते हैं ।[9] मलयालम में - अम्म §माँ§, वर §लकीर§, निर §पंक्ति§ आदि मुक्त रूपिम के उदाहरण है ।

§ख§ बद्ध रूपिम

बद्ध रूपिम विभक्ति अथवा प्रत्यय का रूप है, जो किसी मुक्त रूपिम से मिलकर उसके अर्थगत विकार में परिवर्तन लाता है । जैसे - कुट्टिकळ - कुट्टि+कळ - §बच्चे§, अम्ममार् - अम्म+मार - §माताएँ§, अयिरमाण्ड - अयिरम+आण्ड - §हज़ार साल§ ।

वितरण के आधार पर मलयालम के रूपिम

वितरण के आधार पर मलयालम के रूपिम के दो भेद है - एक रूपिम और बहु रूपिम ।

§क§ एक रूपिम

एक रूपिम जो है जिसमें मुक्त भी हो सकता है और बद्ध भी ।

मुक्त रूपिम - जैसे - पच्च् - §हरा रंग§, पल्लॅ - §दाँत§, कण्णॅ - §आँख§, पट्टि - §कुत्त§

बहु रूपिम - जैसे - उप, उ, कु, कल, आर..... ।

§ख§ बहु रूपिम

बहु रूपिम जो है जिसमें एक से अधिक रूपिम हो । इसके प्रमुखतः दो भेद है - मिश्र रूपिम और यौगिक रूपिम ।

§अ§ मिश्र रूपिम

मुक्त + बद्ध - जन + त - जनत - §जनता§

बद्ध + मुक्त - अ + नीति - अनीति - §अनीति§

मुक्त + बद्ध + बद्ध - कुञ्ञु + उन् + कल् - कुञ्ञुक्कल §बच्चे§

बद्ध + मुक्त + बद्ध - अ + धर्म + अम् - अधर्मम् §अधर्म§

बद्ध + बद्ध + मुक्त + बद्ध - अ + वि + श्वास + इ - अविश्वासि - अविश्वासी ।

§आ§ यौगिक

मुक्त + मुक्त - राष्ट्र + पितावॅ - राष्ट्र पितावॅ - §राष्ट्रपिता§

मुक्त + मुक्त + बद्ध - अच्चन् + अम्म + आर - अच्चनम्मआर - §माता पिता§

बद्ध + मुक्त + बद्ध - मू + कण् + अन - मूक्कण्णन - §तीन आँखोंवाला§

मुक्त + बद्ध + मुक्त + बद्ध - तिरुत् + अल + वाद + इ - तिरुत्तलुवादि - सुधारक

बद्ध + मुक्त + मुक्त - आ + धार + शिल - आधारशिल - §आधारशिला§

मुक्त + मुक्त + बद्ध + मुक्त - सर्व + कल + आ + शाल - सर्वकलाशाल - §विश्वविद्यालय§

मुक्त + मुक्त + बद्ध + बद्ध - सह + धर्म + इन + इ - सहधर्मिणि - §सहधर्मिणी§

बद्ध + मुक्त + मुक्त + बद्ध - प्रति + क्रिया + वाद + इ - §प्रतिक्रियावादि§

बद्ध + मुक्त + बद्ध + बद्ध - अनु + करण + ईय + अम - अनुकरणीयम - §अनुकरणीय§

मुक्त + बद्ध + बद्ध + मुक्त + बद्ध - महत् + त्व + आ + काक्षा + इ - §महत्वाकांक्षी §

रूपिम विश्लेषण

मलयालम में रूपिम विश्लेषण की दो पद्धतियां है - अर्थ पद्धति और रूप पद्धति । अर्थ पद्धति के अनुसार रूपमीय विश्लेषण के मुख्य आधार अर्थ है । §2§ रूप पद्धति के अनुसार - शब्द का अर्थ प्रयोग और प्रसंग के अनुसार लगाया जा सकता है । मलयालम में ऐसे अनेक शब्द है, जिनके एक से अधिक अर्थ प्रचलित है - जैसे - करि - §हाथी, कोयला§, कलभम् - §हाथी - चन्दन लेप§, करम् - §हाथ, कर§, अर्थम - §धन, सार§ अरि -§शत्रु, चावल§, रागम् - §स्नेह, संगीत, लाल रंग§ आदि अनेक शब्द प्रचलित होते है ।

अर्थ और कार्य के आधार पर मलयालम के रूपिम

अर्थ और कार्य के आधार पर मलयालम के रूपिम के दो भेद है - अर्थ तत्व और संबन्ध तत्व ।

§1§ अर्थ तत्व

"कुट्टिकल मैदानत्तिल कळिक्कुन्नु" इस वाक्य में अर्थ तत्व वाला शब्द है - कुट्टि - मैदानम् और कळि - §बच्चे मैदान में खेलते हैं§ और संबंध तत्व वाला शब्द है - कळ, इल और कुन्नु ।

§2§ संबन्ध तत्व

उपर्युक्त वाक्य के संबंध तत्व वाला शब्द है - कळ, इल और कुन्नु । ये शब्द शब्द के सही भाव को व्यक्त करने में सहायक होते है ।

संबंध तत्व के आधार पर मलयालम के रूपिम

मलयालम की आकृति प्रकृति के आधार संबंध तत्व दर्शी रूपिम के निम्नांकित भेद है -[10]

§1§ मुक्त रूपिम योग

इसमें विभिन्न शब्द रूपों का योग होता है ।

संज्ञा + संज्ञा - पुष्पक्कटवॅ - पुष्प + कटवॅ - §पनघट§ - संज्ञा

संज्ञा + संज्ञा - विद्यालयम् - विद्य + आलयम् - §विद्यालय§ - संज्ञा

" + " - मणिकुटम - मणि + कूटम् - §घटा§ - संज्ञा

संज्ञा + संज्ञा - पुण्यात्मावॅ - पुण्यम् + आत्मावॅ - §पुण्यात्मा§ - विशेषण

संज्ञा + संज्ञा - रावुम पकलुम - राव् + पकल् - §दिन रात§ - अव्यय

संज्ञा + विशेषण - मत भ्रान्तॅ - मत + भ्रान्त - §धर्मान्धता§ - विशेषण

संज्ञा + विशेषण - प्राणप्रियन - प्राण + प्रियन - §प्राणप्रिय§ - विशेषण

संज्ञा + क्रिया - कुलम्कोरि - कुलम् + कोरि - §कुदाली§ - - ---

संज्ञा + क्रिया - कण्णुकटि - कण् + कटि - § §

संज्ञा + अव्यय - जलजातम - जल + जातम - §जलज§ - संज्ञा

संज्ञा + अव्यय - कल्पनपोले - कल्पन् + पोले - §आदेशानुसार§ - --

विशेषण + संज्ञा - करुत्त पशु - करुत्त + पशु - §काला गाय§

विशेषण + संज्ञा - नाषि अरि - नाषि + अरि - §सवा सेर चावल§

विशेषण + संज्ञा - पेरुंपरा - पेरुं + परा - §नगाडा§

विशेषण + संज्ञा - करिम्पुलि - करिम + पुलि -

विशेषण + विशेषण - श्यामसुन्दर - श्याम + सुन्दर - §श्यामसुन्दर§

क्रिया + संज्ञा - चल चित्रम - चल + चित्रम - §चलचित्र§

क्रिया + क्रिया - वन्नुपोय - वन्नु + पोय - §आया गया§

अव्यय + अव्यय - यथाविधि - यथा + विधि - §यथाविधि§

§2§ रूपिम योग

पूर्व रूपिम योग

मूल रूप के साथ बद्ध रूपिम के योग से पूर्व रूपिम योग का निर्माण होता है । 22

पूर्व रूपिम	मूल शब्द	निर्मित शब्द
अ	आळ	अयाळ - §यह-ये§
आ	मातिरि	आमातिरि - §उसी प्रकार§
आ	विधम्	आविधम् - §उसी प्रकार§
आण्	कुट्टि	आण्कुट्टि - §लडका§
इ	आळ	इयाळ - §यह-ये§
नल्	मुत्तँ	नन्मुत्तँ - §मोती§
तिरु	मुखम्	तिरुमुखं - §चेहरा§ (राजा का)
चेम्	तामर	चेन्तामर - §जलज§
वन्	तेन	वन्तेन - §मधु§
चेरु	पयर	चेरुपयर - § §
तिरु	ओणम	तिरुओणम - §ओणम§
पर	देशि	परदेशि - §परदेशी§
पेण्	पट्टि	पेण्पट्टि - §कुत्तिया§
पेट्ट	अम्म	पेट्टअम्मा - §माँ§
नेल्	मणि	नेन्मणि
तल	काल्म	तल्कालम
मण्	तरि	मण्तरि
पेण्	कुट्टि	पेण्कुट्टि - §लडकी§
विण्	तलम	विण्तलम - §आकाश§
एरि	ती	एरितती - §जलता आग§
कु	मार्गी	कुमार्गी §कुमार्गी§

मध्य रूपिम योग

मूल शब्द के मध्य में रूपिम आकर संबंध तत्व यदि एक पृथक स्वतंत्र शब्द का निर्माण करते है तो ऐसे योग को मध्य रूपिम योग कहते है ।

शब्द	मध्य रूपिम	शब्द	निर्मित शब्द
मनस्	आल	कोट्टु	मनस्साल कोट्टु -(मन से दिया)
वटि	आल	तट्टु	वटियाल तट्टु (लकडी से रोका)
अत्	इल	तन्ने	अतिलतन्ने (उसी में ही)
कण्	आल	कण्ड	कण्णाल कण्ड (आँखों से देखा)
तल	कल	पिटिच्चु	तलक्कल पिटिच्चु (सिर पर पकडा)
पटि	कल	चेन्नु	पटिक्कल चेन्नु (दरवाजे पर गया)
निन्न्	ए	कण्डु	निन्नेकण्डु (तुम्हें देखा)
बालन्	ए	पिटिच्चु	बालने पिटिच्चु (बालक को पकडा)

पर रूपिम योग

मूल शब्द	पर रूपिम	निर्मित शब्द
विल्	तु	विट्टु - बेचा
वरु	इन	वरुविन - आइए
वरु	आन	वरुवान - आने को
वरु	ओर	वरुवोर - आनेवाले
धन	आल	धनत्ताल - धन से
केळ्वि	उन्नु	केळ्कुन्नु - सुनता है ।
तटियन्	आय	तटियनाय - मोटा
समर्थन्	आय	समर्थनाय - समर्थ
कुट्टि	कळ	कुट्टिकळ - बच्चे
मरम्	कळ	मरङ्कळ - पेड
आण्	कळ	आणुङळ - मर्द

स्त्री	कळ	स्त्रीकळ - स्त्रियाँ
कुळम	इल	कुळत्तिल - तालाब में
पेण्ण्	इन्टे	पेण्णिन्टे - पेण्णिन्टे
एन्	ए	एन्ने - मुझे
तल्ल्	उन्नु	तल्लुन्नु - मारता है
वटि	आल	वटियाल - लकडी से
घुमट्	कारी	घुमट्टुकारी - मजदूरिन
अत्	इल्ला	अतिल्ला - वह नहीं है ।
कण्डु	वेंक्किल	कण्डुवेक्किल - देखें तो ।
कला	कारन्	कलाकारन् - कलाकार
पूजा	री	पूजारि - पूजारी

मलयालम में ऐसे शब्द भी प्रचलित है, जिनके मूल रूप में एक अथवा एक से अधिक पूर्व रूपिम अथवा पर रूपिम का योग होता है । [12]

मूल में एक पूर्व रूपिम तथा एक पर रूपिम का योग

पूर्व रूपिम	मूल शब्द	पर रूपिम	शब्द
अ	योग्य्	ता	अयोग्यता - अयोग्यता
अ	शरीर	इ	अशरीरि - अशरीरी
नाल्	काल्	इ	नालुकालि - चार पैरों वाला
आण्	कुट्टि	कळ	आणुकुट्टिकळ - लडके
अन्	आचार	अम	अनाचारम - अनाचार

मूल में एक पूर्व रूपिम दो पर रूपिम का योग

पूर्व रूपिम	मूल शब्द	पर रूपिम	शब्द	अर्थ
अ	शोभ	नी + अम्	अशोभनीयम	अशोभनीय
अन्	करण	ई + अम	अनुकरणीयम	अनुकरणीय

पर	देश	अ + त्	परदेशत्व	प्रवास में
अ	राज	क + त्	अराजकता	अराजकता

मूल में दो पूर्व रूपिम और एक पर रूपिम

पूर्व रूपिम	मूल	पर रूपिम	शब्द	
दुर + उप	योग	अम	दुरुपयोगम्	दुरुपयोग
अभि + प्र	आय	अम	अभिप्रायम्	अभिप्राय
सु + आ	गत	अम	स्वागतम्	स्वागत
अ + स	फल	अम	असफलम्	असफल
अ + स	मान	ता	असमानता	असमानता
अन् + आ	चार	अम	अनाचारम्	अनाचार

§3§ आभ्यंतर परिवर्तन

§क§ स्वर परिवर्तन

शिवम् – शैवम् – शैव

§ख§ व्यंजन परिवर्तन –

आदि व्यंजन

मण्णान् – वण्णान् – एक जाति

वानम् – मानम् – आकाश

– [illegible] –

मध्य व्यंजन परिवर्तन

पुकयिल – पोल –

पकुति – पाति – आधा

कच्चवटम् – कच्चोटम – व्यापार

मक्कळ तायम – मक्कत्तायम –

तायवषि – तावषि –

विल्वकुक – विवकुक – बेचना

अन्त्य व्यंजन परिवर्तन

शण्ठ - चण्ट - झकडा

(वलिय - वल्य - बडा)

(ग) समूल परिवर्तन

श्राद्धम् - चात्तम - पुण्यतिथि

कृष्णन् - किट्टन - कृष्ण

ज्येष्ठन - चेट्टन - बडे भाई

लक्ष्मि - एच्चि - लक्ष्मी

(4) शून्य रूप

मलयालम में ऐसे बहुत सारे शब्द है जिन्हें एकवचन से बहुवचन बनाते समय उनके रूप में कोई विकार नहीं आता है - जैसे

एकवचन	बहुवचन
वेळ्ळम्	वेळ्ळम् (०) पानी
सन्तोषम्	सन्तोषम् (०) खुशी
विजयम्	विजयम् (०) विजय

अन्य शब्द

पुर पणि	पुर (०) पणि	घर बनाना
आल मरम्	आल (०) मरम	पीपल का पेड
पाल नुर	पाल (०) नुर	दूध का फेन
तेन तुळ्ळि	तेन (०) तुळ्ळि	मधु कण
काप्पि कुटि	काप्पि (०) कुटि	कॉफि पीना

§5§ स्वतंत्र रूप

मलयालम में कुछ ऐसे स्वतंत्र रूप भी है जो संबन्ध तत्व का काम भी करते है । जैसे - आल्, आयि, ओट्, उटे । उदा:- अत् §वह§, अतिने - §उसे§, अतिनोट् - §उससे§, अतिनाल् §उससे§ अतिल - §उसमें§ ।

§6§ शब्द क्रम

रूप रचना में शब्दों का क्रम निश्चित रहता है[13] । यदि उनके क्रम में परिवर्तन आ जाए तो उनके रूप और अर्थ में अंतर आ जाता है ।

-

वरुम पोक्कुम - आना जाना
तीनुम कुटियुम - खाना पीना
कण्णिल उण्णी - सबसे प्रिय

द्विरावृत्ति

अटि-पिटि - मार-पीट
अटि-तट - मार-रोक
अटा-पिटी - बहुत जल्दी

प्रकार्य के आधार पर मलयालम के रूपिम

§1§ संज्ञा

पदविभाग के आधार पर मलयालम संज्ञा के निम्नांकित भेद है ।

व्यक्ति वाचक संज्ञा - रामन् §राम§, गंगा, भारतम् - भारत
जातिवाचक संज्ञा - नदि §नदी§, मनुष्यन् §मनुष्य§, पर्वतम §पर्वत§
भाव वाचक संज्ञा - सुखम् §सुख§, दुखम् §दु:ख§, हर्षम् §हर्ष§

§2§ लिंग

मलयालम में तीन लिंग है । पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग । संज्ञा शब्दों में पुल्लिंग द्योतक "अन्" स्त्रीलिंग द्योतक "इ" और नपुंसक लिंग द्योतक "अम्" रूपिम के योग होते है ।[14]

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसक लिंग
केमन् - समर्थ	केमि - समर्था	केमम् - सामर्थ्य
कुमारन्-कुमार	कुमारी - कुमारी	कौमारम् - कौमार
कळ्ळन - चोर	कळ्ळि - चोरी करनेवाली	कळ्ळम - चोरी

सर्वनाम शब्दों में पुल्लिंग के लिए "अन्", स्त्रीलिंग को "अल्" और नपुंसक लिंग के लिए "त्" रूपिम का प्रयोग होते है ।

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसक लिंग
अवन् - वह	अवळ - वह	अत् - वह
इवन - यह	इवळ - यह	इत् - यह

सामान्य रूप से पुल्लिंग शब्दों में "अन्" स्त्रीलिंग शब्दों में "अळ्" और नपुंसक लिंग शब्दों में "अत्" का प्रयोग होते है ।

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसक लिंग
मकन् - पुत्र	मकळ् - पुत्री	अत् - वह
पुत्रन् - पुत्र	-	- -
वन्नान् - आया हुआ	वन्नाळ्-आयी हुई	वन्नत् - आया
पोयान्-गया हुआ	पोयाळ्-गयी हुई	पोयत् - गया

कुछ शब्दों में पुल्लिंग के लिए "आरन्" शब्द जोडते है, और स्त्रीलिंग के लिए "आरत्ति" शब्द जोडते है ।

पणक्कारन् - धनिक	पणक्कारत्ति - धनिका
तैरूकारन् - दही वाला	तैरूकारत्ति - दही वाली
पप्पटकारन् - पप्पड बनानेवाला	पप्पडक्कारत्ति - पप्पड बनाने वाली

कुछ पुल्लिंग शब्दों में "अन्" रूपिम का योग है । इसके स्त्रीलिंग रूप बनाने के लिए "च्चि" रूपिम जोडते है ।

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
तटियन § मोटा आदमी§	तटिच्चि (मोटी स्त्री)
मटियन§काम चोर§	मटिच्चि (काम चोर- स्त्री)
चेट्टियान § एक जाति§ (पावड़ बनाने वाला)	चेट्टिच्चि (पावड़ बनाने वाली)

"अर" युक्त पुल्लिंग शब्दों में "यार" बद्ध रूपिम के योग से स्त्रीलिंग शब्द बनाते है -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
वारियर §एक जाति§	वारस्यार
नङ्यार § एक जाति§	नङ्यार
पोतुवाल § एक जाति§	पोतुवालस्यार

भिन्न शब्द रूपों के प्रयोग से

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
अच्चन - पिता	अम्म - माँ
आण् - पुरुष	पेण् - स्त्री
तत्त - पिता	तळ्ळ - माता
आडळ - भाई	पेडळ - बहन
काळ - बैल	पशु - गाय
पोत्त् - भैंस	एरुम - भैंसा
कोम्पन - हाथी	पिटि - हाथिन
मान - हिरण	पेटमान - हिरणी

वचन

मलयालम में दो ही वचन प्रचलित है । एकवचन और बहुवचन । एक का बोध करनेवाला शब्द एक वचन है, तथा अनेक का बोध करनेवाला शब्द बहुवचन । मलयालम में बहुवचन के तीन रूप प्रचलित है - सलिंग बहुवचन, अलिंग बहुवचन और आदर सूचक बहुवचन ।[15] लिंग और वचन दोनों का द्योतन करनेवाला शब्द सलिंग बहुवचन है । लिंग का द्योतन न देनेवाला अलिंग बहुवचन है ।

आदर सूचक बहुवचन आदर व्यक्त करते है ।

सलिंग बहुवचन कळ्ळन्मार - चोर लोग

कळ्ळिकळ - चोरी करनेवाली स्त्रियाँ

अलिंग बहुवचन मरङ्गळ - पेड

वक्कीलन्मार - वकील लोग

आदर सूचक बहुवचन स्वामिकळ - स्वामिन

वाध्यार - अध्यापक

भीष्मर - भीष्म

बहुवचन रूपों के लिए "कळ" और "मार" रूपिमों का प्रयोग होता है ।

जैसे - पक्षिकळ - पक्षियाँ

अम्ममार - माताएं

स्त्री और पुरुष दोनों शब्दों के बहुत्व का बोध देनेवाला रूपिम है "मार" । लेकिन यह आदर सूचक नहीं है ।

एकवचन	बहुवचन
मिटुक्कन - समर्थ	मिटुक्कन्मार
मिटुक्कत्ति - समर्था	मिटुक्कत्तिमार - मिटुक्कत्तिकळ
वेलक्कारन - धोबी	वेलक्कारन्मार, वेलक्कार
वेलक्कारति - धोबिन	वेलक्कारत्तिमार - वेलक्कारत्तिकळ

"अवर" मुक्त रूपिम के प्रयोग से बहुवचन :-

एकवचन	बहुवचन
वाषुन्नवन - राजा	वाषुन्नवर

"मार" रूपिम से - स्त्री और पुरुष दोनों के बहुत्व का बोध होता है ।

एकवचन	बहुवचन
रामन् (राम)	रामन्मार
तट्टान सुनार	तट्टान्मार

अम्म माता अम्ममार

भार्य औरत भार्यमार

लेकिन कुरङन्मार (बन्दर) कुरुक्कन्मार (सियार) कुमन्मार (लोमड़िया)

आदि शब्दों से केवल बहुत्व का बोध होता है - लिंग का द्योतन नहीं है ।

नपुंसक लिंग के शब्दों का बहुवचन द्योतक रूपिम कळ् है - जैसे -

मलकळ - पर्वत, मरङ्ळ - पेड़ ।

"कळ" रूपिम का प्रयोग अन्य लिंग में भी प्रयुक्त होता है -

उण्णिकळ - बच्चे । वेलक्कारत्तिकळ - नौकरानियां

कविकळ - कविजन

पिताक्कळ - पिता

स्त्रीकळ - स्त्रियाँ

आळुकळ - जन

बन्धुक्कळ - बन्धु जन

"अर" रूपिम के योग से बने कुछ पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग रूप में "अर" "कळ्" के रूप में बदल जाता है । जैसे -

बहुवचन

शिष्य शिष्यर् - शिष्यकळ - स्त्रीलिंग

स्वतंत्र रूपिमों के योग से बने बहुवचन शब्द :-

माता + कल	माताक्कल	- माताएँ
राजा + कल	राजावकल	- राजा लोग
गुरु + कल	गुरुक्कल	- गुरुजन
पू + कल	पूक्कल	- फूल
गो + कल	गोक्कल	- गायें

संख्यावाचक नपुंसक लिंग विशेषण शब्दों के बहुवचन बनाने के लिए शून्य रूपिमों का प्रचलन है । जैसे -

पत्तु तेड - दस नारियल

आयिरम रूप - हज़ार रुपए

एट्टु दिक्क - अष्ट दिक्

रूपिमों के योग से बने सर्वनाम

एन् + कल	-	एडल - हम
नम् + अल		नम्मल - हम
आन + कल		अडल - हम
निन् + कल		निडल - तुम
एन + तु		एन्तु - क्या
चिल् + अर		चिलर - कुछ लोग
कुञ्ञ् + अन् + कल		कुञ्ञुडल - बच्चे
पेण् + उन + कल		पेण्णुडल - नारियाँ
आण् + उन + कल		आणुडल - पुरुष

विभक्ति

विभक्ति	रूपिम	उदाहरण
निर्देशिका	रामन् - राम	- - -
प्रतिग्राहिका	ए, ओट्	अतिने - {उसे}, अतिनोट - {उससे}
संयोजिका	हेतु आयि	अतु हेतुआयि { उसके कारण}
	आयि	अतायि - उससे
	कोण्ट	अतुकोण्ट - उसके मारे
	आल	अतिनाल - उससे
	ओट	अतिनोट - उससे
	उटे	अतिलुटे - उससे
उद्देशिका	कोण्ट	अतायिकोण्ट - उसके मारे

प्रयोजिक	इलनिन्नु	अतिलनिन्नु	उससे
	कल निन्नु	अतिड्कल निन्नु	उससे
	इन पेर्क	अतिन पेर्क	उसके लिए
	काल	अतिने काल	उससे
	हेतु वायिट	अतुहेतु आयिट	उसके कारण
संबन्धिका	इन्, इटे	अतिन्टे अवन्टे	उसका
आधारिका	इल वेच्च्	अतिल वेच्च्	उसमें से
	इल	अतिल	उसमें
	इड्कल	अतिड्कल	उस पर
	विषममायि	अत् विषममायि	उसके मारे

व्यंजनान्त शब्दों के साथ "इन" रूपिम जोडने पर विभक्ति के स्वरूप

राजाव् + इन	राजाविन + ए	राजाविने	राजा को
राजाव् + इन	राजाविन् + आल	राजाविनाल्	राजा से
मननस + इन	मनसिन् + ओट	मनस्सिनोट	मन से
कण् + इन	कण्णिन + उ	कण्णिन्	आँख को
आण + इन	आणिन् + टे	आणिन्टे	पुरुष के

पुल्लिंग

विभक्ति	एकवचन	सलिंग बहुवचन	अलिंग बहुवचन
निदेशिका	मकन - पुत्र	मकन्मार - पुत्र	मक्कल - पुत्र
प्रतिग्राहिका	मकने - पुत्र को	मकन्मारे - पुत्रों को	मक्कले - पुत्रों को
संयोजिका	मकनोट - पुत्र से	मकन्मारोट-पुत्रों से	मक्कलोट - पुत्रों से
उद्देशिका	मकन् - पुत्र को	मकन्मार्क -पुत्रों को	मक्कलुक - पुत्रों को
प्रयोजिका	मकनाल - पुत्र से	मकन्माराल-पुत्रों से	मक्कलाल - पुत्रों से
संबन्धिका	मकन्टे - पुत्र का	मकन्मारुटे-पुत्रों का	मक्कलुटे - पुत्रों का
आधारिका	मकनिल-पुत्र पर	मकन्मारिल-पुत्रों पर	मक्कलिल - पुत्रों पर
संबोधन	मकन - हे पुत्र	मकन्मारे-हे पुत्रों	मक्कले - हे पुत्रों

स्त्रीलिंग

निदेशिका	मकल	पुत्री
प्रतिग्राहिका	मकले	पुत्री को
संयोजिका	मकलोट	पुत्री से
उद्देशिका	मकलक्	पुत्री को
प्रयोजिका	मकलाल	पुत्री से
संबन्धिका	मकलुटे	पुत्री के
आधारिका	मकलिल	पुत्री पर
संबोधन	मकल	हे पुत्री

नपुंसक लिंग

	ए: वचन	ब: वचन
निर्देशिका	मरम् - पेड	मरङ्ङल- पेड
प्रतिग्राहिका	मरते, मरत्तिने } पेड को	मरङ्ङले - पेडों को
संयोजिका	मरत्तोट, मरत्तिनोट } पेड से	मरङ्ङोट - पेडों से
उद्देशिका	मरत्तिन् - पेडको	मरङ्ङुक - पेडों को
प्रयोजिका	मरत्ताल, मरत्तिनाल } पेड से	मरङ्ङलाल- पेडों से
संबन्धिक	मरत्तिन्टे, मरत्तिनुक्क } पेड के	मरङ्ङुटे - पेडों के
आधारिका	मरत्तिल - पेड पर	मरङ्ङिल - पेडों पर
संबोधन	मरम - हे पेड	मरङ्ङले - हे पेडों

पुरुष

मलयालम में पुरुष के तीन रूप प्रचलित है - उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष ।

	एकवचन	बहुवचन	
उत्तम पुरुष	ञान - मैं	ञडल	
		नम्मल	हम
		नाम	
मध्यम पुरुष	नी - तू	निडल	तुम
	तान - तू	ताड्कल	
अन्य पुरुष	अवन - वह	अवर - वे	
	इवन - यह	इवर - ये	

सर्वनाम

प्रयोग के आधार पर मलयालम के सर्वनाम के निम्न लिखित रूप प्रयुक्त होते है -

(1) पुरुषवाचक सर्वनाम

इसके तीन रूप प्रचलित है - उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष (या) प्रथम पुरुष ।

उत्तम पुरुष

एकवचन	बहुवचन	
ञान् - मैं	ञडल	
एन्टे - मेरा	नम्मल	हम
एन्निले - मुझमें	नाम	

मध्यम पुरुष

एकवचन	बहुवचन
नी - तू	निडल - तुम
तान - तू	ताड्कल - तुम

आदर सूचक

अड - आप

अविड्न्नु - आप

अन्य पुरुष

एकवचन	बहुवचन
अवन् - वह	अवर - वे
इवर - यह	इवर - ये
अवळ - वह (स्त्री)	
इवळ - यह (स्त्री)	
अत् - वह	
इत् - यह	

विवेचक सर्वनाम

अवन -(वह), इवन -(यह), ओरु वन - (कोई)

व्यपेक्षक - एवन -(कौन) एविटम - (कहाँ) यावन - (कौन)
यातोन्नु - (कौन सा)

प्रश्नवाचक - एतु - (कौन सा) आर (कौन) एन्तु (क्या)

नाना सर्वनाम - चिलर -(कुछ लोग) चिलत् (कुछ) पलर - (कई लोग)
पलत् (कई)

निर्दिष्ट वाचक - इन्नवन (वह) इन्नवर (वे लोग) इन्नत् (वह)

सर्व वाचक - एल्लाम-- ओक्के - (सब)

स्व वाचक - तन्टे - (मेरा) तङ्लुटे - (मेरे)

अंश वाचक - मिक्कतुम - मिक्कवारुम - (सब कुछ)

अन्य वाचक - मट्टुळ्ळवन - (दूसरा कोई) मट्टुळ्ळत् - (दूसरा)

अनास्था वाचक - वल्लतुम (कोई) वल्लवन् (कोई) वल्लपाटुम (कैसे भी हो)

विशेषण

विशेषण शब्द जिस शब्द की विशेषता स्पष्ट करता है उस शब्द को विशेषण कहते है - विशेष्य के मलयालम के विशेषण के तीन भेद है ।

§1§ नाम विशेषण

यह विशेषण नाम शब्दों की विशेषता स्पष्ट करती है ।

ओट्टुन्न वण्डि - चलती गाडी

करुत्त पशु - काली गाय

§2§ क्रिया विशेषण

यह क्रिया शब्दों की विशेषता स्पष्ट करती है ।

वेगत्तिल नटक्कुन्नु - जल्दी चलता है ।

पतुके परयुन्नु - धीरे बोलता है ।

§3§ विशेष-विशेषण

यह विशेषण शब्दों की विशेषता व्यक्त करती है -

वळरे पतुक्के नटक्कुन्नु - बहुत धीरे चलता है

वळरे नल्ल पुस्तकम् - बहुत अच्छी किताब

प्रकृति के अनुसार मलयालम के विशेषण

मूल विशेषण

इसमें क्रिया धातु ही विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है ।

नरुतेन - शुद्ध मधु

तिरु मुखम् - राजा के चेहरा

तू निलाव - चांदनी

साधारणत: यह संज्ञा शब्दों के साथ प्रयुक्त होता है ।

सार्वनामिक विशेषण

इसमें सर्वनाम शब्द विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है ।

एन्टे वीटु - मेरा घर, एन्तु कार्यम् - कौन सी बात

ई मरम - यह पेड, एल्ला मनुष्यरुम - सारे मनुष्य

§3§ संख्या वाचक विशेषण

इसमें संख्या की विशेषता व्यक्त होती है ।

रण्टु कुट्टिकळ - दो बच्चे

इरू करङळ - दो हाथ

§4§ परिमाण वोधक इसमें परिमाण का बोध होता है ।

एत्र दिवसम् - कितना दिन

नाल् मासम् - चार महीने

§5§ गुणवाचक विशेषण - इसमें विशेष्य के गुण व्यक्त होता है ।

मिटुक्कनाय कुट्टि - समर्थ बालक

तटियनाय मनुष्यन् - मोटा आदमी

मनोहरमाय पुष्पम् - सुन्दर फूल

§6§ संज्ञा वाचक - संज्ञा शब्दों की विशेषता प्रकट करती है ।

वेळुत्त पशु - सफेद गाय

करुत्त पट्टि - काला कुत्ता

विरिञ्ञ पूव् - खिला फूल

§7§ क्रिया वाचक - इसमें विशेषण के रूप में क्रियांग शब्दों का प्रयोग होता है ।

कूटे पोकुन्नु - साथ जाता है ।

उरक्के विळिच्चु - ज़ोर से बुलाया

क्रिया

कर्म के आधार पर क्रिया के भेद -

सकर्मक क्रिया

राजु चित्रम् वरक्कुन्नु - राजु चित्र खींचता है ।

रामन माड तिन्नुन्नु - राम आम खाता है ।

अकर्मक क्रिया

सूर्यन उदिक्कुन्नु - सूर्योदय होता है ।

कुट्टि उरङुन्नु - बच्चा सोता है ।

क्रिया धातु के आधार पर

मूल क्रिया	प्रेरणार्थक क्रिया
उटयुन्नु - टूटता है ।	उटयुकुन्नु - टूटाता है ।
ओटुन्नु - दौडता है ।	ओडिक्कुन्नु - दौडाता है ।
पढिक्कुन्नु - सीखता है ।	पढिप्पिक्कुन्नु - सिखाता है ।

नाम धातु

पुक - धुआँ - पुकयुन्नु - धुआता है ।
चुम - श्वांस - चुमयुकुन्नु - स्वांसता है ।
अक - फंस - अकप्पेडुन्नु - फंस जाता है ।

प्रयोग के आधार पर मलयालम में क्रिया के - संस्कृत के समान तीन रूप है । लेकिन इसमें केवल कर्तरि प्रयोग ही मुख्य है । कर्मणि प्रयोग और भावे प्रयोग का प्रयोग बहुत कम है । क्योंकि मलयालम में इसके प्रयोग की जुरूरी नहीं है ।

संदर्भ :-

1. भाषाशास्त्र की रूपरेखा - उदयनारायण तिवारी - पृ. 151
2. भाषा विज्ञान कोश - भोलानाथ तिवारी - पृ. 558
3. Language - Bloomfield, Page 230
4. भाषाविज्ञान कोश - भोलानाथ तिवारी - पृ. 558
5. हिन्दी व्याकरण - कामताप्रसाद गुरु - पृ. 47
6. हिन्दी भाषा की रूपसंरचना (सं) भोलानाथ तिवारी - बीना श्रीवास्तव - पृ. 42
7. हिन्दी भाषा की रूपसंरचना - कैलाशचन्द्र भाटिया - पृ. 201
8. भाषाशास्त्र की रूपरेखा - उदयनारायण तिवारी - पृ. 167
9. भाषा साहिति - एन एन मूसत् - पृ. 14
10. व्याकरण मित्रम् - एम्. शेषगिरी प्रभु - पृ. 77
11. केरल पाणिनीयम् - ए.आर. राजराज वर्मा - पृ. 100
12. Malayalam Verbalforms - Probodha Chandran, Page 109
13. प्रयोग दीपिका - पी.के. नारायण पिल्लै - पृ. 124
14. Malayalam Grammar & Reader - Dr. K.M. George, Page 55
15. Malayalam Grammar & Reader - Dr. K.M. George, Page 65

छठा अध्याय

हिन्दी और मलयालम के रूपिमों का तुलनात्मक अध्ययन

हिन्दी और मलयालम के रूपिमों का तुलनात्मक अध्ययन

हिन्दी और मलयालम विभिन्न परिवार की विभिन्न प्रदेशों में बोली जाने वाली भाषाएँ है । फिर भी ये भारत उपखंड की दो साहित्य संपुष्ट एवं गरिमामई भाषाएँ हैं । अतः इनमें कुछ समानताओं का होना अचरज की बात नहीं है । रूपिमीय विश्लेषण के आधार पर हिन्दी और मलयालम में समानताएं ही मुख्य है । लेकिन एकाध संदर्भ में विषमताएं भी दर्शाया जा सकती है ।

रूपीय प्रक्रिया के विश्लेषण के लिए अर्थ तत्व और संबन्ध तत्व महत्वपूर्ण आधार है, जो सहपदों के सहारे भाषा विश्लेषण की क्षमता रखते हैं । ये सहपद भी भाषा-विशेष की आकृति-प्रकृति के अनुरूप स्वच्छन्द रूप से निर्मित होते है । उनके निर्धारण और वितरण भी भाषा की आकृति-प्रकृति के अनुरूप होते है ।

रूपिम निर्धारण के मुख्य आधार है -

1. रचना और प्रयोग
2. संबन्ध तत्व
3. अर्थ और कार्य ।

1. रचना और प्रयोग के आधार पर

हिन्दी और मलयालम के रूपिम के दो भेद है - मुक्त रूपिम और बद्ध रूपिम । इनके अनुरूप विश्लेषण करने पर दोनों भाषाओं में निम्न प्रकार के रूप मिलते है - मुक्त रूपिम और बद्ध रूपिम ।

मुक्त रूपिम	हिन्दी	मलयालम
	आम	अम्म - {माँ}
	केला	निर - {पंक्ति}

बद्ध रूपिम

हिन्दी	मलयालम
एक/ता - एकता	कुट्टि/कळ - {बच्चे}
लिख/आवट-लिखावट	अम्म/मार - {माताएँ}

वितरण के आधार पर हिन्दी और मलयालम के रूपिमों के दो भेद है - एक रूपिम और बहुरूपिम ।

एक रूपिम

हिन्दी	मलयालम
प्राण	पच्च - {हरा रंग}
चाह	पल्लु - {दाँत}

बहुरूपिम

इसके दो भेद है - मिश्र और यौगिक

	हिन्दी	मलयालम
मिश्र	अनीति	कुञ्ञुळ - {बच्चे}
	भारतीयता	अधर्मम - {अधर्म}
यौगिक	राष्ट्रभाषा	आधारशिल - {आधारशिला}
	भारतवासी	सर्वकलाशाला - {विश्वविद्यालय}

हिन्दी और मलयालम में रूपिमीय विश्लेषण की दो पद्धतियाँ प्रयुक्त होती है - अर्थ पद्धति और रूप पद्धति । अर्थ पद्धति का आधार शब्द का अर्थ है । रूप पद्धति में शब्द का अर्थ प्रयोग और प्रसंग के अनुसार लगाया जाता है । दोनों भाषाओं में ऐसे कई शब्द प्रचलित है जिनका एक से अधिक अर्थ होते हैं । जैसे -

हिन्दी	मलयालम
कर - हाथ, कर	करि - हाथी {कोयला}
पंख -	करम - हाथ {कर}
कनल - सोना - धतूरा	अर्थम् - सार {धन}

अर्थ और कार्य के आधार पर हिन्दी और मलयालम के रूपिमों के दो भेद है - अर्थ तत्व और संबन्ध तत्व ।

अर्थ तत्व -

हिन्दी - राम/मैदान/में/खेल/ता/ है ।

मलयालम - कुट्टि/कळ/ मैदान/त्तिल/ कळि/क्कुन्नु ।

बच्चे/मैदान/में/खेल/ते/ है ।

संबन्ध तत्व -

हिन्दी - राम/मैदान/में/ खेल/ता/ है ।

मलयालम - कुट्टि/कल/ मैदान/त्तिल/ कळि/क्कुन्नु/

बच्चे मैदान में खेलते है ।

2. संबन्ध तत्व के आधार पर रूपिम

संबन्ध तत्व के आधार पर रूपिम के निम्नांकित भेद है - मुक्त रूपिम योग, रूपिम योग, आभ्यंतर परिवर्तन, शून्य रूप, स्वतंत्र रूप, शब्द क्रम तथा द्विरावृत्ति ।

मुक्त रूपिम योग

हिन्दी	मलयालम
जल/जात	पुष्प/वकुवें - {पनघट}
प्राण/प्रिय	मत/भ्रान्तें - {धर्मान्धता}
त्रिलोचन	करूत्त/पशु - {काली गाय}

रूपिम योग

रूपिम योग के अन्तर्गत दोनों भाषाओं में पूर्व रूपिम योग

तथा पर रूपिम योग के रूप मिलते हैं । किन्तु दोनों में मध्य रूपिम योग का रूप स्पष्ट नहीं है । हिन्दी में पूर्व रूपिम योग और पर रूपिम योग सुस्पष्ट है । हिन्दी में ऐसे शब्द भी मुक्त रूप से प्रचलित है जिनमें केवल पूर्व रूपिम अथवा पर रूपिम का ही योग नहीं होता, बल्कि प्रातिपादिक के पूर्व और पर दोनों ही स्थितियों में रूपिमों का योग होता है ।

रूपिम योग	[redacted]	मलयालम
पूर्व रूपिम योग	[redacted]	अयाळ् - {वह आदमी}
	[redacted]	आकुट्टि - {वह लड़का}
	[redacted]	परदेशि - {परदेशी}
मध्य रूपिम योग	-	-
पर रूपिम योग	हिन्दी	मलयालम
	साधक	धनत्ताल - धन से
	भलाई	समर्थनाय - जो समर्थ है वह -

मूल में एकाधिक रूपिमों का योग

हिन्दी	मलयालम
अशरीरी	अयोग्यत - {अयोग्यता}
अनगिनत	नालकालि - {चार पैरों वाला}
अराजकता	अशोभनीयम -{अशोभनीय}

आभ्यंतर परिवर्तन

हिन्दी - स्वर परिवर्तन - शिव - शैव

मलयालम - स्वर परिवर्तन - शिवम् - शैवम्

हिन्दी - व्यंजन परिवर्तन - यमुना - जमुना

" " - आसन - आसीन

मलयालम - " " - वण्णान् - मण्णान् -{एक जाति}

" " - शण्ड - चण्ड - {झकडा}

समूल परिवर्तन

हिन्दी - जाना - गया

मलयालम - श्रादम - यात्तम

" - कृष्णन् - किट्टन - कृष्ण

शून्य रूप

हिन्दी	एकवचन	बहुवचन
	जय	जय/ø/
	मान	मान/ø/
मलयालम	वेल्लम	वेल्लम/ø/ - {पानी}
	विजयम	विजयम/ø/-{विजय}
	पुर/ø/पणि	घर बनाना
	आल् मरम् - आल्/ø/मरम् - पीपल का पेड	

स्वतंत्र रूप

हिन्दी श्याम का घर

स्कूल के पास

मलयालम अति/नाल - उससे

अति/नोट - उससे

अति/न्टे - उसका

शब्द क्रम

शब्द क्रम में शब्दों के क्रम सुनिश्चित होते हैं । उनके क्रम में परिवर्तन होने से उनके द्योतक भाव भी बदल जाते हैं । दोनों भाषाओं में ऐसे कई शब्द भरे पडे हैं ।

हिन्दी थोडा - बहुत

जन - श्रेष्ठ

मलयालम   वरवुम - पोक्कुम - आना-जाना

तीनुम - कुटियुम - खाना-पीना

द्विरावृत्ति

हिन्दी और मलयालम दोनों में द्विरावृत्ति का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है । विभिन्न स्थितियों में आवृत्त शब्द व्याकरणिक कोटियों का दिशा-निर्देश तो करते ही है : भिन्न परिस्थितियों में वे विशेष अर्थ का द्योतन भी करते हैं ।

हिन्दी   काम - काज

रूखा - सूखा

मलयालम   कटि-पिटि - मार-पीट

अटा-पिटि - बहुत-जल्दी

3. अर्थ और कार्य के आधार पर हिन्दी और मलयालम के रूपिमों के विश्लेषण के लिए दो प्रकार के रूपिम - प्रचलित है - अर्थ-दर्शी और संबन्ध दर्शी रूपिम । अर्थ-दर्शी रूपिम भाषाविशेष के प्रचलित पदविभाग है और संबन्धदर्शी रूपिम हैं - व्याकरणिक कोटियाँ । पदविभाजन के लिए भाषा की आकृति-प्रकृति का ध्यान रखना आवश्यक है ।

अर्थ दर्शी और संबन्ध दर्शी रूपिम में सामंजस्य की स्थिति भी आती है अर्थात् पदविभाग के सामंजस्य से रूपिमीय विश्लेषण का कार्य सरल हो जाता है । परंपरित हिन्दी व्याकरण में जिसे विशेषण कहा जाता है, उसके दो प्रकार है - रूपान्तर सहित तथा रूपान्तर रहित । प्रयोग में आने पर रूपान्तर रहित विशेषण में शून्य रूपिम का योग होता है । इसके विपरीत रूपान्तर सहित विशेषण की रचना के लिए मूल विशेषण रूप में भिन्न प्रकार के बद्ध रूपिमों का योग असंभव है ।

संबंधदर्शी रूपिम केलिए हिन्दी और मलयालम में लिंग, वचन, कारक आदि का विश्लेषण होता है । हिन्दी में कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार क्रिया का रूप बदलता है । लेकिन मलयालम में नहीं ।

हिन्दी और मलयालम के रूपिम

संज्ञा	हिन्दी	मलयालम
व्यक्तिवाचक	सिन्धु	रामन् (राम)
	भारत	गंग (गंगा)
जातिवाचक	नदी	पर्वतम्
	घर	वीटु (घर)
भाववाचक	समझ	सुखम् (सुख)
	सुख	सन्तोषम् (सन्तोष)

लिंग

संस्कृत परंपरा की होने पर भी हिन्दी में नपुंसक लिंग का प्रचलन नहीं है । हिन्दी में पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दो लिंगों का प्रयोग होता है । लेकिन मलयालम में नपुंसक लिंग का भी प्रचलन है । इनमें प्रयोग को लेकर एक सामान्य अन्तर यह है कि हिन्दी में क्रियाओं पर लिंग का प्रभाव पडता है, किंतु मलयालम में लिंग के प्रभाव से क्रियारूपों में कोई परिवर्तन नहीं होता ।

हिन्दी	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	बद्धरूपिम
-	लडका ~ लडक	लडकी	ई
	देव	देवी	"
	चमार	चमारिन	इन
	दूल्हा ~ दुल्हे	दुलहिन	"
	पंडित	पंडिताइन	आइन
	लाला ~ लला	ललाइन	"
	सेठ	सेठानी	आनी
	चौधर ~ चौधर	चौधरानी	"

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	बद्धरूपिम
मोर	मोरनी	नी
हाथी ~ हाथि	हथिनी	"
मित्र	मित्र	ø

मलयालम

	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	बद्धरूपिम	नपु. लिंग	बद्धरूपिम
	कुमारन	कुमारि	इ	कौमार्यम्	(अं)
	पणिक्कारन (मज़दूर)	पणिक्कारि	"		
		पणिक्कारत्ति	त्ति		
	तांटियन	तांटोच्चि	च्चि		
	तंपुरान	तंपुराट्टि	ट्टि		
सर्वनाम	अवन् (वह)	अवळ् (वह)		अतु, आ (वह)	

हिन्दी और मलयालम दोनों भाषाओं में दो ही वचन हैं - एक वचन और बहुवचन ।

हिन्दी	एक वचन	बहुवचन	बद्धरूपिम
	बच्चा	बच्चे	ए
	लड़की ~ लड़कि	लड़कियां	आं
	बात	बातें	एं
	लड़के	लड़कों	ओं
	लड़के	लड़को	ओ
		संबोधन	
	घर	घर	ø

मलयालम

एक वचन	बहुवचन	बद्धरूपिम
पुरुषन्	पुरुषन्मार	मार
भार्य	भार्यमार	"
शूद्रन्	शूद्रन्मार	"
	शूद्रर	

एकवचन	बहुवचन	बद्धरूपिम
अवन	अवर	अवर
मल (छोटा पहाड)	मलकळ	कळ
स्त्री	स्त्रीकळ	"
कवि	कविकळ	"
पक्षि	पक्षिकळ	"
गुरु	गुरुक्कळ	क्कळ
मरम्	मरडळ	ड्ळ
माड (ग्राम)	माड	∅
अ	अव	अ
इ	इव	"
ए	एव	"

कारक

हिन्दी

संबोधन कारक को जोड़कर हिन्दी और मलयालम में कारकों की संख्या आठ हैं.

			रूपिम
कर्ताकारक	- ने	- राम ने किताब पढी ।	ने
		गोपाल ∅ पाठ पढता है ।	∅
कर्मकारक	-	मैं ने पत्र लिखा ।	∅
		कृष्ण ने कंस को मारा ।	को
करणकारक	-	राम ने रावण को बाण से मारा।	से
संप्रदान कारक	-	राजा ने भिखारी को दान दिया ।	को
		जार्ज ने अपने लिए किताब खरीदी ।	केलिए
अपादान कारक		गंगा हिमालय से निकलती है ।	से
संबंध कारक	-	राम का घर; राम के घर ,राम की किताब।	का, के, की
		मेरा घर,मेरे घर,मेरी किताब ।	
		अपना घर,अपने घर,अपनी घर ।	

अधिकरण	-	बाज़ार मे तरकारियाँ नहीं है ।	में
		उसके पैर ज़मीन पर नहीं पड़ते ।	पर
संबोधन	-	हे ईश्वर, हे राम !	

मलयालम

निर्देशिया	-	मलयालम में इसके लिए अलग रूपिम का प्रयोग नहीं है ।	
		सिंहम् ओरु मृगमाण (सिंह एक जानवर है)	ø
		रामन् रावणने कोन्नु (राम ने रावण को मारा)	ø
प्रतिग्राहिका	-	कृष्णन् कंसने कोन्नु (कृष्ण ने कंस को मारा)	क्को
संयोजिका	-	शिवन् शक्तियोट् वेरुन्नु (शिव शक्ति से जुड़ता है)	ने
उद्देशिका	=	अवन् जोलि किट्टि (उसे काम मिला)	उँ
		अवर्क्कु जोलि किट्टि (उन्हें काम मिला)	वक्कु
प्रयोजिका	-	वटियाल् अटिच्चु (लकडी से मारा)	आल्
संबंधिका	-	सीतयुटे वीटु (सीता का घर)	उटे
		रामन्टे वीटु (राम का घर)	न्टे
आधारिका	-	पटिक्कल् निल्कुन्नु (दरवाज़े पर खडा है)	क्कल्
		पेन मेशयिल् उण्टु (कलम मेज़ में है)	इल्
संबोधन	-	किसी को पुकारना या संबोधन करना आदि सूचित होते है ।	
		हे प्रभो !, हे रामा	

हिन्दी और मलयालम के लिंग सूचक रूपिम

हिन्दी और मलयालम में शब्दों के पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के रूप सब कहीं अलग अलग नहीं पाये जाते हैं । अलिंग वाची शब्दों के साथ हिन्दी में नर, मादा और मलयालम में आण् (पुरुष), पेण् (स्त्री) मुक्त रूपिमों को जोड कर पुल्लिंग और स्त्रीलिंग को सूचना दी जाती है । ऐसे कुछ शब्द भी पाये जाते हैं जिनके पुल्लिंग और स्त्रीलिंग रूपों में कोई

अन्तर नहीं होता । इन रूपों में शून्य {0} बद्ध रूपिम के योग की परिकल्पना कर ली जाती है । सामान्यत: बद्धरूपिम जोड़कर पुल्लिंग से स्त्रीलिंग के रूप बनाए जाते हैं । बद्ध रूपिम के जोड़ते समय हिन्दी में मूल शब्द में कभी विकार होता है ।

हिन्दी

हिन्दी में पुल्लिंग व्यंजनान्त और स्वरान्त संज्ञा शब्दों के साथ बद्धरूपिम ई, इन, आइन, नी, आनी, 0 के योग से स्त्रीलिंग शब्दों की रचना होती है । स्वरान्त शब्दों का स्त्रीलिंग रूप बनाते समय अन्तिम स्वर का लोप कर देते हैं और उनमें बद्धरूपिमों के योग से स्त्रीलिंग शब्दों की रूपरचना होती है । स्त्रीलिंग की रचना केलिए/नी/का योग जब स्वरान्त पुल्लिंग शब्दों से होता है तब उनका अन्तिम दीर्घस्वर ह्रस्व हो जाता है । /आइन/ जोड़ते समय एकाध शब्दों का अन्तिम और पूर्ववर्ती दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाते हैं । कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनके पुल्लिंग और स्त्रीलिंग रूप में कोई अन्तर नहीं होता ।

रूपिम	संरूप
[ई]	ई, इन, आइन, आनी, नी, 0

मलयालम

मलयालम में लिंग प्रत्यय एक वचन का प्रत्यय है और शब्द प्रकृति एक वचन का रूप है । "अन्" पुल्लिंग एक वचन का प्रत्यय है । "अन्" के स्थान पर प्रत्यय जोड़कर स्त्रीलिंग के रूप बनाये जाते हैं । "अँ" नपुंसक लिंग का प्रत्यय है । नपुंसकलिंग बनाने के लिए प्रत्यय जोड़ते समय शब्द के मूल रूप में परिवर्तन होता है ।

रूपिम	संरूप	वितरण
[इ]	इ, त्ति	पुल्लिंग संज्ञा के साथ
	अ्	कृदन्त और तद्धितान्त शब्दों के साथ
	च्चि	त्ति के पहले तालव्य ध्वनि के आने पर

रूपिम	संरूप	वितरण
[illegible]	द्वि	

बहुवचन सूचक विभिन्न प्रत्ययों का रूपिमिक विश्लेषण

हिन्दी

लोग, जोडा, जन, वृन्द, गण, दर्जन शब्दों को जोड़कर बहुवचन का बोध कराया जाता है । ऐसे शब्द भी हैं जिनके बहुवचन रूप शून्य प्रत्यय के योग से निर्मित होते हैं । सामान्यतः बहुवचन बनाने के लिए हिन्दी में ए, एँ, ओं, आँ, ओ बदरूपिमों का ही व्यवहार होता है ।

रूपिम	संरूप	वितरण
{ ओं }	ओं	परसर्ग सहित प्रयुक्त होनेवाले संज्ञाओं में
	ओ	संबोधन के सभी शब्दों के साथ
	ए	परसर्ग रहित आकारान्त पुल्लिंग शब्दों के साथ
	एँ	परसर्ग रहित व्यंजनान्त, स्वरान्त स्त्रीलिंग शब्दों के साथ
	आँ	परसर्ग सहित स्त्रीलिंग शब्दों के साथ
	0	परसर्ग रहित रूप के लिए व्यंजनान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त और पुल्लिंग शब्दों के साथ

मलयालम

मलयालम में अलिंग, सलिंग और आदर सूचक बहुवचनों का प्रयोग होता है । हिन्दी के समान मलयालम में एकवचन के साथ गण, जन, वृन्द, जोडी, डसन (दर्जन) जैसे स्वतंत्र शब्द जोड़कर बहुवचन रूप बनाये जाते हैं । ऐसे भी शब्द हैं जिनके बहुवचन रूप शून्य प्रत्यय के योग से निर्मित होते हैं । लेकिन

सामान्यतः बहुवचन बनाने के लिए शब्दान्त में मार, कळ, क्कळ, ङळ, र, ø का प्रयोग होता है। लेकिन मलयालम में संज्ञा सप्रत्यय हो या अप्रत्यय उसका एक ही रूप रहता है।

रूपिम	संरूप	विवरण
{मार}	मार	सलिंग, अलिंग, बहुवचन, आदरसूचक में
	कळ	पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग में।
	क्कळ	कळ के पहले की ध्वनि ओष्ठ्य होने पर
	ङ ळ	अनुस्वार अनुनासिक के साथ आने पर
	ø	नपुंसक बहुवचन के साथ संख्यावाचक विशेषण आने पर
	र	अलिंग और आदर सूचक में

हिन्दी और मलयालम दोनों में दो ही वचन हैं - एकवचन और बहुवचन। दोनों में बहुवचन बनाने की प्रणाली एक ही प्रकार की है। लेकिन मलयालम में हिन्दी के समान सप्रत्यय बहुवचन और अप्रत्यय बहुवचन के रूप भिन्न भिन्न नहीं है। मलयालम आदर सूचक बहुवचन में एक "कळ" प्रत्यय जोडने के बाद "मार" भी जोड दिया जाता है जैसे गुरु- कळ, मार - गुरुक्कन्मार।

कारक प्रत्ययों का रूपिमिक विश्लेषण

संबोधन कारक को जोडकर हिन्दी और मलयालम में कारकों की संख्या आठ है।

हिन्दी

रूपिम	संरूप	विवरण
ने	ने	कर्ता कारक में
को	को	कर्म कारक में

रूपिम	संरूप	वितरण
से	से	करण कारक में
को	को, केलिए	संप्रदान कारक में
से	से	अपादान कारक में
का	का, के, की	संबन्ध कारक में
	ना, ने, नी	निजवाचक सर्वनाम में
	रा, रे, री	उत्तम और मध्यम पुरुष सर्वनामों में
में, पर	में, पर	अधिकरण में
हे	हे	संबोधन में
	०	कर्ता कारक, संप्रदान कर्म कारक अधिकरण में

मलयालम

रूपिम	संरूप	वितरण
ने	ने ०	कर्म कारक में
ओटु	ओटु	करण कारक में
उं	उं, कु	संप्रदान में
आल	आल	प्रयोजिका में
उटे	उटे, न्टे	संबंध कारक में
कल	कल, क्कल, इल	अधिकरण में
हे	हे	संबोधन में
०	०	कर्ता, कर्मकारकों में

मलयालम में कर्मकारक का कोई प्रत्यय नहीं है। हिन्दी और मलयालम में उपर्युक्त संरूपों के अतिरिक्त अन्य अनेक स्वतंत्र शब्दों का भी प्रयोग कारकीय अर्थ के लिए होता है। हिन्दी में ये परसर्ग कभी बद्ध रहते हैं कभी मुक्त। मलयालम में ये बद्ध रहते हैं।

पुरुष

हिन्दी	उत्तम पुरुष	एकवचन	बहुवचन
		मैं	हम
मलयालम	" "	ञान (मैं)	अङ्ङल, नम्मल, नॉम (हम)
हिन्दी	मध्यम पुरुष	तू - तुम	तुम लोग
(आदर सूचक)	"	आप	आप लोग
मलयालम	-	नी-निङ्ङळ	ताङ्कळ- तुम लोग
		ताङ्कळ-तुम लोग	अङ्
हिन्दी	अन्य पुरुष	वह	वे लोग
	(आदर सूचक)	वे	वे लोग
मलयालम		अवन्-वह	अवर - वे लोग
		इवन-यह	इवर - ये लोग
	(आदर सूचक)	अवर - वे	

सर्वनाम

अर्थ और प्रयोग के आधार पर हिन्दी और मलयालम के सर्वनाम

हिन्दी -

पुरूष वाचक - मैं, हम, तू, तुम
- वह, वे

निश्चय वाचक - यह

अनिश्चय वाचक - कोई, कुछ

निज वाचक - आप

प्रश्न वाचक - कौन, क्या

संबन्ध वाचक - जो - सो

मलयालम

पुरूष वाचक - ञान (मैं), ञडल, नम्मल, नॉम (हम)
नी (तू), निडल - तुम
अवन्, वह, अवर वे

विवेचक - अवन-वह, इवन-यह

प्रश्नवाचक - एतु - कौन सा, और कौन, एन्तु - क्या

सर्वनामक - एल्लाम, ओक्के - सब

मलयालम के पुरूष वाचक सर्वनाम के बहुवचन रूप तीन है - जैसे - डल, नम्मल, नॉम (हम) । लेकिन हिन्दी में इन तीनों रूपों के लिए एक ही रूपिम का प्रयोग होता है -"हम" ।

विशेषण

हिन्दी

रूपान्तर सहित एकवचन बहुवचन

पुल्लिंग	नीला	नीले
	नीले	नील
स्त्रीलिंग	नीली	नीली

रूपान्तर सहित

गुणवाचक लाल - सुन्दर
चार - पाँच

<u>मलयालम</u>

नाम विशेषण - ओटुन्न वण्डि - {चलती गाडी}

क्रिया विशेषण - वेगत्तिल नटक्कुन्नु - {जल्दी चलता है ।}

विशेष विशेषण - वळरे नल्ल पुस्तकम् - {बहुत अच्छी पुस्तक ।}

<u>प्रकृति के अनुसार विशेषण</u>

मूल विशेषण - नरू तेन { शुद्ध शहद}

सार्वनामिक विशेषण - एन्टे वीट् {मेरा घर}

परिमाण वाचक - एत्र दिवसम् {कितने दिन}

गुणवाचक - मिटुक्कनाय कुट्टि { समर्थ बालक }

संज्ञा वाचक - विरिञ्ञपूव् -{खिला फूल }

क्रिया वाचक - कूटे पोकुन्नु -{साथ जाता है ।}

<u>क्रिया</u> <u>हिन्दी</u>

नाम धातु - स्वीकार-ना
त्याग-ना

<u>कर्म के आधार पर</u>

सकर्मक - मैं रोटी खाता हूँ ।

द्विकर्मक - वे भूखे को अन्न देते है ।

अकर्मक - मैं जाता हूँ ।

मलयालम

कर्म के आधार पर

सकर्मक - राजु चित्रम वरक्कुन्नु ।
राजु चित्र खींचता है ।

अकर्मक - सूर्यन उदिक्कुन्नु ।
सूर्य उदित होता है ।

क्रिया धातु के आधार पर

मूल क्रिया
उटयुन्नु - टूटता है
प्रेरणार्थक क्रिया -
- [illegible] है ।

मूल - नामधातु - पुक - धुआँ
प्रेरणार्थक क्रिया -
पुकयुन्नु - धुआता है ।

भाषा विश्लेषण में रूपिम सबसे छोटी इकाई है । हिन्दी और मलयालम के रूपिमों का विश्लेषण इस अध्याय में प्रस्तुत किया है । दोनों भाषाओं की प्रकृति में कुछ खास मौलिकता है । फिर भी दोनों में विभिन्न मुद्दों पर समानताएं ही मुख्य है । दोनों विभिन्न परिवारों की भाषायें तो ज़रूर है । भारत उपखंड की इस भाषाओं में संस्कृत का प्रभाव अन्य भाषाओं से भी बढ़कर है । इसलिए संस्कृत की कुछ सामान्य प्रवृत्तियाँ दोनों भाषाओं में दृष्टिगत होती है ।

संदर्भ :-

1. हिन्दी और भारतीय भाषाएँ - भोलानाथ तिवारी, कमल सिंह - पृ. 249

उपसंहार

भाषा संप्रेषण का महत्वपूर्ण माध्यम और भाव बोध का अन्यतम साधन है । संसार में मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो विचारों के संप्रेषण के लिए सार्थक एवं क्रमबद्ध ध्वनियों का स्वेच्छा-पूर्वक प्रयोग करता है । भाषा की दृष्टि से भारत समृद्ध है । यह हमारे देश की निजी विशेषता है ।

भारतवर्ष में अनेक परिवार की भाषाएँ बोली जाती है । इनमें दक्षिण में बोली जानेवाली द्रविड परिवार की भाषा मलयालम और भारोपीय परिवार की भाषा-हिन्दी-भारत की राष्ट्र भाषा सर्वाधिक विकसित और साहित्य संपन्न भाषाएँ हैं । साधारणत: राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक और धार्मिक परिस्थितियों के अनुसार भाषाओं में आदान-प्रदान की प्रवृत्ति कम या अधिक मात्रा में होती है । एक उपखंड की निकट संपर्क में रहनेवाली दो भाषाएँ एक दूसरे से भाषाई सामग्री का ग्रहण करें, यह स्वाभाविक ही है । परंपरागत भाषिक प्रवृत्तियों के अतिरिक्त देशी विदेशी भाषाओं का प्रभाव प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से दो भाषाओं पर देख सकते हैं । हिन्दी और मलयालम के आधार पर भी यह बिलकुल सही सिद्ध होता है ।

हिन्दी और मलयालम की बात ले ली जाय तो स्वतंत्रता प्राप्ति के बहुत पहले से ही मलयालम भाषा भाषी हिन्दी सीखने लगे थे । द्वितीय भाषा के रूप में और राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी का अध्ययन हुआ था । विज्ञान, पत्र-पत्रिकाओं, ज्ञान वर्द्धक तथा अन्य माध्यमों की सुलभ्यता से हिन्दी और मलयालम बहुत निकट आ गयी । हिन्दी और मलयालम में ऐसे समानार्थी रूप हैं जिनका थोडा रूप परिवर्तन हो गया है । प्राचीन काल से ही इस दो भाषा परिवारों के संबंध का उल्लेख भाषा विशेषज्ञों ने दिया है । "केरल "पाणिनि" के अनुसार आर्य भाषा की "ट" वर्गीय ध्वनियाँ द्रविड परिवार से ली गयी है । इन्होंने यह भी सूचित किया है कि संस्कृत ने मूल द्रवि से अनेकों शब्द ग्रहण किये हैं । अनेक विद्वानों

ने हिन्दी और मलयालम में प्राप्त समानार्थक और भिन्नार्थक हज़ारों शब्दों की सूची तैयार की हैं ।

विभिन्न परिवारों की भाषाएँ भारत में बोली जाती हैं । भारतीय भाषाओं में एकता के कई तत्व निहित है । इसलिए भारतीय भाषाओं के बीच में आदान-प्रदान का कार्य अपेक्षाकृत सरल होता है । इन भाषाओं में साम्य और वैषम्य होना स्वाभाविक है । अब तक की प्रचलित मान्यताओं के अनुसार हिन्दी और मलयालम दो भिन्न परिवारों की भाषाएँ हैं । दो भिन्न परिवारों की भाषाएँ होने पर भी हिन्दी और मलयालम भारत उपखंड की भाषाएँ हैं । अतः इनमें साम्य और वैषम्य की संभावना अधिक है ।

संस्कृत आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं की जननी है । वैदिक संस्कृत से लेकर वर्तमान खडी बोली तक की विकास यात्रा में हिन्दी प्राचीन एवं मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं से होती हुई आधुनिक काल तक आई है । वर्तमान खडी बोली हिन्दी, उसके पूर्व रूप एवं संस्कृत की अपेक्षा काफी परिवर्तित हो गयी है । भाषा का ध्वन्यात्मक विकास उसका प्रमुख कारण है । वैदिक कालीन कई ध्वनियाँ आधुनिक खडी बोली हिन्दी में लुप्त या परिवर्तित हो गई है । उसी समय कुछ नयी ध्वनियों का विकास भी हुआ है । आधुनिक युग में अंग्रेज़ी जैसी विदेशी तथा देशी भाषाओं से काफी शब्द हिन्दी में आए सांस्कृतिक आन्दोलनों के फलस्वरूप तत्सम शब्दों का प्रयोग बढने लगा । वर्तमान हिन्दी राष्ट्रभाषा के स्तर पर अग्रसर हो रही है । उसमें पारिभाषिक शब्दावली का भी निर्माण हुआ है । हिन्दी की भाषिक संरचना में इन सब का प्रभाव कम नहीं है ।

दक्षिण भारत की भाषाओं में मलयालम श्रेष्ठतम है । मलयालम के उद्भव और विकास के संबंध में विद्वानों के बीच में विभिन्न मत प्रचलित है । वस्तुतः मलयालम मूल द्रविड की दक्षिणी शाखा से विकसित एक भाषा है । मलयालम के आरंभिक रूप में द्रविड भाषाओं का प्रभाव देखा जा सकता है । विशेषतः तमिल भाषा का प्रभाव । इस प्रकार प्रारंभकालीन मलयालम के मूल शब्द तथा उनके साथ लगानेवाले शब्दांश आदि द्रविड प्रकृति के रहे हैं । लेकिन मध्य काल तक आते आते आर्य संस्कृति संपूर्ण भारत में व्याप्त होने के कारण मलयालम तमिल के प्रभाव से मुक्त होकर संस्कृत की गोदी में आ पडी है । नतीजा यह निकला कि मलयालम और संस्कृत के योग से "मणि प्रवालम" का विकास हुआ है । संस्कृत भाषा के जबरदस्त प्रभाव में आ जाने से मलयालम में तत्सम शब्द बडी संख्या में आ गए । संस्कृत की विभक्तियाँ भी प्रयुक्त होने लगी । लेकिन फिर से द्रविड प्रवृत्ति उभर आई । मलयालम पर सबसे अधिक प्रभाव संस्कृत का है । आधुनिक मलयालम पर अंग्रेज़ी का स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है । अंग्रेज़ी साहित्य और भाषा के प्रभाव के कारण मलयालम में अंग्रेज़ी के शब्दों और ध्वनियों का आगमन हुआ है । वर्तमान मलयालम की शैली काफी मात्रा में अंग्रेज़ी की शैली के निकट है । मलयालम द्रविड परिवार की भाषा होने के नाते प्रारंभ में उसके संज्ञा शब्द और शब्द रूप द्रविड प्रवृत्ति से निकटतम संबंध के रखते थे । जब केरलीय अंग्रेज़ी में शिक्षित और अंग्रेज़ी से प्रभावित होते गए तब उनमें अंग्रेज़ी की संरचना का प्रभाव भी मलयालम की संरचना पर पडने लगा । संरचना के प्रमुख अंग काल कारक और विभक्ति प्रत्यय है ।

जैसे ऊपर सूचित किया गया आर्य परिवार की भाषा हिन्दी का विकास प्राचीन तथा मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं से होकर

हुआ है । संभवत: संस्कृतकालीन विभक्तियों और कारकों का प्रभाव हिन्दी पर बहुत ज़्यादा है । चूँकि हिन्दी की उर्दू शैली का संबंध अरबी-फारसी से रहा है इसीलिए उनका विभक्ति प्रत्यय विधान भी हिन्दी के कुछ लेखकों ने अपनाया । खडी बोली के विकास के दूसरे चरण के लेखक बहुत से उर्दू में ही पहले लिखते थे और उर्दू से हिन्दी में आये । इसलिए उनकी भाषा-संरचना के अंगभूत विभक्ति प्रत्यय के क्षेत्र में उर्दू का तर्ज हिन्दी में आना स्वाभाविक था । भाषा विकास के तीसरे चरण में अंग्रेज़ों का प्रभाव विशेष रूप से परिलक्षित होता है । अंग्रेज़ी की ऊँची शिक्षा पाए लोग - खासकर साहित्यकार, वैज्ञानिक, प्रशासक आदि जब हिन्दी लिखते तब सहज ही उनकी हिन्दी पर अंग्रेज़ी की संरचना अपना जबरदस्त प्रभाव डालती थी । संरचना के अंग के रूप में हिन्दी लेखक अंग्रेज़ी से प्रभावित होने लगे थे ।

भारतीय भाषाओं में एकता विधायक तत्वों में प्राचीन तत्सम शब्दों का प्रयोग मुख्य है । दूसरा मुख्य कारण है विभक्तियों और कारकों की प्रक्रिया में सभी भारतीय भाषाओं पर संस्कृत व्याकरण के अनुशासन का प्रभाव । व्यावहारिक भाषाएँ सहजे ही इतनी विकास-शील होती है कि प्रत्येक भाषा की अपनी अपनी रचनात्मक विशेषता विकसित होती है ।

अब अखिल भारतीय स्तर पर प्रयुक्त होने के कारण हिन्दी में काश्मीरी से लेकर केरलीय भाषा तक के चौदहों मातृभाषाओं के लोग लिखते हैं । अब तो प्रत्येक प्रान्त के लेखक हिन्दी में लिखते हैं । अपनी-अपनी मातृभाषा के प्रभाव से ये लेखक जाने अनजाने मातृ-भाषा की संरचना का प्रयोग

करते हैं । जहाँ मलयालम लेखक के लिए परंपरागत संस्कृत और अंग्रेज़ी की तमाम रचना शैली को ध्यान में रखे हुए लिखना पडता है वहाँ हिन्दी लेखक के लिए संस्कृत, हिन्दी प्रदेश की बोलियाँ, उर्दू, अंग्रेज़ी तथा अन्य देश भाषाएँ इन सब का ध्यान रखना पडता है । हिन्दी जिनकी मातृभाषा है वे बचपन से ही बोलते- बोलते आदत के कारण हिन्दी के मुहावरों का प्रयोग कर लेते हैं । परन्तु मलयालम भाषी आदि के लिए बडी सावधानी की आवश्यकता पडती है । साहित्य की दृष्टि से मलयालम संस्कृत व तमिल के सामने कम प्रौढ़ भले ही हो, पर भाषा गठन के क्षेत्र में मलयालम पर्याप्त विकास शील रही है ।

प्रत्येक भाषा का अपना ध्वनि समुदाय होता है । हिन्दी और मलयालम के स्वनिमों के दो भेद है - स्वर स्वनिम और व्यंजन स्वनिम । इनमें प्राय: सभी आदि मध्यांत में प्रयुक्त होते हैं । मलयालम में स्वर स्वनिमों की संख्या बारह है - हिन्दी में दस । स्वरानुक्रम हिन्दी की निजी विशेषता है । मलयालम में स्वरानुक्रम नहीं है । यह द्रविड भाषाओं का अपना नियम है । द्रविड भाषाओं में दो स्वरों के पास-पास अर्ध-स्वर - य - व - आकर संधि हो जाती है । अत: मलयालम में स्वरानुक्रम की प्रवृत्ति नहीं है ।

व्यंजन स्वनिमों की स्थिति में भी काफी समानता पायी जाती है । मलयालम में घोष महाप्राण व्यंजन स्वनिम - घ, झ, ढ, ध, भ - औच्चारणिक स्तर पर नहीं है । उच्चारण के समय ये स्वनिम अघोष महाप्राण,

ख, छ, ठ, थ, फ के समीप है । मलयालम के कुछ विशिष्ट व्यंजन स्वनिम है जो मात्र मलयालम में प्रयुक्त होते हैं - हिन्दी में नहीं है । वे है - न्, ळ्, र्, ष्, ट्ट । ये "द्रविड मध्यम" नाम से जाने जाते हैं ।

खंड्य स्वनिमों के समान खंड्येतर स्वनिमों में समानता ही मुख्य है । खंड्येतर स्वनिमों में अनुनासिकता मात्र हिन्दी में ही पायी जाती है । मलयालम में अनुनासिक स्वनिम तो है लेकिन हिन्दी के समान अनुनासिकता नहीं है ।

रूपिमीय विश्लेषण से दो भाषाओं के आकृतिमूलक तथा तुलनात्मक विश्लेषण का कार्य सरल हो जाएगा । दो भाषाओं की शैलीगत भिन्नता का एक प्रमुख कारण उनकी रूप-रचना का वैभिन्य है । हिन्दी और मलयालम के परस्पर आदान-प्रदान में इन दोनों भाषाओं की भिन्नता के कारण अनेक समस्यायें उत्पन्न होती हैं । प्रमुख रूप से लिंग और कारक के प्रयोग में जहाँ वैषम्य अधिक होता है वहीं ये समस्याएँ अधिक मात्रा में पायी जाती है । समान शब्दावली की रूपग्रामिक भिन्नता भी इन दोनों भाषाओं में समस्यायें पैदा करती है ।

संस्कृत की विभक्ति व्यवस्था से मलयालम की कारक रचना [illegible] भिन्न रहती है । हिन्दी की कारक रचना इस भिन्नता में कोई असंगति या अनौचित्य नहीं है । क्योंकि व्याकरणिक और संरचनात्मक विशेषताएँ प्रत्येक भाषा की अपनी होती है ।

सं:प्रथमा विभक्ति - मलयालम में इसका कारक कर्ता है और विभक्ति का नाम निर्देशिका है । इसको सूचित करनेवाला खास रूपिम नहीं लगता, चाहे कर्ता चेतन भी हो । इसके प्रयोग के विषय में नियम है । कारक की रचना हिन्दी में अत्यन्त व्यवस्थित होती है । क्रिया रूपों की रचना में इनका विशेष महत्व होता है । मलयालम में कर्ता के लिंग वचन का कोई प्रभाव क्रिया पर किसी भी काल में नहीं दिखाई देता । हिन्दी में तो वर्तमान व भविष्य में कर्ता के लिंग वचन का प्रयोग क्रिया को प्रभावित करता है । भूतकाल में खासकर सकर्मक क्रिया के भूतकाल में "ने" नियम का पालन करना पडता है यह मलयालम की दृष्टि से कृत्रिम और बोझिल है । मलयालम में यह रूप रचना बडी सरल है । इसमें जिस वाक्यों में दो क्रियाएँ होती है और प्रथम क्रिया कृदंत के ज़रिए गौण बनाई जाती है वहाँ कर्ता प्रथमा विभक्ति में रहा जा सकता है ।

उदा:- मल: रामन् मद्रासिल पोयिट्ट ओरू वर्षमायि

हि: राम को मद्रास गये एक वर्ष हो गया ।

इसमें कृदन्तों के अन्तर के अनुसार हिन्दी में कतृवाचक रूप के साथ अलग-अलग बद्ध रूपिम लगते हैं । कतृ वाच्य, कर्म वाच्य, सकर्मक अकर्मक में लिंग वचन पुरुष का प्रभाव मलयालम में नहीं । अत: वहाँ रूप रचना सरल है ।

मलयालम में प्रतिग्राहिक कर्म कारक है । इसका मूल प्रत्यय "ए" है । मलयालम के कर्मकारक के विषय में प्राणिवाचक और अप्राणिवाचक का अंतर होता है । प्राणि वाचक के साथ प्रत्यय लगता है । अप्राणिवाचक शब्द बिना किसी प्रत्यय के रूप में प्रयुक्त होता है । इसका

एक कारण हिन्दी की अर्थ संकल्पना और मलयालम की अर्थ संकल्पना का अन्तर है । दूसरा कारण यह है कि जहाँ मलयालम में सीधे क्रिया धातुओं का प्रयोग किया जाता है वहाँ हिन्दी में कृदन्त के साथ "हो" या "कर" जोडकर क्रिया पद रचे जाते हैं । अतः कृदन्त के और उससे पूर्व के शब्द रूप के संबंध के अनुसार रूपिम जोडा जाता है ।

उदा: कळ्ळन पोलिसिने पेटिक्कुन्नु
चोर पुलीस से डरता है ।
विजयं प्रयत्नत्ते आश्रयिच्चिरिक्कुन्नु
विजय प्रयत्न पर निर्भर करती है ।

मलयालम में करण कारक का मूल प्रत्यय "ओट्" है । हिन्दी में करण कारक का प्रत्यय "से" है । पर वह अपादान कारक का भी प्रत्यय है । मलयालम के वाक्यों में तृतीया का मूल प्रत्यय "ओट्" है साथ, आल, उटे, से रूप भी आते हैं । लेकिन हिन्दी प्रत्ययों का प्रयोग अपनी परंपरा के अनुकूल ही चलता है ।

उदा: शिवन् शक्तियोट् चेरून्नु ।
शिव शक्ति से सम्मिलित होता है ।

मलयालम में संप्रदान कारक का अर्थ "स्वामी" है । इसको "क्कु" एक रूपिम का प्रयोग होता है । अथवा उसका संरूप "उ" का । संस्कृत में इसका प्रयोग मूल रूप से संप्रदान कारक में हुआ ।

जैसे : रमणिक्कु पेना इष्टमायी
रमणी को कलम पसन्द आयी ।

मलयालम में अपादान कारक का अर्थ करण और कारण माना गया है । इसका मूल ; रूपिम "आल्" हैं । किसी नियत वस्तु से अन्य किसी वस्तु का अलगाव सूचित हो तो नियत वस्तु अपादान कारक में आती है ।

जैसे : कुशवन मण्णु कोण्डु कुटं उण्डाक्कुन्नु
कुम्हार मिट्टी से घडा बनाता है ।

मलयालम में संबंध कारक का अर्थ होता है - स्वामित्व । इसका रूपिम है "उटे" । मूल शब्द के अनुसार रूपग्राम का भी प्रयोग होता है - कभी कभी "न्टे" उसका संरूप है । सीत/युटे, राम/न्टे । मलयालम और हिन्दी का अंन्तर स्पष्ट है । हिन्दी में "को" रूपिम का प्रयोग संप्रदान और संबंध दोनों कारकों में किया जाता है । मलयालम में "क्कु", "न्नु" दोनों रूप कभी संप्रदानार्थ में आते हैं कभी संबंध के अर्थ में । एक रूपिम के ये दो संरूप है ।

जैसे: लीलक्कु सम्मानं किट्टी
लीला को पुरस्कार मिला ।

जिस प्रकार संस्कृत में षष्ठि विभक्ति के मुहावरे मौजूद है वैसे ही मलयालम व हिन्दी में भी है । ये समानार्थ कार्य होते हुए भी भिन्न प्रकार प्रयुक्त होते हैं । ये मलयालम में विभक्ति के पीछे गति कहलाने वाले अव्यय जोडकर लिखे जाते हैं ।

मलयालम में अधिकरण कारक को आधारिका कहलाते है । इसके लिए दो संरूप प्रयुक्त होते हैं - "इल्", "कल्" ।
जैसे:

मेत्तयिल किटक्कुन्नु । बिस्तर पर लेटता है ।
पटिक्कल निलक्कुन्नु । दरवाज़े पर खडा है ।

हिन्दी और मलयालम लिंग संबंधी कुछ असमानताएँ भी है । हिन्दी में दो ही लिंग है - पुल्लिंग और स्त्रीलिंग । जब कि मलयालम में तीन लिंगों की गणना होती है । पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग । मलयालम का यह लिंग विधान प्राचीन भारतीय आर्य भाषा के समान होते हुए भी उनसे कुछ भिन्न है । प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं में अप्राणिवाचक शब्दों का भी लिंग निश्चित होता था यथा नदी, अग्नि आदि । परन्तु मलयालम का लिंग-विधान पूर्ण रूप से प्राकृतिक है उसमें अप्राणिवाचक सभी शब्दों को नपुंसक लिंग के अन्तर्गत रखा गया है । हिन्दी की लिंग व्यवस्था के कारण भाषा-शिक्षण अनुवाद तथा भाषा के अन्य व्यवहार में अनेक टेढी समस्याएँ उत्पन्न होती है । मलयालम में जिन शब्दों को नपुंसक लिंग के रूप में माना गया है उन्हें हिन्दी में

स्त्रीलिंग या पुल्लिंग में रखने से उन शब्दों में कोमलता या पुरुषता का अतिरिक्त तत्व जुड जाता है जो मलयालम में नहीं आ पाता । हिन्दी में पर्वत पुरुष तत्व होता है तो नदी स्त्री मानी गयी है । विश्वास पुरुष तत्व है तो श्रद्धा स्त्री तत्व है ।

मलयालम और हिन्दी में लिंग सूचक रूपिमों के प्रयोग में भी अन्तर है । स्त्री वाची रूपिम लगाकर हिन्दी में छोटे मोटे अथवा कडा और कोमल के अन्तर को व्यक्त किया जाता है । जैसे रस्सा - रस्सी, डोरा - डोरी, डिब्बा - डिबिया । यह प्रवृत्ति मलयालम में नहीं मिलती । ये सारे शब्द मलयालम में केवल नपुंसक लिंग में हो आएँगे । हिन्दी में इसी से मिलती जुलती प्रवृत्ति यह है कि स्त्रीलिंग वाची शब्दों के साथ "इया" या "इयाँ" रूपिम जोडकर एक अतिरिक्त स्त्रैण कोमल भावना की अभिव्यक्ति की जाती है । जैसे : बेटी, बिटिया, गुड्डी - गुडिया । इस प्रकार की सूक्ष्म अभिव्यक्ति मलयालम में सहज रूप से संभव नहीं है । यह केवल हिन्दी की लिंग व्यवस्था की विशेषता है । हिन्दी में अक्सर "आ" और "ई" पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के सूचक होते हैं ।

जैसे: बेटा - बेटी , लडका - लडकी
दादा - दादी, घोडा - घोडी

हिन्दी में ई रूपिम के अ, आनी, आइन, नी आदि संरूप को जोडकर जो स्त्रीलिंग शब्द बनाए जाते हैं । हिन्दी में उन

स्थानों का ध्वन्यात्मक रूपात्मक परिस्थितियों का विवरण देना पडता है ।

हिन्दी

	पुलिंग		स्त्रीलिंग
/इन/	धोबी	-	धोबिन
/आनी/	नौकर	-	नौकरानी
/आइन/	ठाकुर	-	ठकुरानी
	पंडिता	-	पंडिताइन
/नी/	ऊँट	-	ऊँटनी
	मोर	-	मोरनी

जहाँ हिन्दी आदि भाषाओं के आगत शब्द मलयालम में ग्रहण किए जाते हैं, वहाँ उनके लिंग की व्यवस्था को मलयालम में नहीं अपनाया है । परन्तु जहाँ मलयालम के अपने प्राणिवाचक शब्द आते है वहाँ पर मलयालम अपने प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग वाची शब्द बनाए जा सकते हैं । स्त्रीलिंग शब्दों से पुल्लिंग बनाने की प्रवृत्ति हिन्दी में विशेष रूप से पायी जाती है ।

जैसे: भैंस - भैंसा

मलयालम में तीनों लिंगों के एक रूपिम के अलग अलग रूप होते हैं - जो हिन्दी में नहीं है । जैसे पुल्लिंग वाची शब्दों के साथ

"अन्" रूपिम स्त्रीलिंग वाची शब्दों के साथ "ई" संरूप तथा नपुंसक लिंग वाची शब्दों के साथ "अं" संरूप लगाते हैं ।

पु. स्त्री. नपु.		पुलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसक लिंग
/अन/ई/अम्/	लेखक	ग्रन्थकारन्	ग्रंथकारी	ग्रंन्थं
	चित्रकार	चित्रकारन्	चित्रकारी	चित्रं
		कळ्ळन् {चोर}	कळ्ळि {स्त्री-चोर}	कळ्ळ् {चोरी}
/अन/इ/उ/		कोंकण्णन् {भोंगा}	कोंकण्णी	कोंकण्ण्
		मिट्टुक्कन् {समर्थ}	मिट्टुक्कि	मिट्टुक्क्

स्त्रीलिंग बनाने के लिए
त्ति/च्चि/ट्टि का प्रयोग होता है ।

/त्ति/	वटक्कत्ति	- उत्तर की स्त्री
	तेक्कत्ति	- दक्षिण की स्त्री
/च्चि/	मोट्टच्चि	- मुंडन की हुई स्त्री
	कुत्तच्चि	- कुत्त् करने वाली स्त्री
/ट्टि/	कणियाट्टि	- कणियान की स्त्री {एक जाति}
	तंपुराट्टि	- तंपुरान की स्त्री {एक जाति}

मलयालम में कुछ शब्दों के लिंग-भेद सूचित करने के लिए शब्दों के पहले स्त्री-पुरुष-वाचक रूपग्राम लगाते है । हिन्दी में भी लिंग भेद को सूचित करने के लिए शब्द के लिंग वाची स्वतंत्र शब्द जोडते हैं ।

जैसे:	मलयालम	हिन्दी
	आण् - पट्टि	कुत्ता
	पेण्-पट्टि	कुत्तिया
	पूवन्-कोषि	मुर्गा
	पिट-कोषि	मुर्गी
	कन्टन-पूच्च	बिलाव
	पक्कि-पूच्च	बिल्ली

सर्वनामों के प्रयोगों में मलयालम में तीनों लिंगों के लिए अलग-अलग रूप मिलते हैं जब कि हिन्दी में सभी लिंगों के लिए एक ही सर्वनाम प्रयुक्त होता है :-

जैसे :	मलयालम	हिन्दी
	अवन	वह
	अवळ्	
	अत्	

मलयालम के तीनों लिंगों में विशेषणों की स्पष्ट अवधारणा प्रकट होता है जबकि हिन्दी में स्त्रीलिंग और पुल्लिंग में अकारान्त

को छोडकर - एक ही विशेषण बिना किसी परिवर्तन के साथ प्रयुक्त होता है । नपुंसक लिंग की सूचना हिन्दी के विशेषणों में संभव नहीं है । मलयालम की तीनों लिंग सूचक संरूपों के अलावा विशेषणों के साथ "आय", "उल्ल" संरूप भी जुडते हैं जो हिन्दी में नहीं पाया जाता । परन्तु मलयालम में संस्कृत के विशेषण जहाँ संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होते हैं वहाँ "आय" लगाने की आवश्यकता नहीं पडती है ।

मलयालम			हिन्दी		
पुलिंग		स्त्रीलिंग	पुलिंग		स्त्रीलिंग
महान्	-	महति	महान	-	महान
चतुरन्	-	चतुरा	चतुर	-	चतुर
स्नेहितन्	-	स्नेहिता	मित्र	-	मित्र
कामुकन्	-	कामुकि	कामुक	-	कामुक

हिन्दी और मलयालम के परस्पर आदान-प्रदान में लिंग संबंधी असमानताओं के कारण सतर्कता रखना ज़रूरी है । ऐसी कुछ असमानताओं के होते हुए भी भारतीय भाषाओं में विशेषकर हिन्दी और मलयालम में समानताएँ बडी मात्रा में द्रष्टव्य है । इन दोनों भाषाओं के बीच में आदान प्रदान का कार्य विपुलता से हो रहा है । संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य हो गया तो पहले मातृभाषा में सोचना और विचारना है । फिर दूसरी भाषा में

अभिव्यक्त करना पडा है । अतः मातृभाषा का प्रभाव पडे बिना नहीं रह सकता । संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी भारत के लिए एक सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा इस विशाल देश के लोग एक दूसरे को समझेंगे तथा परस्पर सहयोग के द्वारा अपना काम कर सकेंगे ।

भारत के विद्वान तथा नेता राष्ट्रीय एकता पर सदैव बल देते आए है ; किन्तु भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के तुलनात्मक अनुसंधान की ओर उनका कम ही ध्यान गया है । भारतीय भाषाओं के शब्द रूपों के ऐसे बहुतेरे उदाहरण भरे पडे है - जो मूलतः एक है । हिन्दी में एक ही शब्द के अनेक बोलीगत रूप पाये जाते हैं । हिन्दी में यदि उनकी कुछ रूप मिलता है तो व्यक्तिगत और स्थानगत परिस्थितियों के आलोक में उनका विश्लेषण संभव है ।

राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के सूक्ष्म अध्ययन से यह बात सर्वथा स्पष्ट हो जाएगी कि यहाँ अनेकता में भी एकता वर्तमान है । सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों के मूल की खोज भारतीयों की संस्कृति, महानता एवं प्रमाणित करने में सहायक सिद्ध होगी । तब उन्हें ज्ञात होगा कि चाहे आर्य भाषा परिवार हो या द्रविड भाषा-परिवार, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भारत सदैव एक रहा है । प्रस्तुत अध्ययन इस तथ्य की पुष्टि करता है ।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है हिन्दी और मलयालम में भाषागत समानताएँ ही अधिक है । लेकिन इन भाषाओं के तुलनात्मक अनुसंधान का कार्य प्रकारान्तर से बहुत कम ही हुआ है जो कुछ हुआ है वह इन भाषाओं के पारस्परिक संबंध की खोज के लिए मार्ग दर्शन का काम करेगा ।

संदर्भ ग्रंथ - सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

हिन्दी

1. परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन — डॉ. महावीर सरन जैन, प्र. संस्करण 1974, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।

2. भाषा -ब्लूम फील्ड अनुवादक — डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, मोतिलाल बनारसीदास दिल्ली -6, प्रथम संस्करण - 1973

3. भाषा विज्ञान — डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, अठारहवाँ संस्करण - 1986

4. भारतीय आर्यभाषा - डा. ज्यूल ब्लोख — अनुवादक लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, हिन्दी समिति - सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, प्रथम संस्करण - 1963.

5. भारतीय आर्यभाषाओं के इतिहास — डॉ. जगदीश प्रसाद कौशिक, अपोलो प्रकाशन, प्रथम संस्करण

6. भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी — डॉ. सुनीत कुमार चाटर्जी, राजकमल प्रकाशन, तृतीय संस्करण - 1963.

7. भाषा शास्त्र की रूप रेखा — उदयनारायण तिवारी, प्र. संस्करण 2020 (वि), भारती भंडार, इलाहाबाद

8. भाषा विज्ञान कोश — भोलानाथ तिवारी
प्रथम संस्करण - 2020 (वि)
ज्ञानमंडल लि: वाराणसी - 1

9. भाषा वैज्ञानिक निबंध — जगदीश प्रसाद कौशिक
प्र. संस्करण - 1981
यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर

10. सामान्य भाषाविज्ञान — बाबूराम सक्सेना
हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग
षष्ठम संस्करण - 1883.

11. हिन्दी भाषी शिक्षण — डा. भोलानाथ तिवारी
डा. कैलाशचन्द्र भाटिया
प्र. संस्करण 1990
लिपि प्रकाशन, नई दिल्ली

12. हिन्दी भाषा की भूमिका — शिवशंकर प्रसाद वर्मा
भारती भवन
प्रथम संस्करण - 1965.

13. हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास — उदय नारायण तिवारी
भारती भंडार - प्रयाग
द्वितीय संस्करण - 2018 (वि)

14. हिन्दी भाषा की रूप संरचना — संपादक भोलानाथ तिवारी
दूसरा संस्करण - 2020 (वि)
वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

15. हिन्दी भाषा की ध्वनि संरचना — सं. भोलानाथ तिवारी
कैलाशचन्द्र भाटिया
प्र. संस्करण 1987
साहित्य सहकार, दिल्ली ।

16. हिन्दी ध्वनिकी और स्वनिमी	रमेश चन्द्र महरोत्रा प्र. संस्करण - 1970. मुनशीलाल मनोहरलाल, नई दिल्ली
17. हिन्दी और भारतीय भाषायें	भोलानाथ तिवारी कमल सिंह प्र. संस्करण- 1987 प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
18. हिन्दी व्याकरण	कामता प्रसाद गुरू नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी चौदहवाँ संस्करण - 2045 (वि)
19. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास	डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय लोकभारती प्रकाशन प्रथम संस्करण - 1990.

मलयालम

20. आधुनिक भाषा शास्त्रम्	डा. के. एम. प्रभाकर वार्यर शान्ता अगस्टिन तृतीय संस्करण - 1989 केरल भाषा इनस्टिट्यूट, तिरुअनन्तपुरम्
21. केरल पाणिनीयम	ए. आर राजराज वर्मा प्रथम संस्करण - 1990 पूर्णा प्रकाशन, कालिकट, केरल

22. केरल साहित्य चरित्रम्
उल्लूर एस परमेश्वरैय्यर
तेरहवीं संस्करण - 1967
केरल विश्वविद्यालय
तिरूवनन्तपुरम.

23. केरल भाषाविज्ञानीयम
डॉ. के. गोदवर्मा
दूसरा संस्करण - 1971
केरल विश्वविद्यालय
तिरूवनन्तपुरम

24. केरल भाषयुटे विकास परिणामडल
इलमकुलम कुञ्जनपिलै
पाँचवाँ संस्करण - 1962
साहित्य प्रवर्तक सहकरण संघम
कोट्टयम

25. प्रयोग दीपिका
पी. के. नारायण पिल्लै
दूसरा संस्करण 1988
सांस्कृतिक विभाग
केरल सरकार, तिरूवनन्तपुरम.

26. भाषा साहिती
त्रैमासिक
केरल विश्व विद्यालय
तिरूवनन्तपुरम

27. निरीक्षण निलयम
डा. के. एम. जोर्ज
दूसरा संस्करण - 1969
नाशनल बुकस्टॉल
कोट्टयम

28. मलयालम साहित्य एक सर्वेक्षण
डॉ. रामचन्द्र देव
प्रथम संस्करण
आशा प्रकाशन,
नई दिल्ली

29. मलयालम साहित्यम कालघट्टडलिलूटे — एरूमेलि परमेश्वरन पिल्लै
दूसरा संस्करण - 1968
विद्यार्थी मित्रम, कोट्टयम

30. मलयालम साहित्य चरित्रम् — पी. के. परमेश्वरन नायर
दूसरा संस्करण 1963
साहित्य अकादमी,
नई दिल्ली

31. मलयालम भाषाध्ययन — डा. के. एम. प्रभाकर वार्यर
डा. पी. एन. रवीन्द्रन
दूसरा संस्करण 1990
केरल भाषा इनस्टिट्यूट
तिरूवनन्तपुरम

32. व्याकरण मित्रम् — एम. शेषगिरी प्रभु
दूसरा संस्करण - 1989
केरल साहित्य अकादमी
तृश्शूर.

33. A short out line of Hindi Phonetics — DJORDIE KOSTIC
First Edition 1975
INDIAN STATISTICAL INSTITUTE,
CALCUTTA.

34. Cochin Dialect of Malayalam — P. SOMASEKHARAN NAIR
First Edition, 1979
Dravidian Linguistic
Association,
Trivandrum.

35.	Vowel Duration in Malayalam	S. VELAYUDHAN First Edition 1971 Dravidian Linguistic Association, Trivandrum.
36.	Language	Bloomfield First Edition 1968 Motilal Banarasidas, Delhi-6
37.	Malayalam Verbalforms	PRABODHACHANDRAN First Edition Dravidian Linguistic Association, Trivandrum.
38.	Malayalam Grammar & Reader	Dr. K.M. GEORGE Second Edition 1983 S.P. Co-op. Society, Kottayam.
39.	Contrastive Grammar of Hindi and Tamil	S.N. GANESAN First Edition 1975 University of Madras.
40.	Comparative Grammar of Dravidian Languages	Dr. Robert Caldwell First Edition 1974 Oriental Books Corporation, New Delhi.

पत्रिकाएँ:-

1.	हिन्दी	इस्पात भाषा भारती
2.	"	गगनांचल
3.	"	भाषा
4.	अंग्रेज़ी	इंडियन लिंग्विस्टिक्स
5.	मलयालम	कला कौमुदी
6.	"	भाषा पोषिणी
7.	"	भाषा साहिती
8.	"	मातृभूमि
9.	"	साहित्य लोकम्

दैनिक

10.	हिन्दी	नवभारत टाइम्स
11.	मलयालम	मलयाल मनोरमा
12.	"	मातृभूमि